FROM MAHENDRA SHANTILAL

હરિયશગીત.

અથવા

ગં. સ્વ. જસબાએ રચેલાં

જ્ઞાન ભક્તિ વૈરાગ્ય વિષયક પદ્યોનો સંગ્રહ.

(સંપાદકીય ઉપોદ્ઘાતાદિ સમેત.)



एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालंबनं परम् ॥

કઠોપનિષદ્.

સંપાદક,

ઋગ્વેદ શાંખાયની શાખાધ્યાયી ઔશનસગોત્રીય

જયેંદ્રરાવ ભગવાનલાલ.

એમ. એ

ઠે. આકાશેઠના કુવાની પોળ—અમદાવાદ.



પ્રકાશક, જયેંદ્રરાવ ભગવાનલાલ.

ઠે. આકાશેઠના કુવાની પોળ—અમદાવાદ.

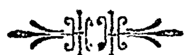


પ્રથમ આવૃત્તિ. પ્રત ૧૦૦૦.

શા૦ ૧૮૩૭. વિ૦ સં૦ ૧૯૭૧. ઇ૦ સ૦ ૧૯૧૫.



મૂલ્ય રૂ. ૧-૪-૦.



શ્રી "સત્યનારાયણ" પ્રિ. પ્રેસમાં પટેલ મોતીલાલ
કાળીદાસે છાપ્યું. ઠે. સીવીલ ઈસ્પીતાલ સામે
પાનાભાઈની વાડીમાં—અમદાવાદ.



☞ આ પુસ્તક મળવાનાં સ્થાન



અમદાવાદ: (૧) પ્રકાશક, આકાશેઠના કુવાના પાળ—રાયપુર.

(૨) મહાદેવ રામચંદ્ર જાગુષ્ટે બુકસેલર—ત્રણ દરવાજા.

મુંબઇ: એન. એમ. ત્રિપાઠીની કંપની—કાલબાદેવી રોડ.

રાજકોટ: બુકસેલર બેચર મેઘજી.

અમદાવાદ—મેસર્સ ચીમનલાલ, ચુનીલાલની કંપની, આસ્ટોડીઆ

उपोद्घात.



श्रीमद् भगवान् वेदव्यास पोताना शिरोलेखमां निर्मत्सर सत्पुरुषोने तापत्रयविनाशक शिवद वस्तु प्रबोधतां वाङ्मयना उदार दैवी आदर्शने वीणापाणिनी वचोविभूतिरुपे आ प्रमाणे स्तवे छेः—

इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा स्विष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धिदत्तयोः।
अविच्युतोऽर्थो कविभिर्निरूपितो यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनम् ॥

जे वाणी श्रीहरिना जगत्पवित्र यशनुं अनुकथन करती नथी ते रसालंकारसुंदर होय, तथापि मनुष्योना कालुष्यना फलरुप छे; अने ते काकतीर्थमां हंसो रमण करता नथी.

आ दैवी आदर्शने अनुसरीने वाङ्मयना प्रथम, पुनीत, अने संपूर्ण आदर्शरुप श्रुति भगवती सूक्तो वडे परम पुरुषनुंज स्तवन करे छे; कर्मकांड वडे तेना श्रेष्ठ पथनु विधान करी, तेना यशने विस्तारे छे; अने अप्रतीम तेजोमय उपनिषदो द्वारा तेनाज अखंड सत्-चिद्घन स्वरुपनुं निराजन करे छे. वळी भगवान् मनु, याज्ञवल्क्य, पराशरादि धर्मशास्त्रकारो पण प्रभुनाज हृदयरुप धर्मने विधिनिषेध-द्वारा उपासे छे. आदिकवि श्री वाल्मीकि सर्वव्यापक विष्णु भग-वान्ना अवताररुप श्री रामचंद्रना अयननुंज पोताना अद्वितीय काव्य

वडे यशोगान करे छे. वळी, जगत्‌ना उत्तमोत्तम इतिहासग्रन्थमां भगवान् पाराशर ईश्वरनां जगन्नियामक तत्त्वोनी समालोचना करावता, योगेश्वर भगवान्‌ना पक्षनुं ऐतिहासिक समर्थन विस्तारे छे. आ पछी आधिभौतिक, आधिदैविक, अने आध्यात्मिक सत्योनुं निरूपण करनारा, अने परमात्मा प्रत्ये अहैतुक तथा अप्रतिहत भक्ति प्रेरनारा वेदोना निष्कर्षरूप पुराण ग्रन्थोनी भावनानी विशुद्धि विषे शुं कहेवुं ? भगवान् वेदव्यास त्रणे पुरुषार्थोनुं यथार्थतः विवेचन करनारा ग्रन्थोथी पण पोताने अकृत्यकृत्य मानी, श्री परमात्मानी कलारुप अवतारोनुं यशोगान करवा पोताना दिव्य ग्रन्थमां प्रवर्ते छे. ते पछी भगवान् श्री शंकर आदि आचार्यो पण परमात्मानुं स्वरुप कथन करनारां शास्त्रोनेज अवलंबे छे, विस्तारे छे, अने प्रकाशे छे. आ प्रंणाणे आदर्श भाषाना आदर्श साहित्यमां ईश्वर एज प्रधान विषय छे, अने विविध रीते तेनुंज स्तवन ए भावना छे.

प्राकृत भाषाओए पण गीर्वाणमाताना उत्कृष्ट पथनेज घणे अंशे स्वीकार्यो छे. हिन्दी भाषाना अग्रगण्य कवि तुलसीदास श्री रघुनाथनां पुण्यचरितने स्वभाषामां रसमय अने शिष्टाचार प्रदर्शती वाणीमां वर्णे छे. गुर्जरभाषाना आदिकवि नरसिंह तथा कविवर प्रेमानंद आदि लेखकोए पण श्रीहरिनां यश विस्तारवामां वाणीनुं माहात्म्य मान्युं छे. मराठी भाषामां तुकाराम आदिनी नैसर्गिक शक्तिओ एज विषयमां प्रेराइ छे. वळी वंगदेशनुं पुरातन बंगीय साहित्य, तेमज आधुनिक साहित्य पण पोताना लोकविख्यात

कविवर वडे, ईश्वरनुं घटघटमां दर्शन करवाना उच्चग्राहने ध्वनित करी रह्युं छे.

कालवल अने अविद्यावलवशात् विशेष विकृत थयेली प्राकृत भाषाओए पण आ उच्चग्राहनो केवल त्याग कर्यो नथी. ग्रीसना प्रज्ञाचक्षु कविए देवोनां अनुकीर्तन समेत ते प्रजाना धार्मिक विचारोने इतिवृत्त निमित्ते प्रवोध्या छे. याहुदीओनी ईश्वर प्रत्येनी प्रेमपूरित भावनाओ महात्मा क्राइस्टना शिष्योए संग्रथित करेला पुण्यग्रन्थमां पराकाष्ठाने पामे छे. इटालीनो कविवर डेन्टी, आंग्लभूमिनो महाकवि मिल्टन, तथा अन्य भूमिओना इमर्सन, शॉपनहोर आदि विद्वानो पण एज उच्चग्राहने अवलंववामां उत्कृष्टताने स्वीकारे छे. चीन, जापान आदिनुं पुरातन वाङ्मय, महात्मा कन्फ्युश्यस अने बौद्धधर्मना अनुयायी साधुजनोना धर्मप्रवोधक अने अर्हत्‌ना कीर्तिगीतना उद्‌गारोथी भरेलुं छे. झंद, पाहवी, अने अरवी भाषाओ पण पोताना जगद्विख्यात झंदआवस्ता, कुरान आदि वंदनीय ग्रन्थो वडे प्रभुनाज पेगामने प्रवोधे छे.

आ प्रमाणे दैवी तेमज मानवी वाङ्मयना पुरातन आदर्शनो सहज समन्वय वनी आवे छे. धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष, ए मानवजीवनना पुरुपार्थ; ते पुरुपार्थनी सम्यक्‌व्यवस्था तथा सिद्धिने अर्थे वेदादिशास्त्रग्रन्थ; ते ग्रन्थोदित विद्याने सुसाध्य करवा, अने अविद्या तिमिरनुं उद्‌घाटन करवाने सारु शिष्ट साहित्य; अने अ-

पौरुषेय सनातन वेदवाक्‌ने जेटले अंशे अनुसरे, तेटले अंशे ते साहित्यनी योग्यता: आ विचारश्रेणिने शास्त्रनुं, शिष्टोनुं, अने अनुभवनुं समर्थन होवाथी, आ युगमां पण आ पुण्यभूमिना सुशिक्षित जनोने ते आदरणीय छे.

आ व्यवस्था छतां, युगप्रभावथी उत्पन्न थयेलां अनेक बळो आ विवेकने नष्टप्राय: करतां दृष्टिगोचर थाय छे. व्यक्तपरिणामवती पश्चिमाविद्याना चक्रथी जेम भारतभूमिना धार्मिक, सामाजिक, अने राजकीय आदर्शोनो ह्रास थयो छे, तेम साहित्यनी भावनाओ पण निम्नगामी थइ छे; अने नूतन भावनाओने परिणामे विशेष रजस्तमोमय बनता सामाजिक जीवननी विकृतिना पोषक अने साधक बनता जता साहित्यथी विद्वानोने असंतोष थाय, ते कांइ आश्चर्यजनक नथी. तथापि युगनुं हजी तो प्रथम चरण छे; तेमां तो आर्योना पुरातन शिष्ट आदर्शोनो विशेष पराभव चिरस्थायी थवो घटतो नथी.

प्रस्तावनानुं एक कार्य ग्रंथना विषय प्रत्ये अभिमुखता प्रकटाववानुं छे. आ लघु ग्रंथना विषयभूत ज्ञानभक्तिवैराग्यविषे आधुनिक समयमां कांइक विशेष उदासीन वृत्ति जोवामां आवे छे. केटलाकनुं समजवुं एम छे, के कदाचित् आवी आवी वातोथी सर्वे वीतरागी थइ जशे, तो हिंदुस्ताननी शी गति थशे ? वळी बीजा कोइनुं एम कहेवुं छे, के भजनमां अने विरागीपणामां देशोदय शो थयो ? तथापि आ मान्यतावाळा देशोत्सुक नागरिकोने आ कलि-

યુગના સમયમાં એવી ભીતિ અથવા આવી ફિકર રાખવાની વહુ આવશ્યકતા નથી; કેમકે હવે સામાજિક સન્યાસીઓ મનોહર વસ્ત્રાભૂષણો સજી, સભાઓ ભરી, ઉત્કંઠાભર્યાં, અને ચક્રમાં ચ્હડાવનારાં ભાષણો આપવામાં કટિબદ્ધ છે; અને વીજી તરફથી પશ્ચિમાવિદ્યાના સંસ્કારી સાક્ષરો સાહિત્યવૃદ્ધિનું નિમિત્ત કરી વૈરાગ્યનિવારક ગ્રંથો પણ સુલભ અને સંખ્યાવંધ કરી રહ્યા છે; એટલે દેશદાઝવાળાઓને વિશેષ વૈરાગ્ય જામી જવાનો ભય નથી.

પરમાત્માની અપૂર્વ મહદ્વિભૂતિરુપ જે કાલ યુવાનને વૃદ્ધ બનાવે છે, ધરા ધ્રુજાવનારાઓને ધરાના પરમાણુઓમાં લય કરી દે છે, અને જળ ત્યાં સ્થળ અને સ્થળ ત્યાં જળ ક્ષણમાત્રમાં કરી મુકે છે, એ અદ્ભુત નટ, પોતાના મહાન્ સુત્રધારની યોજનાનુસાર, નિરસ્તકલુષ પરસત્યનું ધ્યાન કરનારા, માનવ જાતિના આદર્શરુપ, પરમસુખનો અનુભવ કરનારા, અને પ્રાણીઓના અભ્યુદય અને નિશ્રેયસ્ને સમ્યક્ પ્રકારે સાધનારા ઋષિ મુનિઓની આ ભારતભૂમિનાં દુર્બલ સંતાનોને ક્ષુદ્ર કામનાઓથી લાલાયિત કરે, એમાં કાંઇ આશ્ચર્ય નથી. આપણી આ આર્યભૂમિમાં ધર્મ અથવા મોક્ષને સ્થાને ધનપ્રાપ્તિ અથવા રાજકીય પ્રવૃત્તિને પરમપુરુષાર્થરૂપ મનાય, પરમાત્માના નિઃશ્વસિતરુપ વેદપુરાણાદિ આર્ષ ગ્રંથોને સ્થાને રજસ્તમોમય આસુરીસંપત્તિપરાયણ ગ્રંથોનો સત્કાર થાય, આર્યોની સુવદ્ધ અને દેશના તેમજ મનુષ્યના કલ્યાણને સાધનારી વલશાલિની સંસ્થાઓને સ્થાને તેમને અસ્તવ્યસ્ત કરનારાં મન્તવ્યોનો પ્રચાર થાય,

अने सादा ने सरल जीवननी उपासनाने बदले कामलोभ अने धनेच्छाथी अनेक दिशाओमां दोडवाना पुरुषार्थने उच्चतर स्थान मळे, ए आ युगमां संभवे छे.

आ सर्व विपर्ययनो आरंभ अथवा अविद्यानी विशिष्ट प्रगति क्यारथी थइ, एना निरीक्षणमां तवारीख तपासवानी आवश्यकता नथी. आ नवुं संक्रमण आपणामां पश्चिमाविद्याना प्रसारने आभारी छे. ज्यारथी वसिष्ठ, व्यास, अने वाल्मीकिने तिलांजलि आपी, आपणा विद्यार्थीओए बेकन, मिल, अने स्पेन्सरनी गुरुदीक्षा लीधी, त्यारथी आ नवीन मोहतमस्नो आरंभ छे. भारतवर्षनां पुरातन इतिहास, विद्या, धर्म, तत्त्वज्ञान, समाजव्यवस्था, भाषा, अर्थशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अने नीतिशास्त्रनो जे विद्वानोए यथार्थ अभ्यास करेलो छे, तेमने आर्यभूमिना सिद्धगौरवने विषे कांइ शंका रहेती नथी. एटलुंज नहि, पण आधुनिक पाश्चात्य आशयो, भावनाओ, अने व्यवस्थाओमां कांइ नवीनमहत्ता, नवीन सत्य, अथवा अपूर्व दक्षतानो भास थतो नथी. आ प्रसंगे ते देशोमां प्रसरेला अज्ञेयवाद (agnosticism) अने उत्क्रांतिवाद (evolutionism) नो आश्रय करनारा लाक्षरोने सूचववानी आवश्यकता थाय छे, के ते वादोने सिद्धान्तरूप मानवा, अथवा सर्व मनुष्योए सिद्धान्तरूप स्वीकार्या छे एम मानवुं, ए वस्तुस्थितिनी अन्यथाकल्पना छे. अज्ञेयवाद तो मलिन हेतुओथी उत्पन्न थएलो अने धर्मने विसारवा अने संसारने विकसाववानी युक्तिरूप होइ, तेनी मात्र उपेक्षाज

करीए छीए. तथापि उन्क्रांतिवादमां ते मालिन्यो उपरांत, अनेक कल्याणनाशिनी व्यंजनाओनो आविष्कार थयो छे. ते संबंधे ग्रंथोनुं निरीक्षण करतां जे पंडितो ते वादने स्वीकारी ले छे, तेमनी बुद्धिनुं चांचल्य प्रत्यक्ष थाय छे. जे वादने विषे भिन्नभिन्न अनुयायीओ तेनां भिन्नभिन्न लक्षणो (definitions) बांधे छे, जेनी अंतर्व्यवस्था संबंधे तेनाज अनुयायीओमां तीव्र मतभेद छे, जेना आदि पुरुषनां मन्तव्योमां युक्तिविरोध अने वस्तुस्थितिविरोध मनाय छे, जेना कोइ अनुयायीनुं कोइ पण पुस्तक, ते मतानुयायीओमां सर्वमान्य थयुं नथी, अने जे वादने एक शतक पूरुं थतां प्हेलां युरोपनी रणभूमिमां गर्जना करती, विषमय वायुथी प्रभुनां मनुष्योने जडवत् करी देती नवीन शोधोए प्रत्युत्तर आप्यो छे, ते वादने कयो विवेकी मनुष्य स्वीकारे ?

वास्तविक रीते आपणां शास्त्रोमां प्रदर्शित कराएली, सर्व शिष्ट विद्वानोए प्रत्यक्ष करेली, अने बुद्धिमान् मनुष्योए अनुभवेली सृष्टिक्रमनी जे व्यवस्था छे, तेनेज इतिहास, साहित्य, तथा अनुमाननी वास्तविक सहायता छे. विकृति ए जगत्‌नो स्वभाव छे. जेम मेळवेला दूधनी अमुक समय पछी अमुकज स्थिति निर्णित थएली छे, तेम जगतनो क्रम पण परमात्मानी ईक्षणानी साथेज नियत थएलो छे. अने नियतक्रमनुं दर्शन भविष्यनां अनुमानोनी सिद्धिवडे सुस्पष्ट थाय छे. सत्वप्रधान अने शुभवासनाओना बाहुल्यवाळो सत्‌युग प्रथम प्रवर्ते छे. तेमां ईश्वरानुग्रहथी प्राप्त थयेलुं ज्ञान अने तेना

साधनभूत तपनो विशेष प्रचार होय छे. त्रेता, तथा द्वापरमां वासनाओमां मालिन्यवृद्धिथी, विद्याकलाओना दुरुपयोगथी, अने अनृतना आघातथी, क्रमशः अधोगति थाय छे. ए निम्नगति कलियुगमां पोतानुं विशेष बल देखाडे छे; पाखंड विशेष प्रवर्ते छे; आसुरीजनोने अनुकूलता भासे छे; मनुष्योमां दारुण अने अधर्मप्रधान युद्धो थाय छे; प्रतारणा अने प्राणध्वंसनी कलाओ, अने तेमनो दुरुपयोग वधे छे; अने धार्मिक तथा नैतिक अधोगति थाय छे. आ प्रमाणे आपणा देशनी कालबलने आधीन अने सृष्टिना विकृतिक्रमने अनुसार, जे अवनति थइ छे, तेवीज अवनति अन्य सर्व देशोमां दृष्टिगोचर थाय छे. ते उपरथी विकृतिना सिद्धान्तने ऐतिहासिक अनुभवनुं समर्थन मळे छे; अने ते डार्विन स्पेन्सर आदि तर्कवादीओनां धर्मह्रासार्थे योजाएलां शिथिल वाग्जालोथी अथवा तेमना बलिदानभूतजनोना वाक्चातुर्यथी खंडित थतो नथी. यद्यपि काल तो वास्तविक रीते निर्लेप छे, तथापि विकारमय जगत्‌नी निश्चितकार्यकारणपरिणामरुप अवस्थितिने कालना सहज बोधक शब्दथी व्यवहराय छे.

आपणी अवनतिनो एक अंश आ कालबलने आभारी छे; तथापि बीजो अंश पाश्चात्य संस्कारोना परिणामरुप छे; अने तेनी चिकित्सा श्रमसाध्य छे. जेम सात्विकबळो मनुष्यने ज्ञानमां योजे छे, तेम राजसी बळो क्रियामां, अने तामसी बळो प्रमादमां मनुष्यने प्रेरे छे. मानुषी साहित्यमां पण आ त्रण प्रकारनां बळो विद्यमान

होय छे. रजः अने तमः नुं सत्ववडे अने मलिन सत्वनुं शुद्ध सत्ववडे हनन करवानुं वेदविदो विधान करे छे.

सर्व काले उत्पन्न थता सर्व विषयोना महाप्रश्नोना समाधान अने निर्णयमां शास्त्रोज परमप्रमाणरूप छे. भगवती उपनिषद् (मुक्तिकोपनिषद्) बे प्रकारना पुरुषार्थ दर्शावे छे; शास्त्रित अने उच्छास्त्र अथवा शास्त्र विरुद्ध. शास्त्रितथी परम अर्थनी प्राप्ति थाय छे, अने शास्त्रविरुद्ध पुरुषार्थथी अनर्थ उत्पन्न थाय छे. वास्तविक रीते वेदान्तनी दृष्टिए अविद्याजनित वासनाना फलरुप संसारमां जीवने ईश्वर, गुरु, अने शास्त्रनी आज्ञा विना कांइ पण कर्तव्य नथी; ते त्रणेना प्रभाव अने प्रसादवडे मनुष्य क्रमशः सम्यक् प्रयत्नवडे जन्मजन्मान्तरथी दुःखरूप प्रत्यक्ष थता आ संसारथी तरी जाय छे. वैराग्य, वासनाक्षय, मनोनाश, ए सर्वे धीर पुरुषोने परमकल्याण अने आनंदनी सिद्धिनां साधनो छे. एटलाजसारु भगवान् शंकराचार्य वैराग्यने साधनोमां अग्रपदे स्थापे छे. ते वैराग्यतरफ अभाव ए वस्तुस्थितिना अदर्शननुं फल छे. श्रीमद्भागवतमां पण भगवान् वेदव्यास वैराग्य अने भक्तिनुं माहात्म्य विस्तारे छे. कदाचित् पश्चिमाविद्याना कवलभूत जनोने पुराणादि शास्त्रमां अश्रद्धा अथवा दोषदृष्टि थाय, तो ते तेमना दृष्टिभेदनुं परिणाम छे. श्रीमद्भागवत समान बलवान्, संपूर्ण, अद्भुत, अने मनोहर ग्रंथ हजी पृथ्वीमां प्रकट थवो बाकी छे. आपणां शास्त्रो स्वमहिमाथीज धीमन्तोना निवासस्थानरुप, अने श्री सरस्वती देवीनी तेजोमय मूर्तिरूप गर्जी

रह्यां छे. ए शास्त्रो बुद्धिनी निकषशिला छे. तेमना प्रत्येनुं मनुष्यनुं मन्तव्य तेना पोताना अधिकारने सूचवे छे, शास्त्रनी प्रतिष्ठाने स्पर्श करतुं नथी.

पाश्चात्य देशोनी सर्व वस्तुओ उपर मोह व्यापी रह्यो हतो, ते समय हवे गयो छे; युरोपना झळहळता सुधाराने पण तोपोना धुमाडानी झांख लागी गइ छे; अने आ देशमां झट सुधरी गयेलां नरनारीओए पण पोतानां दृष्टांतोवडे लोकोने घटतो अनुभव अने शिक्षा आप्यां छे; एटले मोहदशा तो हवे कांइक पलटाइ छे. हवे प्रमाद चाले छे, अने अनिष्ट वळो अन्यरुपे दर्शन दे छे. आ दशामां विलायती वस्तुओथी हिन्दनुं हित करनारा व्यवहारकुशल नरो पण दुनिआने झुकाववा चूकता नथी. शास्त्रने विसरावदा साहित्यनो प्रसार साध्यो छे; बुद्धिने भ्रष्ट करवा आचारखंडन योज्युं छे; जुना विचारोने तोडवा नवी केळवणीनी सामग्री रची छे; अने धर्मनो पराजय करवा तेना पोषकोनी निन्दा शरु करी छे.

आपणी अवनतिनुं दर्शन आपणा शब्द प्रयोगोमां पण थाय छे. आपणा कीर्तिमंत भूतकाळना व्यंजक 'भारतवर्ष'ने स्थाने "हिंदुस्तान" शब्द आव्यो; "आर्यो" पोतानुं पुरातन नाम विसारी अर्थशून्य "हिंदु" थइ बेठा, अने नामनो महिमा विचारी पाखंडीओए तेने स्वीकारी लीधुं. जे शास्त्रकथाओ प्रत्येक आर्य संतानने हृदयनिवासी अने जीवननियामक हती, तेना उपर कटाक्षो थवा लाग्या; निवृत्तिने

स्थाने प्रवृत्तिनो महिमा गवावा लाग्यो; आर्यजीवनना उच्च आदर्शो विसरावा लाग्या; शिष्टोए बांधेली प्रणालिकाओ अने मर्यादाओ तोडवामां चातुर्य मनावा लाग्युं; अने शास्त्रवाक्योना अर्थो पलटावी तेमनो स्वेच्छानियोग शरु थयो.

आपणा माननीय राज्यकर्ताओए आपणा देशने सुधारी सर्वोनुभवरसिक करवानी इच्छाथी पश्चिमाविद्या आ देशमां प्रसारी छे. तथापि भिन्न आदर्शोने उपासनारा भारतवर्षने सारु ते योग्य नथी, ए वार्तानुं तेमनामांना दक्ष नीतिज्ञोने कांइक अंशे दर्शन थयुं जणाय छे. दृश्यमान थयेलां परिणामोथी तेओ एम कल्पना करे, के पाश्चात्य सायन्सथी मनुष्यो उपद्रवकर रसायनो बनावतां शीखे छे, त्यांना इतिहासथी राज्यसत्ताना प्रतिपक्षी थवा प्रेराय छे, अने त्यांनी फीलसुफीथी पाश्चात्य बुद्धिबळनी अवमानना करवानो आरंभ करे छे, तो तेमां कांइ आश्चर्य नथी. भारतभूमिनी पुरातन सद्विद्याना पुनः प्रचारमां प्रजानुं तेमज तेमनुं हित छे, एनुं तेमने जेम शीघ्र दर्शन थाय तेम लाभ छे. धर्मना सात्विक संस्कारोथी हीन प्रजा कदी पण राजाना यशने विस्तारती नथी.

समयनां बळनुं दर्शन करतां प्रत्यक्ष थाय छे, के आपणा सनातन धर्मना शिष्ट संप्रदायने घणा प्रकारनी प्रतिकूलता छे. राज्यकर्ताओए आपणा धर्म तरफ डहापणभरी अनाक्षेपनीति स्वीकारी छे; तथापि पश्चिमाविद्या संपूर्ण अंशे प्रतिकूळ छे; अने सहानुभूतिनी

सहायता पण विपक्षने छे. आ देशमां आविष्कृत करायेलां नवां यान्त्रिक साधनो पण प्रतिकूलतामां वृद्धि करे छे. नवां उत्पन्न थयेला आदर्शो तथा नूतन विचारप्रधान संघशक्तिओ पण प्रतिकूल क्रिया करे छे. तथापि प्रतिकूलताथी भयभीत थवानुं नथी; पण उलटुं वीर पुरुषोए सत्य धर्मना संरक्षणने अर्थे विशेष दृढता, दक्षता, अने बहुश्रुतता समेत कटिबद्ध थवानुं छे. धर्मना संरक्षणना फलनी गणना विधाताथी पण करी शकाती नथी.

जे विद्वानो धर्मने जाणे छे, तेओ तेनी सर्वभावे पूजाज करे छे; वळी जे विचक्षण मनुष्यो प्रत्यक्ष अनुमानादि साधनो वडे नित्य अनुभवाता संसारनुं निरीक्षण करे छे, तेओ पण कल्याणने अर्थे धर्मनाज विमळ पथने स्वीकारे छे. धर्मने विषे अनास्थाबुद्धि करवी, ए स्थूलदृष्टिनुं परिणाम छे. धर्मना बलनो विजय, अने अधर्मनो पराभव आपणे प्रत्येक समये अनुभवीए छीए. धर्म ते अभ्युदय तथा निःश्रेयसनो साधक शास्त्रोक्त जीवनयात्रानो मार्ग छे. ते पथमां विचरवुं, अथवा अन्य मार्गमां प्रवर्तवुं, ए मनुष्यना स्वभावने आधीन छे. जेम ईश्वर मनुष्यो पासे आवी पोतानुं अस्तित्व साबीत करी आपवानुं औत्सुक्य राखता नथी, तेम धर्म पण मनुष्यो तेने न अनुसरे तो तेमने पोतानी पासे मल्लयुद्धमां आवी जवा आह्वाहन करतो नथी. धर्मने अनुसरवुं न अनुसरवुं, ते पोताना हिताहितने अर्थे छे. तथापि जे प्रकारनी क्रिया, ते प्रकारनुं फल सिद्धछे. धर्मनो त्याग करनारां मनुष्योनी अधोगति कोणे

जोइ नथी ? धर्मथी भ्रष्ट थएलां कुटुंबोनी पायमालीनां दृष्टांतो मोजुद छे. धर्मथी च्युत थयेला राजाओ विवश अथवा राज्यभ्रष्ट थयानी इतिहास साक्षी पूरे छे. पुरातन उन्नत धर्ममांथी पतित थयेला देशोनी पडती प्रत्यक्ष छे. व्यवहारसाधनाने अर्थे यथेष्ट प्रयत्नो कर्या छतां पण धर्मविहीन थयेलो जनसमाज क्षेमने प्राप्त थतो नथी. ल्युथरना समयथी आरंभाएलो जे धर्मतिरस्कार इस्वीसनना अढारमा शतकान्तनी फ्रान्सनी राज्यक्रान्तिना समयना अधर्ममां परिणत थयो तेनी क्रमशः अभिवृद्धि जगत्‌ना महासंग्राममां फलित थइ छे, ए कया विचारकथी अज्ञात छे ?

आ वधती जती अधोगति, आ धर्महानि, अने आ आचारभ्रष्टतानी तरफ ढांकपीछोडो अथवा उपेक्षा करवा जेवुं नथी. कर्मयोगमां उद्युक्त विद्वानोनी आ उन्नत धर्ममार्गना उच्छेद प्रत्ये उपेक्षा घटती नथी. केमके जे नवां वळो पोतानो अधिकार जमाववाने तैयार थयां छे, ते समाजना नाशनां बीजो छे, एटलुंज नहि, पण इष्ट वस्तुओनो ह्रास करी अनिष्ट वस्तुओना चक्रमां जनसमाजने फेंकी देनारां छे. आ परिस्थितिमां जेने ईश्वरे शास्त्रयुक्त सद्‌विचारो आप्या छे, तेमणे ते विचारोवडे धर्मसंरक्षण करवुं ते कर्तव्य छे. आ अणीना समयमां, मीठुं मनावी, हा ए हा भणी, पोताना गृहसंसारने पुष्ट करवानी नीतिने अनुसरनारा पोतानुं कर्तव्य विसरी जाय छे. उच्छेदकोना विचारो विशेष सारा केम न होय, ए शंका अस्थाने छे. केमके प्हेलुं तो शास्त्रथी व्यतिरिक्त विशेष प्रमा-

णभूत कोइ धर्मबोधक-कर्तव्यबोधक ग्रंथ नथी; अने होइ शके नहि. अने बीजुं, अनुभवमां पण, नूतन विचारानुवाहकोना विचारोना फलरूप तेमनां संतानोनां भ्रष्टाचरणो तेमनाज हृदयोमां असंतोष, तिरस्कार, अथवा धिक्कार उत्पन्न करी रह्यां छे. कामनानां बीजको-मां अभिवृद्धि करी, मलिन वासनाओने वधारनारी धर्मोच्छेदक पद्धतिने सुधारो कहेवामां हवे लोको वक्रोक्तिनुं दर्शन करे छे, ए स्वाभाविक छे. आ उपरथी ए स्पष्ट थशे, के धर्मनां पोषक बळोनो उपयोग अने एकीकरण थवानी आवश्यकता छे. आपणा देशमां धर्म-प्रचारक विद्वानोनी वधती जती सत्ता ए एक शुभ चिन्ह छे. वेदान्त, श्रीमद् भगवद्गीता, आदि वैदिक सनातन धर्मना ग्रंथो प्रत्ये वधती जती आस्था, ए पण शुचिन्ह छे. बीजी तरफथी धर्मोच्छेदक संस्का-रोनो अभ्यास पाठशाळाओमां चालुज छे, तथापि उच्छेदक पक्षनो कोइ महाबळवान् विपरीताक्षर साक्षर कवि नर्मद पछी ते पक्षनुं समर्थन करवा नीकळ्यो नथी, ए पण अर्थसूचक बीना छे. हवे धर्मिष्ट विद्वानोना उहापोह पासे प्रतिष्ठा पामी न शके एवा लेखो लखी कालक्षेप करवाने स्थाने सत्ताधीशोनी सर्वभावेन शुश्रूषा वडे तेमनो प्रसाद प्राप्त करी व्यवहार सिद्ध करवानुं ते पक्ष वधारे डहापणभर्युं गणे छे. हवे ते विचारोनो प्रचार करवाने धीमां, हलकां, छूपां, अने युक्तिभर्यां पगलांओ लेवाय छे. तेओनो एक पण सि-द्धान्त आर्य धर्मशास्त्रोना तीव्र प्रतापनी पासे पोतानी दृढता जा-ळवी शक्यो नथ।. वळी गुजराती भाषानुं अग्रिमपत्र परदेशगमननो

निषेध करनारा, अने पाखंडमतनुं खंडन करनारा बळवान् लेखो प्रसिद्ध करे, ए वार्ता पण गुर्जरभूमिना उज्ज्वल भविष्यनी आगाही आपे छे.

जेम आपणां पुरातन गौरवनां यथारुचि विविध लक्षणो मनुष्यो बांधे छे, तेम आपणी आधुनिक अधोगतिना अर्थमां सौ पोतपोताना रुचिवैचित्र्यने अनुसार यथेच्छ कल्पनाओ करे छे. वास्तविक रीते आ बन्ने विषयमां विविध हेतुओनो संयोग थइ अनेकानेक भूलो उत्पन्न थइ प्रसरेली छे. आपणो इतिहास अने तेनी कालगणनाने जूठां मानी, तेने बाइबलनी सृष्टिनां छ हजार वर्षमां यद्वातद्वा भचडी देवामां आव्यां छे. तेम करवामां आवे, एमां कांइ आश्चर्य नथी; पण तेने आपणा देशना कहेवाता साक्षरो मान्य करे एमां आश्चर्य छे. कोइ टीकाकार कदाचित् तेमनी दया जाणी, शोधखोळ अने तर्क वडे एवो निर्णय थयो छे, एम कहेवा इच्छे तो तेने एटलाज प्रत्युत्तरनी आवश्यकता छे, के तेने शोधखोळ तथा तर्को अने तारवेळां निगमनो वच्चेना यथार्थ संबंधनुं भान नथी. आपणा अर्वाचीन इतिहासमां केटली गडबड थइ छे, ते दिवसे दिवसे प्रसिद्धिमां आवतुं जाय छे, तो पछी प्राचीन इतिहास के जेने विषे यद्वातद्वा तर्को बांधवानी, पश्चिमाविद्याभ्यासीने पुष्कळ अनुकूलता मळे छे, तेने विषे तो कहेवुंज शुं ? आपणा पवित्र ग्रन्थोमां प्रकाशमान थता इतिहासने अप्रमाण गणवो, ए ते ग्रन्थोनो तिरस्कार कर्या बराबर, अने धर्मनां मूळोतुं उच्छेदन कर्या बराबर छे, एट-

लुंज नहि, परंतु सत्यना परम उपासकोए मानवजातिने स्नेह, दया, अने दक्षतापूर्वक आपेला पुरातन इतिहासना महान् दायभागोने गुमावी नाखवा समान छे.

आपणां शास्त्रोमां मूर्त थएला इतिहासनुं कोइ पण अन्य प्रजाना ग्रन्थ जोडे सादृश्य कल्पी, तेनी तुलना करवानी नथी. वस्तुतः जगत्नो प्राचीन इतिहास तेनी सर्वथी विशेष बुद्धिमती, धर्मिष्ठ, अने सात्विक प्रजानी पासेज स्वाभाविक रीते रह्या गयो छे. शास्त्रोमां प्रसिद्ध थएलो इतिहास वास्तविक रीते मानव जातिनो इतिहास छे. महाभारतना युद्धना निकट समयनो अन्यदेशोनो यत्किंचित् इतिहास अन्यदेशोनी सामग्रीने आधारे देखाडवामां आवे छे, ते पण आर्य प्रजानां संतानोना देशान्तर प्रसारनीज व्यंजना करे छे. मिश्र इत्यादिक देशोमां सूर्यनी पूजा हती, ए प्रसिद्ध छे; वळी इरानादि देशोना पुरातन ग्रंथोमां पण आर्योना मूळ ज्ञानराशि वेदना विच्छिन्नपरंपरावाळा यथामति गोठवेला विचारोनुं दर्शन थाय छे; ग्रीस तथा रोमनां देवदेवीओनां नामाभिधान तथा कथाओमां पण आपणी पुराणकथाओना भ्रष्टरूपनी झांखी थाय छे. बाकीनो इतिहास तो विशेष अर्वाचीन छे. जगत्ना पुरातन कालना इतिहासनुं आपणा जे शास्त्रग्रंथोमां विवेचन छे, ते ग्रंथोना अभ्यासवडे तेना आद्यद्रष्टाओना सत्य उपरना निर्मळ अनुराग अने तेमना उदार, स्थिर, अने सात्विक अंतःकरणनुं दर्शन थाय छे. तेमनाथी विशेष योग्यतावाळो बीजो कोइ प्राचीन अथवा

अर्वाचीन लेखक तेमना जेवी उन्नत भावनाओ अने आदर्शवाळो दृश्यमान थतो नथी. एटले एज निष्कर्ष प्राप्त थाय छे, के शास्त्रोदित इतिहासने असत्य अथवा अशक्य कहेवामां जे तर्कनो उपयोग थाय छे, ते यथान्याय नथी. वळी तर्कमात्रथी सत्यप्राप्तिनो असंभव छे.

ज्यारे आपणे सृष्टिना धीमे धीमे पलटाता क्रमनुं निरीक्षण करीए छीए, अने हजारो, लाखो अने कोटचावधि वर्षो प्हेलां कया कया विभिन्न संयोगोमां जगत् हशे, तेनुं अनुमान करीए छीए, त्यारे आपणी शास्त्रकथाओमां कांइ असंभव जेवुं जणातुं नथी, एटलुंज नहि, पण ते ते अन्य परिस्थितिओमां तेवा तेवा विचित्रज इतिहासो संभवे छे ए भान थाय छे. प्रतिदिन नवता धारण करता अविश्वसनीय सायन्सनी आधुनिक दृष्टिए पण ते कथाओ असंभवित नथी. जेमके, नियन्त्रित मनना अद्भुत बळनुं दर्शन थतुं जाय छे; शब्दनी पदार्थोत्पादक शक्ति प्रमाणित थइ छे; वळी ऊष्णताने जीवननुं तत्त्व स्वीकारवामां आव्युं छे; पृथ्वी प्हेलां अति उष्ण दशामां हती, एम खगोळ वेत्ताओ कल्पे छे; उष्णता पदार्थनुं कद वधारे छे, अने पदार्थ शीतल थतां तेनुं कद घटतुं जाय छे, एम पदार्थविचारको कहे छे. आवी सर्व वार्ताओनुं निरीक्षण करतां विशेष पुरातन काळमां मनुष्योनां स्थूल शरीर अने आयुष्य घणांज विशेष होय, एम स्वाभाविक देखाय छे; अने तेवां निमित्ते आपणां शास्त्रोनी निन्दा करवी ए मॅकॉलेनी मुग्धतानोज विभाग प्रत्यक्ष थाय छे.

आधुनिक प्रवृत्तिपरायण विषयाभिमुख पंडितोए पुराणोनी जे अवगणना करी छे, ते विचारपुरस्सर करेली छे; केमके वेदमां परमात्मानी स्तुति अने यज्ञोनां विधानादिक विषय होवाथी, अने क्षेपक कही प्रतिकूल भाग वर्जित करवाथी, जे मार्गमां निष्कर्षने दोडाववो होय, ते साची खोटी रीते पण साधी शकाय छे. स्मृति-ग्रन्थोमां परस्पर भेद छे, अने समयानुसार युक्तिथी निर्णय करवो जोइए, एम कही तेमांथी पण खसी जवुं स्हेलुं पडे छे; पण पुराण-ग्रन्थोमां तो एना एज महान् सिद्धान्तो, उपदेशो अने आख्यानो वडे एवी दृढताथी, स्पष्टताथी अने प्रेरणाशक्तिथी विस्तारवामां आव्या छे, के अर्थनो अनर्थ करनाराओने तेमां अवकाश नथी. तप, वैराग्य, संसारनी असारता, विषयी जनोनो परित्याग, सन्त पुरुषोनो समागम, संन्यासनो महिमा इत्यादि भावनाओने वज्रलेप समान ते पुण्यग्रन्थोना श्लोके श्लोकमां जडी दीधी छे; अने तेनो विजय प्रत्येक प्रमाणथी सिद्ध कर्यो छे.

आ विचारोने हानिकर मानवा, ए आपणे आर्योए न करवा जेवी भूल छे. ते भूलनो प्रसार आपणामां थयो छे, एमां वखते आपणी भूल न पण होय; केमके मनुष्य बाळपणथी तेनामां प्रेरायेला संस्कारने स्वभावतः आधीन छे. वचमां एक समय एवो पण हतो, एम कहेवाय छे, के ज्यारे आपणुं बधुंज खोटुं अने पारकुं बधुंज सारुं एम केटलाक लोकोनी मान्यता हती; पण शास्त्रविचारे ते मान्यताने उथलावी नांखी छे; अने माध्यमिको जेम माने छे

तेम आपणुंए थोडुं सारुं अने एमनुंए थोडुं सारुं, ए व्यवस्था पण विद्याना प्रकाश पासे टकी शकती नथी; अने आपणां पुरातन शास्त्रोनाज आदर्शो, व्यवस्था, अने आदेशो उत्तम छे, अने ते सर्वे उत्तम छे, ए सिद्धान्त सुशिक्षित आर्य विद्वानोनां अंतःकरणमां प्रतिदिन दृढीभूत थतो जाय छे.

आ स्थळे आपणी भारतभूमि उपर बळवान् असरकरनारं, निःश्रेयसना अविरत मार्गरूपे, अने सरस्वतीना हृदयना निवासस्थानभूत महाग्रन्थनुं वाङ्मय सन्मान करी, पाठकने उन्नतिना मार्गमां प्रेरवानुं इष्ट जणाय छे. सामान्यतः पुराणोनी अर्चना प्रथम करी गया छीए; तथापि तेमां पण श्रीमद् भागवत, परमपुरुषार्थना साधक तरीके, आपणां शास्त्रोनां गुह्य तत्वोना भंडार तरीके, मनोहर काव्य तरीके, अने हृदयशान्तक बोधप्रद पुस्तक तरीके एक अद्वितीय ग्रंथ छे. ए ग्रन्थनो एवो महिमा छे, के ते श्रद्धा, भक्ति, वैराग्य अने धर्मने, अभ्यासकनी इच्छा, वासना, अने गर्वित मान्यताओनी स्हामे तेना हृदयमां साम्राज्यपदे स्थापे छे. तेनो एके एक श्लोक बुद्धिमान्ने विहार करवानो अति मनोहर प्रदेश छे, अने सत्पुरुषोने शान्तिप्रद अमृतनी धारा समान छे, एवा कोइ पण प्रश्नो नथी, के जेने सारु चित्तशांतक उत्तरो ए महासंहितामां न मळे. धर्मशास्त्र, ईश्वरभक्ति, तत्वज्ञान, अने आधिभौतिक, आधिदैविक, तथा आध्यात्मिक इतिहास ए ग्रन्थमां मनोहर, भव्य, सुंदर, अने पूर्ण स्वरूपमां विकसी रह्यां छे. तथापि ते ग्रन्थनो

अभ्यास सहज नथी. ज्ञानस्वरूप परमात्मानी ते वाङ्मय मूर्तिना प्रसादने सारु तेनी उपासना करवानी छे; अने यथार्थ उपासनाने सारु, तेनी विद्युत्शक्तिनो आत्मामां आविर्भाव थवा सारु, अने तेनी कल्याणकर वाणी चतुर्वर्गसिद्धिरुपे फलित थवा सारु, संसर्गान्तरत्याग, गुरुमुखश्रवण, अने दृढ अभ्यासनी आवश्यकता छे.

अत्रे उद्घाटन निमित्ते जे उल्लेख करवामां आव्यो छे, तेमां कोइनी निन्दा अथवा स्तुतिमां तात्पर्य नथी, परंतु आ ग्रंथना विषयभूत परमात्मा प्रत्ये मनुष्योनी अभिमुखता वृद्धिगत थाय, अने तेनी तुष्टिने अर्थे तेओ धर्ममार्गने उपासी, पोते कृतकृत्य थाय, अने जनसमुदायने उच्च मार्गमां प्रेरे, ए अंतराशय छे. धर्म, ए मनुष्यजीवननी प्रथम वस्तु छे; अने तेनी विशुद्धिथी जीवननी उच्चता सिद्ध थाय छे. विवेकीने कोइ द्वेष्य नथी, सर्व देहो प्रभुनां मंदीर छे. नास्तिको पण आस्तिकोना भविष्यना शिष्यो छे, अने काळनी अनंततामां तेमज मानवीजीवनना अंतक्षणमां सत्यनोज विजय छे.

वळी आ सर्व अवनतिनुं दर्शन व्यवहारनी दृष्टिएज थाय छे. जे मनुष्यो आत्यंतिक क्षेमना निवृत्तिपरायण धन्यमार्गने उपासे छे, तेमनामां तो सर्व सत्क्रियाओ फलित थइ छे. मायाजवनिकानुं छेदन करीने, संसृतिना हेतुनो क्षय करीने, ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करवाने उद्युक्त थयेला विद्वान्ने कांइ कथनीय नथी; तेनां तो चरणकमळज वंदनीय छे.

आ संसार चित्तनी वासनाथी उत्पन्न थयेला मोहजालरूप अने अशाश्वत छे, ए विचारी, प्रथम विहित कर्ममां, अने पछी निष्काम कर्ममां प्रवृत्त थइ, श्रीहरिमां चित्तनुं अनुसंधान योजी, तत्पश्चात् श्रुतिशिरोवाक्यनां श्रवण मनन निदिध्यासनद्वारा आत्यंतिक कैवल्यपद प्राप्त करवुं, ए विवेकी, श्रद्धावान्, अने कल्याणकाम जनोनुं कर्तव्य अने लक्ष्य छे. वेदनो, शास्त्रोनो, अने महात्माओनो एज आदेश छे, एज उपदेश छे, अने एज आशय छे. प्रेरक कालात्माए व्यवस्थित करेला मायारूप जगत्‌नी व्यवस्था विषे क्षुब्ध थवानो वास्तविक अवकाश नथी. श्रुतिभगवती विधान करे छे तेम, जे मनुष्य सर्व भूतोने पोताना आत्मामां जुवे छे, अने सर्व भूतोमां आत्मानेज जुवे छे, अने वळी जे मनुष्य सर्वत्र एकज वस्तुनुं अनुदर्शन करे छे, तेने शो मोह अथवा शोक होइ शके ? आ सर्वाधिष्ठान रूप आत्मा एज श्रेष्ठ अने परम आलंबन छे; अने तेना सम्यग् ज्ञानवडे परम पुरुषार्थ सिद्ध थाय छे. अविरतने, दुश्चरितने, अशान्तने, अने असमाहितने आ ज्ञान प्राप्त थतुं नथी. अनेक दिशाओमां दोडता मनने जेणे पोताना अधिकारमां लइ लीधुं छे, अने जे श्रद्धायुक्त निष्काम धर्मोवडे परमात्माना उपासना करे छे, ते मनुष्य पोताना परमस्थानने प्राप्त करी शके छे. ए तमःपर अने आनंदमय स्थान नित्यप्राप्त होइ, कृतोपासकने सुप्राप्य छे. जेनां पूर्वपुण्य उदित थयां छे, ते साधुजनोनो तेमां अविरत अने कल्याणकर योग थाओ.

૨.

સાંપ્રત સમયે અનેક પ્રકારનાં ભિન્નભિન્નયોગ્યતાવાળા જનોથી લખાતાં અનેક પુસ્તકો પ્રકટ થાય છે. સાધારણ મનુષ્યો, અને ચંચળ વિદ્યાર્થીઓ, કાંતો જે યદૃચ્છયા પ્રાપ્ત થાય, તેને વાંચી અવલંબે છે, કે કોઈ વિચક્ષણ આસુરી સાક્ષરની બતાવેલી રજસ્તમોમય પુસ્તકશૃંખલાને આધીન થાય છે, અથવા કેટલાંક રસીલી નવલકથાઓમાં લોભાઇ, છેવટ "માનસશાસ્ત્રના અભ્યાસ" ને નિમિત્તે જાણ્યે-અજાણ્યે, ગર્હિત વ્યંજનાઓને વશ થાય છે. વિધિવત્ શાસ્ત્રાભ્યાસ થોડાજ કરે છે, અને જ્ઞાનનું મુખ્ય સાધન પાશ્ચાત્ય પુસ્તકો ગણાય છે.

વળી આ વધતા જતા સાહિત્ય વડે શુભસંસ્કારપ્રદ શાસ્ત્રો તરફની મનોવૃત્તિ ઓછી થતી જાય છે; અને સત્ય, ધર્મ, અને સમાજવ્યવસ્થાના વિચારો વિવિધ પ્રકારનાં આન્દોલનો પામતાં શિથિલ થતા જાય છે.

ગુર્જરભાષાના સાહિત્યની ભાવનાઓમાં પણ પ્હેલાંના અને હાલના સમયમાં પૃથક્ત્વ દેખાય છે, અને ઉચ્ચ આદર્શોની દૃષ્ટિએ આ સમયને તે બહુ મદ કરવા દે એમ નથી. પ્રથમ સૂચિત કરેલા સૃષ્ટિક્રમાનુસાર કલા વધી છે, વિષય અધોગામિ છે. જે ઉષા કવિ નરસિંહ મહેતાને એમ પ્રબોધવા પ્રેરતી કેઃ—

ઉઠી અત્યારમાં અધમ ઉદ્ધારમાં જગતકિરતારમાં જોડ પ્રીતિ.

તે ઉષા તન્નામશેષ આધુનિક અગ્રિમ કવિને શૃંગારમાં ઝપટાવે છે. ઉષા કહે છેઃ—

સુતી રવિ નાથની સંગે, ઉઠું વ્હેલી કંઈ ઉમંગે,
ગગનનું આંગણું રંગે, પુરૂં હું કાંઇ મલકાતી.

ક્યાં આપણા નરસિંહ મહેતાના સફળ વૈરાગ્યને વ્યંજતી અક્ષરાવળીઃ—

ભલું થયું ભાગી જંજાળ, સુખે ભજીશું શ્રીગોપાળ.

અને ક્યાં આપણા હાલના સહૃદય કવિના વ્યામોહની વિડંબના કરતી લીટીઓઃ—

પ્રાણેશ્વરી વૃતિનિ જીવન સાથ કેરી,
કીધું પ્રયાણ મુજ સંગ ભવાટવીમાં.

અથવા અન્ય ટીકાકાર કવિની નવીન આદર્શ પ્રકટાવતી શબ્દરેખાઓઃ—

ગ્રહો ફરે છે રવિ આસપાસ, છાયા ફરે જ્યાં વચમાં પદાર્થ,
પ્રદક્ષિણા એ પ્રિય કેરી સર્વે, ક્યાં હું ફરૂં રે? તુજ વિણ મધ્યે?

જુના લોકો પ્રાણના ઇશ્વર પરમેશ્વરને માનતા અને વંદના તેની કરતા; હવેના પ્રખર સાક્ષરો પ્રાણેશ્વરીની પ્રદક્ષિણાના પ્રણયપથને પ્રસારે છે.

પુરાતન આદર્શમૂલ અન્ય સાહિત્ય નથી એમ નથી. પણ તેના ઉપાસકોનાં પુણ્યદર્શન દુર્લભ છે. કલાપી પોતાની અને જે સમ્મિતીને તે અવલંબે છે તેની પિછાન આપતાં વૈરાગ્યના પુરાતન આદર્શને અભિનંદે છેઃ—

જહાંથી જે થયું બાતલ અહીં તે છે થયું શામિલ !
હમે તો ખાકની મૂઠી ભરી રાજી થનારાઓ !

આવા કવિવરને ભવભૂતિસમ અસંતોષ અને એકાકિત્વની વ્યંજનાના સૂરમાં જ્યાં બોલવું પડે એવી ભૂમિને પ્રણામ કરી પ્રયાણ કરવાનું જાણે ઉચિત ધારી એ કવિ કાળજવનિકાની પાછળ અદૃશ્ય થઇ ગયો છે.

ધર્મવિષયક વૈરાગ્યબોધક અને ભક્તિપોષક કાવ્યસરિતાનું વહન તો અપ્રતિહતજ છે. તથાપિ તેનાં સહ, બળ, વીર્ય, અને ઓજસ્‌ને સમયનો ધક્કો લાગ્યો છે. આ ગ્રંથ તે સરિતાનો યથાશક્તિ પોષક થાય એવી ભાવના છે.

મ્હારાં વિદ્યમાન પૂજ્ય માતા ગં. સ્વ. જસબાએ રચેલાં કાવ્યોનો આ સંગ્રહ યોજી પ્રકાશિત કરતાં સાત્વિક વિચારોનાં પુણ્ય આંદોલનોની પ્રગતિમાં સહાયભૂત થવાનો આનંદ પ્રાપ્ત થાય છે. આ કાવ્યોમાંનાં ઘણાં-ખરાં મ્હારા પૂજ્ય પિતાની હયાતીમાં, અને બાકીનાં થોડાંક, પાંચેક વર્ષ પૂર્વે તેમના વિદેહ થયા પછી રચાએલાં છે. કાવ્યલેખનની શરૂઆત લગ-ભગ વીસેક વર્ષ ઉપર થઇ હતી. આ સમયે દૈવવશાત્ અનુકૂલતા બની આવતાં લેખકની સહાનુભૂતિ અને સહકારિતા વડે આ સંગ્રહ પ્રસિદ્ધિમાં અણાયો છે. અત્ર પરિકીર્તિત શુભ સંસ્કારના પોષક અને નિવાસભૂત મ્હારા પિતાનું યશઃશેષત્વજ માત્ર ગ્લાનિકર છે; તથાપિ જીવબુદ્ધિનું વાસ્તવ યા-થાર્થ્ય ઇશ્વરસંકલ્પના યાથાર્થ્યમાં લીન થાય છે.

આ ગ્રંથના વિષયનાં શુભ બીજકો સ્વાભાવિક રીતે તરૂણાવસ્થામાંથી

લેખકને પ્રાપ્ત થયાં હતાં. તેમના પિતાનું વિશુદ્ધ, ધાર્મિક, અને સદ્વિચારશીલ જીવન તેમની આ પુત્રીમાં સવિશેષ પ્રતિબિમ્બિત થયું હતું. શ્રદ્ધાળુ પુત્રીને પાસે બેસાડીને, તેઓ જ્ઞાનભક્તિની અનુભવની કુંચીઓ બતાવતા, અને તેમની ભાવનાથી પ્રસન્ન થઇ, ધર્મની અભિવૃદ્ધિના વિષયમાં વિશેષ પ્રયાસ કરવા કહેતા. એ પ્રકારનું આશિર્વચન અથવા અનુજ્ઞા પણ આ કાવ્યો રચવામાં પ્રેરક થયેલ છે. તે પછી મધ્યમ અને પ્રૌઢાવસ્થામાં શિષ્ટગુરૂપરંપરાદ્વારા પ્રાપ્ત કરાયેલા સવિશેષ જ્ઞાનભકિતવૈરાગ્યના સંસ્કારોની આ કલાકૃતિ, પ્રભુનાં બાળકોને ઇશ્વરગુણગાન નિમિત્તે સત્પથમાં પ્રેરવા યોજાએલી છે. આ સ્થળે એટલું કહેવું ખાસ આવશ્યક છે, કે લેખક ઉચિત સ્થળે ઉલ્લેખ કર્યા પ્રમાણે, કાવ્યલેખનની યથાવત્ સાક્ષર સામગ્રી એકત્ર કરી આ પ્રયાસ આરંભાયેલો નહોતો, અને શ્રી હરિનાં યશકીર્તન કરવામાં તે સામગ્રીનો સમન્વય કરવાની જંજાળમાં પડવાનું તેમણે ઉચિત ધાર્યું નથી; અને વાચક પાસેથી ધન્યવાદ પ્રાપ્ત કરવાની સકામતા ન હોતાં, આ ન્યૂનતાને સારૂ ક્ષમાયાચના પણ રહેતી નથી.

આ ગ્રંથના મંગળાચરણમાં નીચેના શ્લોક વડે ગ્રંથના વિષયનો નિર્દેશ કરેલો છેઃ—

ॐब्रह्मणो यशो गीतं हरेरद्भुतकर्मणः ।
निरालम्बस्य देवस्य प्राज्ञनिःश्रेयसाय वै ॥

પ્રણવરૂપ બ્રહ્મ, જે અદ્ભુતકૃતિવાળા શ્રીહરિથી ભિન્ન નથી, અને જે નિરાલમ્બ શ્રી મહાદેવનું સ્વરૂપ છે, તેમનું સમજુ મનુષ્યના નિઃશ્રેયસને અર્થે અત્રે યશોગાન કર્યું છે. પ્રાજ્ઞ, તે સુષુપ્તિ દશાનો અભિમાની જીવ છે; ૐકાર, તે વાણીનું બીજ છે; હરિહરબ્રહ્મા એ ત્રિપુટિનું વાસ્તવ ઐક્ય છે; ઇત્યાદિ ભાવ છે. તપ એ ભગવાનનું હૃદય છે, ધર્મ એ આત્મા છે, અને અનપાયિની ભક્તિ શ્રીહરિની સાક્ષાત્ શ્રી છે; માટે આ વિષયોના વિવેચનનો ઇશ્વરગુણગાનમાંજ સમાવેશ થાય છે.

આ ગ્રંથનાં વિવિધ પદ્યોના સરલતાને અર્થે વિભાગ કરી દીધા છે. સ્વાનુભવકથનાત્મક પ્રધાન પદ્યો પ્હેલાં મૂકયાં છે. તે પછી પ્રભાતીયાં, પછી ગરબીઓ તથા જોડકણાં, પછી વ્યવહારસ્પર્શી કાવ્યો, તે પછી તિથિ આદિનાં પદ્યો, અને છેવટે હરિલીલાવર્ણનાત્મક મ્હોટાંનાનાં પદો મૂકી, શ્રી દ્વારિકેશના નિરાજનવડે ઉપસંહાર યોજ્યો છે. આ સર્વ ગીતોમાં મ્હને કેટલાંક સુંદર, કર્ણપ્રિય, ભાવબોધક, અને હૃદયસ્પર્શી દેખાયાં છે. કેટલીક પંક્તિઓ તો પ્રાસાદિક કાવ્યસરિતાની ઝાંખી કરાવે છે. ગેયત્વ પ્રધાન છે. માનવજીવનના દુર્લભ લાભને ઉદ્દેશી લેખક નિદ્રાના અભિમાની જીવોને સંબોધે છે:—

તમે સમરોને સીતારામ, અવસર નહિ આવે;
આતો સુવર્થું વણસે કામ, આગળ નહિ ફાવે. તમે૦

વળી ઇશ્વરભજનનું ફળ દેખાડે છે:—

ભજનથકી તો ભવભય નાસે, પૂરણ જ્યોતિ પ્રકાસેરે;
તેજને દેખી તિમિર નાસે, અનેક એક પ્રકાસે. અવસર નહિ આવે.

વળી પ્રગતિના મહામોહથી પ્રવૃત્તિમાં પચેલા કલિયુગના જીવને સાવધાન કરે છે:—

ખટપટમાં આવરદા જાશે, સમજવિના ક્યમ શાન્તિ થાશે;
વસે રામ હૃદયે તેને વિસાર માં રે.

તે પ્રભુના વાઙ્મનસગોચર સ્વરૂપને અવલંબી દૃષ્ટતત્ત્વની દૃષ્ટિએ નિશ્ચય કરે છે:—

શ્રુતિ સ્મૃતિઓ સાન કરી રહી શાન્ત જો;
નિર્મળ નિરખી તત્ત્વરૂપ નિશ્ચે કર્યું;
પણ વાણીના વિવિધ પ્રકારે વાદ જો.

દેહની અનિત્યતા, જેને પરિણામે મનુષ્યની આ આપાતરમણીય બાજીનું મૂલ્ય શૂન્યવત્ થઇ જાય છે, તેને સંભારતાં લખે છે:—

શું જતન કરૂં, જન્મ્યું તે જાશે રે પળમાંહે પડી;
ઉપન્યું તે અળસાશે, રાખ્યું નહિ રહે તે તો અરધી ઘડી.

કર્મનો મર્મ બતાવતાં, તત્પ્રણિધાનરૂપ ગંભીર આદેશ કરાય છેઃ—

મિથ્યા સમય ન કહાડીએ, કાળ ફાળ વિશાળ;
જસ ભજો જગદીશને, જીતવી જગ જંજાળ.

શાસ્ત્ર પ્રત્યેની દૃઢ શ્રદ્ધા પાઠકના અંતઃકરણમાં રેડવાનું પદ્ય નીચેની પંક્તિઓથી શરૂ થાય છેઃ—

શાસ્ત્રથી સુખ થાય છે, વળી શાસ્ત્રથી દુઃખ જાય છે;
આધાર શાસ્ત્રો સુખનો, ધીમન્ત તેને ધાય છે.

કેટલાંક પદ્યો લેખકની અંતર્ દશાને પ્રકટ કરે છે, અને તેમાં અપૂર્વ અને જીવનનિયામક ક્ષણોના સંચારનું ભાન થાય છેઃ—

લગની લાગી રે નંદલાલશું, મટયા મનના ઉચાટ;
દૃષ્ટિ કરૂં ત્યાં દયાળ છે, મૂકયો માયાનો ઠાઠ. લગની.

તેમજ :—

મારૂં સર્વસ્વ હરિ તમે શ્યામ, કહોને પ્રભુ કયાં જઈએ;
કાંઈ ઠાલો ન સૂઝે ઠામ, કહોને હરિ કયાં જઇએ.
ઘણા દહાડા ગોવિંદ રહ્યા દૂર, કહોને પ્રભુ કયાં જઈએ;
ભજ્યા ત્યારે ભાસ્યા ભરપૂર, કહોને હરિ કયાં જઇએ.

વળી કહે છેઃ—

ભગવત્ ભય ભાગ્યો રે, ભવની તો ભ્રાન્તિ ગઈ;
તત્ત્વને તો તપાસ્યેરે, સૃષ્ટિ સર્વે શ્રી હરિ થઇ. ભગવત.

પ્રભાતીયાં બહુધા નરસિંહ મહેતાનાં મનોહર પદ્યોની ઢબનાં છે. આ સ્થળે એ પણ કહેવું આવશ્યક છે, કે લેખકને પિંગળ આદિ સાહિત્ય વિષયક ગ્રંથોનો અભ્યાસ નહિ, તથાપિ જુના ગુર્જર કવિઓ, જેમનાં કેટલાંક પ્રસિદ્ધ પદ્યો ગુર્જર નારીઓનો અમૂલ્ય દાયભાગ છે, તે કવિઓનો સવિશેષ દીર્ઘકાળ પર્યંતનો પરિચય લેખકને તેમની લેખનશૈલીનું સ્વરૂપ નિર્ણિત કરવામાં સ્વાભાવિકરીતે કારણભૂત થયેલ છે. પ્રભાતીયાંમાંનાં ઘણાંખરાં ન્હાનાં, બોધક, અને સુંદર છે; અને તેમાં ગુજરાતના પવિત્રધામ ડંકપુરમાં શ્રી દ્વારિકેશ પધાર્યાની કથાનો પણ ઉલ્લેખ કર્યો છે. તે

પછી ગરબીઓ છે. આમાં વિવિધ વિષયો છે, તથાપિ સ્વાનુભવરસિક પંક્તિઓનાં ઉદાહરણ બસ થશે. જીવને પ્રબોધતાં, લેખક નવી નવી યુક્તિઓ, નવી નવી પ્રવૃત્તિઓ, અને નવા નવા તર્કોને વિરૂપ કરે છેઃ—

જન જગમાં કાંઇ જુક્તિ કરી રહ્યા, પણ પામ્યા ન શાન્તિ કે સુખ,
એવું માયા રૂપ, ભજીએ રામ ભાવથી,
દયા કરીને કહે દયાનિધિ. મ્હારી માયા તણો નહિ તાગ,
છળે નહિ પાગ, ભજીએ રામ ભાવથી.
અંતર્માંહી દીપક અજવાળજો, જેથી તીવ્ર તિમિર ટળી જાય,
રીઝે વ્રજરાય, ભજીએ રામ ભાવથી.

વળી કહે છે :—

સગુણ નિર્ગુણ ભ્રાન્તિરે છોડો, એક વિષે ઉભય લક્ષ્ય જોડો,
તત્ત્વ નિહાળી તર્કને તોડો, મનુષ્ય દેહે મોક્ષનો લાભ લઇએ.

વ્યાવહારિક બોધાત્મક કાવ્યોનો વિષય સંસારને વિશેષ સ્પર્શે છે, તથાપિ કોઈ જનોને તે પણ વિશેષ લાભપ્રદ થાય છે, એમ વિચારી તે રાખ્યાં છે. તિથિ મહિના આદિનાં પદો આપણા જુના માનનીય કવિઓની પરંપરામાં લખાયેલાં છે. તે પછી છેલ્લાં શ્રી હરિની કલા રૂપ અવતારોની લીલા વિષયક કાવ્યો છે. તેમાં વૈષ્ણવ જનોના અતિપ્રિય દશમસ્કંધના પૂર્વાર્ધનું સંક્ષિપ્ત અનુકથન છે. વામનાવિર્ભાવનું પદ્ય પણ તેજ લયમાં લખાયેલું છે. શ્રી દ્વારિકા અને શ્રી રણછોડરાયનાં પદ્યોમાં યાત્રાનાં તે તે પૂજનીય, ચિંતનીય, અને રમણીય ધામોની નિર્મળ કીર્તિ ગાઇ છે. વાચકને ભાગ્યેજ કહેવાનું રહે છે કે લેખકના પિતા શ્રી ડંકપુરવિરાજિત શ્રી રણછોડરાયના ચરણકમળના ભાવિક ભકત હતા; તે પરંપરાપ્રાપ્ત શ્રદ્ધાભકિતનું દર્શન તે પદ્યોમાં થાય છે.

આ કાવ્યોની શબ્દશક્તિમાં સવિશેષ પરિવર્તન ન થાય, એટલા સારૂ એ મૂળ લખાએલાં તેમજ રાખવા તરફ બહુધા લક્ષ્ય રખાયું છે. માત્ર કોઈ કોઇ સ્થળે લેખકની સહાનુભૂતિ સમેત આવશ્યક અથવા ઉપયુક્ત ફેરફાર

કર્યો છે. પદ્યો વિશેષતઃ રાગની પદ્ધતિએ લખાએલાં હોવાથી માત્રામેળ અથવા અક્ષરમેળ મેળવવા આવશ્યકતા ગણી નથી; અને લેખકની સૂચનાનુસાર રાગનાં દૃષ્ટાંતો ઉપર મૂક્યાં છે. વળી બીજાં પદ્યોમાં પણ અંગીકૃત વ્યવસ્થાને અનુસરી, તેને મળતા છંદોની ચાલ લખવાની શિથિલ રૂઢીને માન આપ્યું છે. કોઇ કોઇ સ્થળે ગીર્વાણભાષાના ઉત્કૃષ્ટ ગ્રંથોમાંથી સમાન વિચારોનાં સૂચક વાક્યો નિવેદન કર્યાં છે, કે જેથી વાચકના હૃદયને, બુદ્ધિને અને આત્મગૌરવને પુષ્ટિ મળે.

આગળ સૂચિત કર્યા પ્રમાણે આ ગ્રંથનો વિષય ઉત્કૃષ્ટ છે. તેને કેટલી યથાર્થતાથી, અને કેટલાં રસ, શકિત અને સૌંદર્યથી પ્રકટ કરી શકાયો છે, તે જોવાનું કાર્ય સદ્‌વિદ્યાના ગુણજ્ઞ પંડિતોનું છે. વળી, ગુર્જરસ્ત્રીની કૃતિ તરીકે, ગુજરાતી કાવ્ય તરીકે, અને વિચારપ્રબોધક ગ્રંથ તરીકે, આ ગ્રંથનું ગુર્જરભાષામાં ક્યાં અને કેવું સ્થાન છે, તેની પરસ્પર માન વડે તુલના કરવી, એ કાર્ય સાહિત્યના સાક્ષરોનું છે. વૈરાગ્ય, હરિકીર્તન, અને જ્ઞાનનિધા પ્રાપ્ત કરવાના આદેશને હૃદયંગમ કરી માનવજન્મના સાફલ્યને સારૂ ઉદ્યકત થવાનું કાર્ય ભાવિક શ્રદ્ધાળુ જનોનું છે.

શેષમાં બ્રાહ્મણના પુરાતન આદર્શાનુરૂપ સર્વેનું કલ્યાણ, સર્વેનું નિરામયત્વ અને સર્વેને ભદ્રદર્શન થાઓ એ આશિર્વચનવડે વિરમીએ છીએ.

અમદાવાદ.
વિજયાદશમી, શાકે ૧૮૩૭.

જયેંદ્રરાવ ભગવાનલાલ.

પરિશિષ્ટ ૧.

લેખનપદ્ધતિ અને ભાષા.

ગુજરાતી શબ્દોની જોડણીની આધુનિક અવ્યવસ્થિત દશામાં, તે સંબંધે કાંઇક કહેવાનું પ્રાપ્ત થાય છે. કદાચિત્ કોઇ પ્રજ્ઞાચક્ષુ સાક્ષર સ્વકલ્પિત વ્યવસ્થાને સર્વનિર્ણિત વ્યવસ્થા માને વા મનાવવા મથે, તો તેથી વ્યવસ્થાસિદ્ધિ માન્ય થઈ શકતી નથી. વિવિધ વિચારશ્રેણિઓનાં જોડણીની વ્યવસ્થા સંબંધે વિવિધ મંતવ્યો એક સિદ્ધ વ્યવસ્થાનો અભાવ સૂચવે છે; અને તે અવ્યવસ્થાનું દર્શન વિવિધ પ્રકારના લેખકોના ગ્રંથોની જોડણીની તુલના કરવાથી સહજ બની શકે છે; અને તે ભેદોની તીવ્રતા તે તે પક્ષોના ધુરંધરોના તદ્વિષયક લેખોની તીક્ષ્ણતામાં પ્રત્યક્ષ થાય છે. વાસ્તવિક રીતે આપણી ભાષાની જોડણી સંબંધે અવનવા તર્કો કરી નવનવી વ્યવસ્થાઓ વિષેના વાદવિવાદોમાં વિશેષ કાલક્ષેપ કરવો એ પ્રાકૃત ભાષાઓની ઉત્પત્તિ, સ્થાન અને કાર્યની ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ અનુપયુક્ત છે. પરમ પુનીત દેવભાષાની અદ્ભૂત અને અમાનુષીય વ્યવસ્થિતિ વિદ્વાનોને સુવિજ્ઞાત છે. તે ભાષા જેમ આધુનિક આર્ય સંતાનોના હૃદયમંદિરની જીવન્ત ભાષા છે, તેમ આપણા પૂર્વજોના ગૃહસંસારની જીવન્ત ભાષા હતી. તેમાંથી સૃષ્ટિક્રમના વિકૃતિ (degeneration) ના સ્વાભાવિક નિયમાનુસાર, બુદ્ધિ, સંસ્કાર અને પ્રયત્ન આદિનાં માંદ્યને લઇને વિકાર થતાં, પ્રાકૃતનો જન્મ થયો. આ પ્રકારની ગતિમાં સરલતા અને શિથિલતાનાં ધોરણોને વિશેષ સ્થાન પ્રાપ્ત થયેલું જણાય છે; અને તેને પરિણામે બીજાં બળોનાં અનુસંધાનથી કાલક્રમે અનેક પ્રાકૃત ભાષાઓ સ્થિતિમાં આવી છે. આ પ્રાકૃત ભાષાઓ સંસ્કૃત ભાષાથી અવનતિક્રમમાં ઘણે અંશે વિકૃત થયેલી હોવાથી વિદ્યાના ઉન્નત આદર્શને સ્વીકારનારા વિદ્વાનોમાં સુસ્થિર પ્રતિષ્ઠાને પામવા સંભવ નથી. વળી આદર્શ ભાષાના વિશુદ્ધ શબ્દો જોડે એકીકરણ થતા સુધી, પ્રાકૃતરૂપ પામેલા શબ્દોની દશામાં પરિવર્તન થયા કરે, એ સંભવિત છે. અર્થાત્ પ્રા-

કૃત ભાષાઓની સિદ્ધવ્યવસ્થા અલ્પકાલીન અથવા એકદેશીય જ હોઇ શકે. બીજી તરફથી આધુનિક જનસમુદાયની અસર ભાષાઓમાં કોઇ નવી વ્યવસ્થા સર્વમાન્ય કરવા તરફ થોડીજ છે; કારણ કે વિવિધ બળો વિવિધ પક્ષમાં જનસમૂહને ખેંચે છે. અને પ્રમાણપુરૂષોની સંખ્યા ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિએ ભિન્ન ભિન્ન છે. આ વસ્તુસ્થિતિ જોતાં, પ્રાકૃત ભાષાઓ વ્યવહાર સિદ્ધિને અર્થે સામાજિક ઉપયોગને સારૂ ઉદ્દિષ્ટ થઇ છે, તે સ્થાન તેમને સારૂ યોગ્ય જણાય છે. વળી આ વિવેકપરંપરાને અનુસરતાં, જનસમાજના સામાન્ય વ્યવહારમાં અને સામાન્ય સાહિત્યમાં યથાનુકૂલ સરલતા કરી આપવી, એ પ્રાકૃત ભાષાનું કર્તવ્ય બને છે. સાધારણ જનોને સાધારણ ભાષામાં સમજાય તેવું સમજાવવાનું પ્રાકૃત ભાષાઓનું કર્તવ્ય છે. દૈવી સંસ્કૃત ભાષા જેવી સુવ્યવસ્થિત, ગંભીર, પરિપૂર્ણ, સિદ્ધપ્રયોગવતી, ચારૂસર્વાંગી, નિયતશબ્દાર્થયુક્ત અને ઉત્કૃષ્ટસાહિત્યનાનિવાસસ્થાનભૂત ભાષાનાં પૂણ્યદર્શન કરવાનું જેમનું સૌભાગ્ય છે, તેમને અનેકાનેક પ્રાકૃત ભાષાઓના મહોદધિઓને મથીને ઉપરોક્ત સર્વ પ્રકારના ગુણો એકત્ર કરવાનો પ્રયાસ ભગીરથયત્નજ નહિ, પરંતુ અનુપયુક્ત યત્ન જણાય એ સ્વાભાવિક છે. દેવભાષાના હ્રાસની જોડે આપણા ધર્મનો, અભ્યુદયનો અને આયુષનો ક્ષય સંકલિત છે. અને તેના વિજય અને માહાત્મ્યની સાથે આપણું પ્રજાકીય યોગક્ષેમ પણ અભેદ્ય તંતુઓ વડે સંગ્રથિત છે.

આ ઉપરથી પ્રાકૃત ભાષાઓ પરત્વે મુખ્યતઃ ત્રણ નિયમો ઘણે અંશે સ્વીકાર્ય જણાયા છે.

૧. પ્રાકૃત ભાષાઓ ગીર્વાણ ભાષા સંસ્કૃતને આદર્શરૂપ રાખે.

૨. પ્રાકૃત ભાષાઓને સુસાધ્ય રાખવી.

૩. યાવનીય પ્રયોગોનો હ્રાસ થવા દેવો.

આ ત્રણ મર્યાદાઓ અનુક્રમે ભાષાની વિશુદ્ધિ વધારવા, સરલતા રાખવા, અને અશુદ્ધિ ઘટાડવામાં સહાયભૂત થાય તેવી છે. હવે કોઇ કાળે

પ્રાકૃત ભાષાઓ દેવભાષા સાથે ઐક્યને પામશે કે કેમ, તે પ્રશ્નને આદર્શ ભાષાને આદર્શ તરીકે સ્વીકારવાની યોગ્યતા જોડે સંબંધ નથી. વળી આવા પ્રકારની ભાવનામાં પ્રાકૃત ભાષાઓની વિશુદ્ધિ, અને પ્રજાકીય ઐક્યની અભિવૃદ્ધિનો સંભવ ઉત્પન્ન થાય છે. ઉપરોક્ત વિચારપરંપરા ઉપરથી વિચારશીલ વાચકને જણાયું હશે, કે સંદિગ્ધ જોડણીમાં વિકલ્પનો સ્વીકાર આપણી ભાષાને અનુકૂલજ નહિ, પરંતુ આવશ્યક છે. વળી ઉચ્ચારમાં પ્રાન્તિક, સામાજિક, અને ગ્રામ્ય ભેદો પણ અનેક છે. શિષ્ટ લેખોનો નિર્ણય કઠિન છે; તે ઉપરાંત તેવા વિવિધ લેખોની જોડણીમાં ઘણો ભેદ છે. આ બધાં નિમિત્તો સ્થિર વ્યવસ્થાને અપ્રાપ્ય કરનારાં છતાં, ભિન્ન ભિન્ન ધોરણોનું તારતમ્ય સ્વીકારી સૃષ્ટિના બીજા પદાર્થોની પેઠે, જોડણીની પદ્ધતિનું પણ તારતમ્ય રચી શકાય છે. તથાપિ આ પરિસ્થિતિમાં શું જોઇએ, તેના નિયમ બાંધવા કરતાં શું છે તેનો વિવેક કરવો, એ શાસ્ત્રીય પદ્ધતિની દૃષ્ટિએ ઉપયુક્ત છે. એ રીતે નિરીક્ષણ કરતાં, આધુનિક વસ્તુસ્થિતિનો નીચે પ્રમાણે વિવેક બની શકે છેઃ—

૧. અ. સંસ્કૃત શબ્દોની જોડણી મૂલ પ્રમાણે ઇષ્ટ ગણાય છે.

આ. તથાપિ ઈ, ઉના હ્રસ્વદીર્ઘત્વ પરત્વે, હલન્ત પરત્વે, અને ઉષ્માક્ષરો ઇત્યાદિ પરત્વે વિકલ્પ ચાલે છે.

૨. અ. પ્રાકૃત રૂપ પામેલા શબ્દોની જોડણી સંસ્કૃતને અનુસરતી કરવી ઇષ્ટ ગણાય છે.

આ. અથવા તેમાં પ્રતિબંધક સતે શિષ્ટપ્રયોગાનુસાર કરાય છે.

ઇ. અથવા સરલતાથી ઉચ્ચારાનુસાર કરાય છે;

ઈ. અથવા ઉચ્ચારપરંપરા વિભિન્ન સતે વિકલ્પ ચાલે છે.

૩. ઉચ્ચતર લેખક આ નિયમોને અનુપૂર્વ્યશઃ અધિકારી પરત્વે સ્વીકારે છે.

(સ્પષ્ટિકરણઃ—અન્યદેશીય સંસ્કૃતેતર સર્વ ભાષાઓ વિશિષ્ટ વિકૃત

થએલી પ્રાકૃતજ હોવાથી ઈંગ્રેજી આદિ ભાષાના શબ્દો સંબંધે વિશિષ્ટ યોજના આવશ્યક નથી.)

આ વિવેક અનુસાર સર્વ શિક્ષિત લેખકોની લેખનપદ્ધતિને સ્થાન મળે છે; તેમનો તિરસ્કાર થતો નથી; તથાપિ જે નિયમને જે વધારે અવલંબે, તે ઉપરથી તેની તદ્વિષયક કક્ષા અને પંક્તિ નિર્ણિત કરાય છે.

परिशिष्ट २.

વૈદિકસનાતનધર્મમાર્ગનું દિગ્દર્શન.

આપણા શાસ્ત્રપ્રતિપાદિત વૈદિકસનાતનમાર્ગના સિદ્ધાંતો પરત્વે ઘણાનું અજ્ઞાન વિચારતાં તે સિદ્ધાંતોનું એક દિગ્દર્શન ઉપયોગી જણાય છે.

વિચારવાન મનુષ્યો તરીકે આપણી પાસે એ મુખ્ય પ્રશ્નો આવે છે કે આપણે કર્તવ્ય શું છે? આપણે ઉપાસનીય કોણ છે? અને આપણે જ્ઞાતવ્ય શું છે? આનો પ્રથમ ઉત્તર એ મળે છે કે અનાદિઅવિદ્યાથી યુક્ત પુરૂષને પોતાની મેળે જ્ઞાન સંભવતું નથી એટલા સારૂ અન્ય તત્ત્વનો જ્ઞાતાજ એનો જ્ઞાનદાતા થઇ શકે છે; અર્થાત્ ગુરૂદ્વારા જ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે. તથાપિ તે જ્ઞાન વિશ્વસનીય હોવાને સારૂ સર્વજ્ઞ પાસેથી શિષ્ય પરંપરાદ્વારા પ્રાપ્ત થયેલું હોવું જોઇએ. આવું જ્ઞાન ઈશ્વરે આપ્યું હશે કે કેમ તે શંકા થતાં એમ ઉત્તર મળે છે કે, હા; જન્મતા પ્હેલાં માતાના સ્તનમાં દૂધ ઉત્પન્ન કરનાર પરમાત્માએ અજ્ઞાન મનુષ્યને જ્ઞાનનું સાધન આપ્યું છે અને તે વેદ છે. વેદ તેના નિઃશ્વાસરૂપ છે. તેજ વેદના અર્થને સિદ્ધ કરવા, ધર્મ-વિભાગનું વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરવા ઋષિ મુનિઓએ સ્મૃતિઓ રચી છે; અને ત્રિગુણાત્મક અંતઃકરણની પ્રકૃતિના વૈચિત્ર્યથી તેજ ધર્મનું વિવિધ સ્વરૂપ તેઓએ પ્રકટાવ્યું છે; જેમ ભિન્ન ભિન્ન સ્થળે રાખેલું કેમિરા તેજ મંદીરનાં ભિન્ન ભિન્ન ચિત્રો બતાવે છે. વળી એજ શ્રુતિનો અર્થ સર્વ સાધારણ

મનુષ્યને સારૂ શ્રી વ્યાસ ભગવાને શ્રી મહાભારત તથા શ્રીમદ્ ભાગવતમાં વિસ્તાર્યો, અને તેના જ્ઞાનભાગને વિશેષે શ્રી શંકર આદિ આચાર્યોએ બલવાન તર્કો વડે સિદ્ધ કર્યો. ઉત્તમ મનુષ્યોને સ્તુતિનાં સૂક્તો, યજ્ઞોની પદ્ધતિ અને વિધિનિષેધના આદેશોનીજ અપેક્ષા હતી; તે પછી વિસ્તૃત આચારનિર્ણયની આવશ્યકતા સ્મૃતિઓમાં સફલ થઇ; તદનન્તર મહાકાવ્ય રામાયણ વડે કોમળ ઉપદેશ કરાયો; તે પછી ધર્મમાં દૃષ્ટાંત સમેત આગ્રહ વડે પ્રેરવાની આવસ્યકતા પુરાણોએ પૂર્ણ કરી અને ત્યાર પછી આચાર્યોએ બુદ્ધિમાત્રનો આશ્રય કરી શાસ્ત્રને વિસારનારાઓને છિન્ન ભિન્ન કર્યા. આ સર્વ ગ્રંથો શાસ્ત્ર કહેવાય છે અને શિરોવંદ્ય છે; તેમાં વિરોધ કંઇ નથી; ન સમજ્યાનો વિરોધ છે.

હવે ઉપર ઉપસ્થિત કરેલા ત્રણ પ્રશ્નોમાંથી પ્હેલા વિષય ઉપર શાસ્ત્રો શું કહે છે તે જોઇએ. આપણે કર્તવ્ય શું છે? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર મેળવ્યા પ્હેલાં એટલું જાણવાનું રહે છે કે હું કોણ છું અને આ શું છે. આનો યથાર્થ ઉત્તર જે છે, તે અંતઃકરણની વિશુદ્ધિ થયા વિના બેસે એવો નથી. માટે એના અધ્યારોપાત્મક એટલે કામચલાઉ ઉત્તર આપે છે. નિર્ગુણ, વ્યાપક ભગવાને પોતાની સદસદ્રૂપા ગુણમયી માયા નામની શક્તિથી આ ઉત્પન્ન કર્યું. પ્હેલી તે માયા અવ્યક્ત હતી. પછી તેમાં રહેલા ગુણોનો ક્ષોભ થતાં મહત્તત્ત્વ ઉત્પન્ન થયું તેમાં આત્મ વિજ્ઞાન હતું. તેનો વિકાર થતાં અહંકાર ઉત્પન્ન થયો. તે અહંકારમાંથી મન, બુદ્ધિ, ૫ પ્રાણ, ૧૦ ઇન્દ્રિય અને ૫ મહાભૂત ઉત્પન્ન થયાં. અને તેમાંથી આ સૃષ્ટિ થઇ. કોઇ વિદ્વાનો બીજી રીતે પણ તત્ત્વની સંખ્યા ગણે છે તેમાં એક બીજાનો એક બીજામાં સમાવેશ હોય છે માટે તેમાં ભ્રમ ન કરવો. ભગવાનની માયાને લઇને જે વાત કહેવાની છે તેમાં આમજ છે એમ કહેવાનું ભાગ્યેજ રહે છે. આ ૨૪ તત્વો વડે વ્યક્તિ બની છે અને સમષ્ટિ એટલે દૃશ્ય જગત્ પણ બન્યું છે. તે સર્વમાં વ્યાપક પરમાત્મા છે. આ ૨૪ તત્વોમાં ૫ મહાભૂતો તે આકાશ, વાયુ, તેજ, જળ અને પૃથ્વિ છે. આ સર્વને અત્યંત સૂક્ષ્મ રૂપો

છે, અને ઘણું ખરૂં તો તે પરસ્પર મિશ્રિત અવસ્થામાં દશ્યમાન થાય છે. તે સર્વેના ગુણ બતાવ્યા છે. જેમકે આકાશનો ગુણ શબ્દ બતાવ્યો છે. આધુનિક વૈજ્ઞાનિકો કહે છે કે વાયુમાંજ શબ્દ સંભળાય છે. પણ આપણાજ દેશના એક પ્રસિદ્ધ વૈજ્ઞાનિકે બતાવી આપ્યું છે, કે આપણી ઇન્દ્રિયો એવી સ્થૂળ છે કે આપણે ઘણી ચીજો જોઇ કે સાંભળી શકતા નથી. આગળ જતાં આકાશમાં શબ્દ સંભળાય છે એમ જડી આવે ત્યાં સુધી અશ્રદ્ધા રાખવાનું કારણ નથી.

આ નિર્ણય સમજતાં આપણે સ્મરણમાં રાખવાનું છે કે આ ૨૪ તત્વો જડ છે. અને તે આત્માની સત્તાએ કામ કરે છે; જેમ ડ્રાઇવરની સત્તાએ ટ્રેન ચાલે છે. મનુષ્ય પોતે આત્મા છે, બીજી બધી તેની સામગ્રી છે, તેનું શરીર છે. આ આત્મા નિત્ય છે પણ તેનાં શરીરો કાલ બળવશાત્ વિકાર પામી ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને લયને પામે છે. તે શરીરોમાંનુ અત્યારે મનુષ્યનું શરીર છે.

ત્યારે પ્હેલો આત્મા અને પછી શરીર એ ધ્યાનમાં રાખવાનું. આત્મા તે પોતાનું સ્વરૂપ. આ આત્મા જેટલો શરીર જોડે પોતાનું ઐક્ય માની બેસે તેટલે અંશે દુઃખ ને તેથી પોતાને જુદો સમજે તે વિવેક. શરીર વખતો વખત બદલાવાનું માટે મોહ મમત રાખવા લાયક નહિ.

હવે આપણે આપણું કર્તવ્ય કરવાને અંગે એ જોવાનું રહે છે, કે આપણે શું શું મેળવવું છે; તે પ્રમાણે કર્તવ્ય. મેળવવા જેવા પુરૂષાર્થ ચાર છે; શરીરી (આત્મા)નીચો પડતો જઇ સ્વસ્વરૂપને ભુલી ન જાય અને સુખી થાય માટે ધર્મ; શરીર દરમીયાન શરીરનું પોષણ કરી શકે માટે અર્થ; મનની વાસનાઓ શાંત થવાને કામ; અને અનંત યોનિમાં ભટકવાનાં દુઃખમાંથી છુટવાને મોક્ષ. અર્થ એટલો સાધવો કે જેથી ધર્મને બાધ ન આવે અને કામ એટલો સાધવો કે જેથી લપટાઇ જઈ મોક્ષનો માર્ગ ચુકી ન જવાય. આમાં સર્વથી પ્હેલો અગત્યનો ધર્મ, અને સૌથી વધારે અગ

ત્યનો મોક્ષ. ધર્મ વિના મોક્ષ નહિ માટે ધર્મ પ્હેલો, તથાપિ મોક્ષને માટે, માટે મોક્ષથી અવિરૂદ્ધ સમજવો.

મોક્ષ તે તો શરીરના બંધનથી છુટવાનું છે; કંઇ મેળવવાનું નથી. એટલે તેમાં નિષ્ક્રિય થવાની આવશ્યકતા. પણ ક્રિયામાં ઘણા સમયથી યોજાયેલો પુરૂષ નિષ્ક્રિય એકદમ ન થઇ શકે માટે તેને તેનાં કર્મોનું સંયમન કરવાની શાસ્ત્રની આજ્ઞા. સર્વ કર્મોનાં વિધાનનું તાત્પર્ય મનોનિગ્રહ, નિવૃત્તી. તે નિગ્રહને સારૂ બે પ્રકારની આજ્ઞાઓ આમ કરવું તે વિધિ, આમ ન કરવું તે નિષેધ. વિધિનો પણ તાત્પર્ય નિવૃત્તીમાં; જેમકે આમ કરો અર્થાત બીજી રીતે ન કરશો. આ વિધિ નિષેધ પ્રમાણે આચરણ તે ધર્મ. તેથી સર્વ પુરૂષાર્થ પ્રાપ્ત થાય માટે તે સર્વથા સાધવા યોગ્ય છે.

વિવિધ પ્રકારનાં મનુષ્ય હોય છે માટે તેમને સારૂ વિવિધ પ્રકારનો ધર્મ. કયા કયા પ્રકારનાં હોય છે તેનો નિર્ણય કરવો આવશ્યક છે કેમકે તેથી ધર્મની વ્યવસ્થા થાય. જે મનુષ્ય જ્યાં છે, ત્યાંથી તેને ઉન્નત કરવો એ ધર્મનું તાત્પર્ય; સર્વ જનો એકજ કોટિમાં ન હોય માટે ધર્મ જુદા. મનુષ્યોના મુખ્ય પ્રકાર ચાર. સત્વગુણપ્રધાન તે બ્રાહ્મણ, સત્વરજપ્રધાન તે ક્ષત્રિય, રજતમપ્રધાન તે વૈશ્ય, તમઃપ્રધાન તે શુદ્ર. બ્રાહ્મણે ધર્મનેજ સર્વાંગે સાધવો અને શીખવવો, ક્ષત્રીએ સ્વધર્મને સાધવો ને પ્રજાનું પ્રતિપાલન કરવું, વૈશ્યે સ્વધર્મ સાધવો અને દ્રવ્ય પેદા કરવું, શુદ્રે સ્વધર્મ સાધવો અને સેવા કરવી. એટલે સર્વનાં હિતનો ઉત્કર્ષ થાય અને સમાજનાં સર્વ કાર્યનો નિર્વાહ થાય.

શુદ્રે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહેવું, વૈશ્યે વિદ્યાભ્યાસ સારૂ બ્રહ્મચર્ય પાળી ઋષિઆશ્રમમાં પ્હેલાં રહેવું પછી ગૃહસ્થ થવું. ક્ષત્રિએ તેટલા ઉપરાંત રાજ્યમાંથી મમતા ઉઠાડી પુત્ર યોગ્ય થાય એટલે તેને રાજ્યભાર સોંપી વનમાં રહી ધર્મનું વિશેષ પરિશીલન કરવું. અને બ્રાહ્મણે બ્રહ્મચર્ય ગૃહસ્થ અને વાનપ્રસ્થ આશ્રમ ઉપરાંત વૈરાગ્ય થાય એટલે સંન્યાસ લેવો. સંન્યાસમાં

છે, અને ઘણું ખરૂં તો તે પરસ્પર મિશ્રિત અવસ્થામાં દશ્યમાન થાય છે. તે સર્વેના ગુણ બતાવ્યા છે. જેમકે આકાશનો ગુણ શબ્દ બતાવ્યો છે. આધુનિક વૈજ્ઞાનિકો કહે છે કે વાયુમાંજ શબ્દ સંભળાય છે. પણ આપણાજ દેશના એક પ્રસિદ્ધ વૈજ્ઞાનિકે બતાવી આપ્યું છે, કે આપણી ઇન્દ્રિયો એવી સ્થૂળ છે કે આપણે ઘણી ચીજો જોઇ કે સાંભળી શકતાં નથી. આગળ જતાં આકાશમાં શબ્દ સંભળાય છે એમ જડી આવે ત્યાં સુધી અશ્રદ્ધા રાખવાનું કારણ નથી.

આ નિર્ણય સમજતાં આપણે સ્મરણમાં રાખવાનું છે કે આ ૨૪ તત્વો જડ છે. અને તે આત્માની સત્તાએ કામ કરે છે; જેમ ડ્રાઇવરની સત્તાએ ટ્રેન ચાલે છે. મનુષ્ય પોતે આત્મા છે, બીજી બધી તેની સામગ્રી છે, તેનું શરીર છે. આ આત્મા નિત્ય છે પણ તેનાં શરીરો કાલ બળવશાત્ વિકાર પામી ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને લયને પામે છે. તે શરીરોમાંનું અત્યારે મનુષ્યનું શરીર છે.

ત્યારે પ્હેલો આત્મા અને પછી શરીર એ ધ્યાનમાં રાખવાનું. આત્મા તે પોતાનું સ્વરૂપ. આ આત્મા જેટલો શરીર જોડે પોતાનું ઐક્ય માની બેસે તેટલે અંશે દુઃખ ને તેથી પોતાને જુદો સમજે તે વિવેક. શરીર વખતો વખત બદલાવાનું માટે મોહ મમત રાખવા લાયક નહિ.

હવે આપણે આપણું કર્તવ્ય કરવાને અંગે એ જોવાનું રહે છે, કે આપણે શું શું મેળવવું છે; તે પ્રમાણે કર્તવ્ય. મેળવવા જેવા પુરૂષાર્થ ચાર છે; શરીરી (આત્મા)નીચો પડતો જઇ સ્વસ્વરૂપને ભુલી ન જાય અને સુખી થાય માટે ધર્મ; શરીર દરમીયાન શરીરનું પોષણ કરી શકે માટે અર્થ; મનની વાસનાઓ શાંત થવાને કામ; અને અનંત યોનિમાં ભટકવાનાં દુઃખમાંથી છુટવાને મોક્ષ. અર્થ એટલો સાધવો કે જેથી ધર્મને બાધ ન આવે અને કામ એટલો સાધવો કે જેથી લપટાઇ જઈ મોક્ષનો માર્ગ ચુકી ન જવાય. આમાં સર્વથી પ્હેલો અગત્યનો ધર્મ, અને સૌથી વધારે અગ-

ત્યને મોક્ષ. ધર્મ વિના મોક્ષ નહિ માટે ધર્મ પ્હેલો, તથાપિ મોક્ષને માટે, માટે મોક્ષથી અવિરૂદ્ધ સમજવો.

મોક્ષ તે તો શરીરના બંધનથી છુટવાનું છે; કંઇ મેળવવાનું નથી. એટલે તેમાં નિષ્ક્રિય થવાની આવશ્યકતા. પણ ક્રિયામાં ઘણા સમયથી યોજાયેલો પુરૂષ નિષ્ક્રિય એકદમ ન થઇ શકે માટે તેને તેનાં કર્મોનું સંયમન કરવાની શાસ્ત્રની આજ્ઞા. સર્વ કર્મોનાં વિધાનનું તાત્પર્ય મનોનિગ્રહ, નિવૃત્તી. તે નિગ્રહને સારૂ બે પ્રકારની આજ્ઞાઓ આમ કરવું તે વિધિ, આમ ન કરવું તે નિષેધ. વિધિનો પણ તાત્પર્ય નિવૃત્તીમાં; જેમકે આમ કરો અર્થાત બીજી રીતે ન કરશો. આ વિધિ નિષેધ પ્રમાણે આચરણ તે ધર્મ. તેથી સર્વ પુરૂષાર્થ પ્રાપ્ત થાય માટે તે સર્વથા સાધવા યોગ્ય છે.

વિવિધ પ્રકારનાં મનુષ્ય હોય છે માટે તેમને સારૂ વિવિધ પ્રકારનો ધર્મ. કયા કયા પ્રકારનાં હોય છે તેનો નિર્ણય કરવો આવશ્યક છે કેમકે તેથી ધર્મની વ્યવસ્થા થાય. જે મનુષ્ય જ્યાં છે, ત્યાંથી તેને ઉન્નત કરવો એ ધર્મનું તાત્પર્ય; સર્વ જનો એકજ કોટિમાં ન હોય માટે ધર્મ જુદા. મનુષ્યોના મુખ્ય પ્રકાર ચાર. સત્વગુણપ્રધાન તે બ્રાહ્મણ, સત્વરજપ્રધાન તે ક્ષત્રિય, રજતમપ્રધાન તે વૈશ્ય, તમઃપ્રધાન તે શૂદ્ર. બ્રાહ્મણે ધર્મનેજ સર્વાંગે સાધવો અને શીખવવો, ક્ષત્રીએ સ્વધર્મને સાધવો ને પ્રજાનું પ્રતિપાલન કરવું, વૈશ્યે સ્વધર્મ સાધવો અને દ્રવ્ય પેદા કરવું, શૂદ્રે સ્વધર્મ સાધવો અને સેવા કરવી. એટલે સર્વનાં હિતનો ઉત્કર્ષ થાય અને સમાજનાં સર્વ કાર્યનો નિર્વાહ થાય.

શૂદ્રે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહેવું, વૈશ્યે વિદ્યાભ્યાસ સારૂ બ્રહ્મચર્ય પાળી ઋષિઆશ્રમમાં પ્હેલાં રહેવું પછી ગૃહસ્થ થવું. ક્ષત્રિએ તેટલા ઉપરાંત રાજ્યમાંથી મમતા ઉઠાડી પુત્ર યોગ્ય થાય એટલે તેને રાજ્યભાર સોંપી વનમાં રહી ધર્મનું વિશેષ પરિશીલન કરવું. અને બ્રાહ્મણે બ્રહ્મચર્ય ગૃહસ્થ અને વાનપ્રસ્થ આશ્રમ ઉપરાંત વૈરાગ્ય થાય એટલે સંન્યાસ લેવો. સંન્યાસમાં

સર્વ સકામ કર્મનો ત્યાગ કરવો. બ્રાહ્મણને મનોનિગ્રહમાં સર્વથી વધારે પ્રયત્નશીલ રહેવાનું; તેમાં પ્રમાદ કરે તો સૌથી વધારે શિક્ષા. પણ ઉત્તમ સત્વનો ને ઉત્તમ કાર્યમાં યોજેલ માટે દેહાંત શિક્ષા નહિ.

મનુષ્યની પ્રકૃતિ જન્મથીજ બંધાએલી હોય છે માટે જન્મથીજ વર્ણ વિભાગ સમજવો. તેને તેના સ્વધર્મમાં યોજવો તે યોગ્ય, સ્વધર્મમાં ન યોજાય ને કર્મથી ભ્રષ્ટ થાય તો તે ભ્રષ્ટ સમજવો, ઉંચા કર્મમાં યોજાય તો ચાલે પણ તેથી વ્યવસ્થા તૂટે તે ઠીક નહિ. વળી પોતાનોજ ધર્મ યથાર્થ પાળવો કઠિન છે, અને તે બરોબર પાળવાથી કર્તવ્ય સિદ્ધ થાય છે. વસ્તુતઃ તો મનને સાધવાનું છે.

મનુષ્ય જે કર્મો કરે છે, તેનું ફળ તેને અવશ્ય ભોગવવું પડે છે. શાસ્ત્રમાં કહેલાં જે કર્મો તેજ યથાર્થ રીતે કર્મો કહેવાય છે. વિકર્મનું ફળ દુઃખ છે; સકામતાથી કરેલાં કર્મો, એટલે સત્કર્મોનું ફળ સુખ છે; અને નિષ્કામતાથી કરેલાં કર્મોનું ફળ મોક્ષ છે. મનુષ્ય જે પ્રમાણે કર્મ કરે છે, તે તે પ્રકારની ગતિ અથવા પુનર્જન્મ મરણ પછી તેને થાય છે, કેમકે વાવે તેવું લણે એ ન્યાય છે.

આ પ્રમાણે શ્રેયાકાંક્ષી જનોને સારૂ પ્રથમ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ કર્મથી નિવૃત્તિ, સત્કર્મોમાં પ્રવૃત્તી, તદનન્તર નિષ્કામ યોગ અને પરિણામે નિર્વાસનામય નૈષ્કર્મ્યદશાની પ્રાપ્તિ એ કર્તવ્યપ્રણાલિ છે.

હવે શું ઉપાસ્ય છે તે વિષે શાસ્ત્રો નિર્ણય કરે છે કે આ અવિદ્યાજનિત, ક્ષણપરિણામી અને અસ્થાયી દેહાદિક સર્વ પ્રપંચ અનુપાસ્ય છે. સર્વ શકિતમાન અને સર્વ કલ્યાણના સ્થાનરૂપ પરમાત્માજ એક ઉપાસ્ય છે.

સત્કર્મોથી જેમ ચિત્તની શુદ્ધિ થાય છે, તેમ ઉપાસનાથી તેની એકાગ્રતા થાય છે. પરમાત્મા નિર્ગુણ અને નિરાકાર છે, તથાપિ આ જગત્ તે તેમનાથી ભિન્ન નથી; આ જગત્ તે શ્રીહરિનુંજ વિરાટ સ્વરૂપ છે. એ પરમાત્માની ઉપાસના અનેક પ્રકારે થાય છે. તેમની વિભૂતિરૂપ તત્વો વડે, લિંગચિન્હો વડે, અવતારોની પ્રતિમાઓ વડે, તન્મય થયેલા મહા-

ત્માઓ વડે, તથા સાત્વિક પ્રાણીઓ અને પદાર્થો વડે, ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારે શ્રીહરિની ઉપાસના થઇ શકે છે. શ્રીહરિનું પૂજન તે પોતાની ઉન્નતિને અર્થે છે; પૂર્ણરૂપ ભગવાનને તેની અપેક્ષા નથી. વિભુ પરમાત્મા અધર્મ અતિ બલવાન થાય ત્યારે દુષ્ટોના સંહારને અર્થે, અને સાધુજનોના પરિત્રાણને અર્થે અવતાર ધારણ કરે છે. અતિ દુષ્કર પરિસ્થિતિઓમાં અને ઘણાં નિમિત્તોનું એકીકરણ થતાંજ ભગવાન્ અવતાર લેછે, અને તે વિશેષતઃ સાત્વિક ભૂમિમાં લે છે. વળી અવતાર વડે શ્રીહરિ વેદનો અને વેદમાર્ગનો નાશ થતો અટકાવે છે, કે જેથી મનુષ્યોના આત્યંતિક ક્ષેમનું એકાંતિક દ્વાર ખુલ્લું રહે. નિષ્કામ, સર્વકામ, અથવા મોક્ષકામ મનુષ્યને તીવ્ર ભક્તિયોગ વડે પરમ પુરૂષનું યજન કરવાનો શિષ્ટો આદેશ કરે છે.

કર્મ ભક્તિ અને જ્ઞાન એ ત્રણની સહકારિતા છે, તથાપિ જેનું મન કામના પરાયણ છે તેને કર્મયોગ, કામના તથા વૈરાગ્ય જેનામાં સ્પર્ધા કરે છે તેને સાર ભક્તિયોગ અને વૈરાગ્ય જેનામાં પ્રધાન છે તેને જ્ઞાન યોગ વિશેષ ઉપાસનીય છે.

જ્ઞેય વસ્તુનું હવે દિગ્દર્શન કરીએ. સત્ય એજ વાસ્તવિક રીતે જ્ઞાતવ્ય છે. જેની સ્થિતિ અથવા સ્વરૂપ સદા શંકાસ્પદ છે એવા માયિક પદાર્થોના અન્વેષણ અથવા સ્વરૂપનિર્ણયમાં કાલક્ષેપ કરવો, એ આયુષનો અસ્થાને વિનિયોગ કરવા સમાન છે. માયાના એક પણ પદાર્થનું પૂર્ણ દર્શન સમગ્ર જીવન તેની પાછળ બલિદાન કરવા છતાં પણ થઇ શકે એમ નથી. કલાઓ ઉદરનિર્વાહને અર્થે છે, આત્મકલ્યાણને અર્થે નથી. નિષ્કામકર્મથી શુદ્ધ થયેલું, અને પરમાત્માની ઉપાસનાથી એકાગ્ર થયેલું અંતઃકરણ પરબ્રહ્મના વાસ્તવિક જ્ઞાનનો લાભ પ્રાપ્ત કરવાને અધિકારી થાય છે. જેમ મલિન દર્પણમાં પોતાના મુખનું પ્રતિબિમ્બ સ્પષ્ટતાથી દેખાતું નથી, તેવીજ રીતે અનેક કામનાઓથી ગુંચાયેલા, અને વિવિધ વિષયોથી ખેંચાયલા ચિત્તમાં આત્માના અતિ સૂક્ષ્મ સ્વરૂપનું દર્શન થતું નથી. વાસ્તવિકરીતે જ્ઞાનને

સારૂ યોગ્યતા પ્રાપ્ત થયા પછી, જ્ઞેય વસ્તુ સ્હેલી છે. અધિકાર પ્રાપ્ત કરવામાંજ દુર્ઘટતા છે. તત્ત્વદર્શનનાં અનેક પુસ્તકો બુદ્ધિના વિતર્કોના છેદનને અર્થે છે. બુદ્ધિની સાત્વિકતા સધાયા પછી તેની વિશેષ આવશ્યકતા રહેતી નથી. ઉપનિષદ્, ગીતાઆદિ વેદાંતશાસ્ત્રોનું શ્રવણ, મનન, અને નિદિધ્યાસન, એ પરમશ્રેયને સાધવાની શિષ્ટપ્રણાલિકા છે. શ્રુતિ ભગવતી પોતાનાં શિરો વાકયો વડે પરિણામાત્મક સર્વ વસ્તુઓનો નિષેધ કરીને એક સત્ ચિત્ આનંદમય પરબ્રહ્મનું વિધાન કરે છે. આ વિષય અતિ ગુહ્ય છે, અને મહાત્માઓની દુર્લભતાવડે તેમજ નાસ્તિકોનાં દર્શનોના ગ્રંથો વડે તેની ગુહ્યતા સધાય છે.

આ પ્રમાણે આપણા વૈદિક સનાતન ધર્મની પુરાણી વ્યવસ્થા છે. તેનું યથાર્થ વર્ણન કરવાનો આ સ્થળે અવકાશ નથી. પ્રાદેશમાત્ર સૂચન કર્યું છે. વિશેષ જ્ઞાનને સારૂ શાસ્ત્રો પોતાના મહિમામાં વિરાજે છે. તેનો *આશ્રય કરનારની સર્વ હૃદયગ્રંથિઓ તુટી જાય છે; સર્વ સંશયોનું છેદન* થઈ જાય છે; અને વૃત્તિ પરમાત્મામાં લીન થઇ જાય છે.

જ. બ.



અનુક્રમણિકા.

પ્રભાતિયાં.

ગરબીઓ.

શ્રી રૂકિમણીજીનાં જોડકણાં.

વ્યવહારિક બોધાત્મક કાવ્યો.

તિથિ મહિના આદિનાં પદો.

હરિલીલાવર્ણનાત્મક કાવ્યો.

શુદ્ધિપત્રમાં દર્શાવ્યા પ્રમાણે શુદ્ધિ પ્રથમ કરી તદનંતર વાંચવાથી સુગમતા થશે. મુદ્રણમાંની અન્ય ભૂલોની યથોચિત વ્યવસ્થા સારગ્રાહી વાચક કરી લેશે.

શુદ્ધિપત્ર.

પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૩	૯	વાણિ	વાણી
૪	૨	નિલકંઠ	નીલકંઠ
૫	૬	कोटी	कोटि
૫	૧૮	હિમાદ્રી	હિમાદ્રિ
૬	૧૪	सुक्त	सूक्त
૭	૩	વિત	વિત્ત
૭	૭	દિનાનાથ	દીનાનાથ
૭	૨૧	न्यवर्तन्ते	निवर्तन्ते
૮	૧૫	दुरित	दुरति
૧૧	૪	जाग्रहि	जागृहि
૧૧	૧૦	સૌ	શા
૧૪	૪	કિર્તન	કીર્તન
૧૭	૨૦	સઘ	સદ્ય
૧૭	૧૨	મર્ણ	મરણ
૨૦	૧૯	एष	येऽस्य
૨૦	૧૯	स्थिता	स्थिताः
૨૨	૩	धेयं	देयं
૨૨	૭	કિલ્મિશ	કિલ્મિષ
૨૨	૧૯	પશ્યંતિ	પશ્યંતી
૨૩	૨૦	अणोरणियां	अणोरणीयां
૨૪	૩	मुरारे	मुरारेः
૨૪	૬	केडयम्	केयम्
૨૪	૯	અતીરે	અતિરે
૨૫	૬	ભુમાંસ	ભૂમાંશ
૨૬	૩	भावना	भावानां
૨૭	૧૬	અળસાસે	અળસાશે
૨૮	૧૬	રુપિ	રૂપી
૩૧	૧૬	તપસ્વિ	તપસ્વી
૩૧	૧૯	હસ્તિ	હસ્તી
૩૨	૭	દુખ	દુઃખ
૩૨	૧૮	બ્રુહિ	બ્રૂહિ
૩૪	૧૨	શિતળ	શીતળ
૩૪	૧૭	પતિ	પ્રતિ
૩૭	૯	દ્રી	દ્રિ
૩૮	૨૨	યેગિ	યેગી
૩૯	૧૮	હૃદયે	હૃદયેજ
૪૦	૨૨	यैत्र	यत्र
૪૧	૩	નિદ	નિદ્દિ
૪૪	૧૨	ઋષી	ઋષિ
૪૪	૧૩	મુક્તી	મુક્તિ
૪૫	૫	તુલશી	તુલસી
૪૬	૧૪	વહિન	વહ્નિ
૪૬	૧૭	સરસ્વતિ	સરસ્વતી
૪૭	૬	મુની	મુનિ
૪૮	૧૪	स्मया	न्मया
૪૯	૧૦	જશ નો	જસનો
૫૨	૫	અર્ધ્ય	અર્ઘ્ય
૫૩	૪	ભાવી	ભાવિ

૫૪	૧૧	ઉદ્ધયાં	ઉદ્ધર્યાં
૫૪	૧૯	વિનતી	વિનતિ
૫૫	૧૭	કઈ	કંઈ
૫૯	૩	પોતાનુ	પોતાનું
૬૧	૧૦	स्वत:	स्वत्त:
૬૧	૧૫	ધરતા	ધરતાં
૬૧	૧૬	કિર્ત્તન	કીર્તન
૬૪	૭	સ્હજ	સ્હેજ
૬૫	૨૦	જાણું	નાણું
૭૪	૧૩	સ્વણું	સ્વર્ણું
૭૫	૧૫	ડાકોર (૨)	ઠાકોર
૭૫	૨૦	શ્રષ્ઠ	શ્રેષ્ઠ
૭૬	૭	મણિમા	મહિમા
૮૪	૧૬	વધરા	વધ્રા
૮૭	૨૨	यजेद	त्यजेद
૯૬	૪	અધિપતી	અધિપતિ
૯૭	......	ઋષી	ઋષિ
૯૭	૫	પુર્વ	પૂર્વ
૧૦૨	૧૦	પષ્ટી	પૃષ્ઠી
૧૦૩	૧૩	ધસે	ઘસે
૧૦૪	૧૧	મલીન	મલિન
૧૦૬	૮	ગોષ્ટિ	ગોષ્ઠી
૧૦૯	૧૧	અદિતી	અદિતિ
૧૦૯	૧૬	દેવહુતી	દેવહૂતિ

૧૧૩	૧૮	સૂત	સુત
૧૧૫	૧૮	સુગ્રિવ	સુગ્રીવ
૧૧૭	૫	रुप	रूप
૧૧૮	૧૩	ભુધર	ભૂધર
૧૧૯	૧૬	ધન	ઘન
૧૨૧	૧૩	બીરાજ્યા	બીરાજ્યાં
૧૨૩	૩	छिद्यते	छिद्यन्ते
૧૨૭	૭	દ્રશ્ય	દૃશ્ય
૧૩૧	૧૩	દંપતિ	દંપતી
૧૩૨–૬	૫–૧૭	કષ્ઠ	કષ્ટ
૧૩૫	૧૯	વ્રજને	વ્રજ જને
૧૩૯	૧૫	અવિ	આવિ
૧૪૪	૧૫	जवान	जवान
૧૪૭	૩	અજામેળ	અજામીલ
૧૪૭	૧૨	મહિ	મહી
૧૫૦	૧૬	ઇષ્ઠો	ઇષ્ટો
૧૫૨	૯	મ્હારે	માં રે,
૧૫૩	૨	ભૂમી	ભૂમિ
૧૫૯	૧૧	विभो	विभो:

પૃ. ૨૯, પં. ૩–૪ની વચ્ચે : પ્રૌઢ પ્રરાક્રમી તોએ ક્ષણમાં થઇ ગયા સર્વે છાર,

૧	૯	શ્રા	શ્રી
૧૦	૧૬	થા	થી



श्री

હરિ યશ ગીત.

મંગલાચરણ.

ॐ ब्रह्मणो यशो गीतं हरेरद्भुतकर्मणः ।
निरालम्बस्य देवस्य प्राज्ञनिःश्रेयसाय वै ॥

*   *   *

नमस्ते पुरुषंत्वाद्यं पुरुषं प्रकृतेः परम् ।
अलक्ष्यं सर्वभूतानां बहिरन्तरवस्थितम् ॥

(શ્રીમદ્ ભાગવત.)

या गोविन्दरसप्रमोदमधुरा सा माधुरी माधुरी ।
या लोकद्वयसाधिनी तनुभृतां सा चातुरी चातुरी ॥

(સુભાષિત.)

૧

દોહરા.

પ્રથમ પહેલા સમરીએ, શિવજીપુત્ર ગણેશ;
અક્ષર ત્રણનો અર્થ એ, બ્રહ્મા વિષ્ણુ મહેશ.
પટ તંતુ ન્યારા નહિ, જોતાં એક સ્વરૂપ;
નામ ત્રણનો અર્થ એ, ઉમિયાપુત્ર અનૂપ.

વલણ.

આભ અદ્ધર ધરી રાખીયો, જળપરે મહીને ધરી,
વળી એજ કર્ત્તા, એજ ભર્તા, એજ હર્તા શ્રી હરિ.
નિત્યે નમો તેને વળી, અનન્ય ભક્તિએ કરી;
વિચારતાં નહિ વેગળો, પાસેજ પેખો શ્રી હરિ.

દોહરા.

અબળામાં બુદ્ધિ કશી, અબળા બુદ્ધ અબુદ્ધ;
લેશ માત્ર લખવું સહી, સમજું ન શુદ્ધ અશુદ્ધ.
અબળા મતિ અતિ અલ્પ છે, ભામિનીપણું ભણાય;
કૃપા કરે કહિ કૃષ્ણજી, લેશ લક્ષ લેવાય.

હરિગીતછંદની ચાલ.

ઇશ દોષને જોશો નહિ ઉરમાં અનુગ્રહ આણીએ,
તક્રથી નવનીત ગ્રહી અસાર તેને છાંડીએ.
શબ્દકોષ ન વ્યાકરણ પિંગળ પાઠ પઢી નહીં;
બાળકતણા ભાષણ સમી, બે લીટીઓ લખવી સહી.

૨

શિવ સ્તુતિ.

अहं शिवः शिवश्चाहं त्वं चापि शिव एव च ।
सर्वं शिवमयं ब्रह्मन् शिवात्परं न किंचन ॥

હરિગીત છંદની ચાલ.

ગણુપતિ ગરવા ઘણા, ઉમિયાસુત આરાધવા,
પિતા પરશિવ જેહના ભજું ભવપતિ ભવ ભાગવા. ૧
તમ પિતા ઉપર પ્રીત જાણી વિઘ્ન સર્વે વારજો,
ગજાનન ગણેશ સમર્થ વાણિમાંહી વિરાજજો. ૨
મહાદેવ તે મહાદેવ છે આધારમાં આધેય રહ્યું,
આધેયમાં અદ્ભુતતા આધાર નવ જાયે કહ્યું. ૩
શિવનું સ્વરૂપ યથામતિ, વેદાદિ શાસ્ત્ર જે કહ્યું,
શણગાર શિવ અવલોકતાં દર્શન દાખ્યું તે ગ્રહ્યું. ૪
ગંગા રહ્યાં હરશીર્ષમાં, નિર્મળતા નન્દીશની,
દર્શનથી દૂર પાપ જાય મોટાઇ એ મહેશની. ૫
સોમ શિવલલાટમાં, અમૃત અદ્ભુત શિવકને,
એ શંભુને ભજ ભાવથી તો તુરત તું અમર બને. ૬
રૂંઢમાળ રૂડી કંઠમાં તે દૈત્યનું દૈવત ગ્રહ્યું,
સુરનરને દેખાડવા ભૂષણ સમ કંઠે રહ્યું. ૭

ઉપવીત ઉમિયાઈશજી ભુજંગનું ભારે કર્યું,
તે ગરલ સર્વે ગત કરે પણ નામ નિલકંઠ તો ધર્યું. ૮
સર્પો શરીરે વીંટીઆ તે અભયતા અવલોકવા,
એવા શિવતણી સ્તુતિ કરો વિષયવિકારો રોકવા. ૯
મૃગચર્મ છે મહેશને વૈરાગ્ય શુદ્ધ દર્શન થયું,
વૈરાગ રાગને કાઢવા બીજ રજનું નિવૃત્ત થયું. ૧૦
નિજ પુત્ર સાથે શોભતાં અર્ધાગમાં ઉમિયા રહ્યાં,
ભવપતિના ભક્તને એ રીતનાં દર્શન થયાં. ૧૧
આહારમાં આહ્‌લાદ નહિ, શિવ શાંત તે સણજી પીએ,
મન્મથને વળી મારવા મહાદેવ સમશાને રહે. ૧૨
શુદ્ધ સત્ત્વ પોઠી પલાણતા દર્શન દુનિયાનું કરે,
ભવ ભય ભાગે ભવતણો હર હર કોઇ જન ઉચરે. ૧૩
ત્રિશૂળ તે ત્રિગુણ છે આરોપ એક કરે કર્યો,
ભરપૂર શંકર શુદ્ધ ભર્યા અદ્વૈત મત નિશ્ચે ધર્યો. ૧૪
રચનાર નાગર તણી નારી જ્ઞાતિ વડનગરા તણી,
હે ઇશ ! દોષ ન દેખશો નિવારશો અબળા ગણી. ૧૫
જશ કહે જન જીવતાં રહો ભવનાથને સમજી ગ્રહો,
શ્રેષ્ઠ ફળ શિવરાત્રિએ, સર્વે જનો હર હર કહો. ૧૬

ૐ.

વંદન.

नमोऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये ।
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते ।
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥

(શ્રી વિષ્ણુ સહસ્ર નામ.)

ધોળ.

("મ્હારી વ્હારે ચ્હડો અવિનાશી રે":—એ લય.)

પ્રથમ પાય લાગું શ્રી નાથ રે, સહસ્ર શીર્ષા હજારો હાથ રે;
જેનું રૂપ છે અકળ અનૂપ રે, જે છે જગના કારણ રૂપ રે. ૧
જેનો વેદ તે ભેદ ન પામે રે, વાણી વર્ણન કરતાં વામે રે;
જેના ડહાપણની નહિ બાકી રે, જેની સત્તા સકળ દિશ વ્યાપી રે. ૨
જેણે સમુદ્રવિષેથી શ્રી આપી રે, જેણે મહાજળ પર મહી સ્થાપી રે;
એક બાળતણી ક્રીડા જેવી રે, એમાં અદ્ભુત શક્તિ છે કેવી રે. ૩
હરિએ મોર મેના રચ્યાં કેવાં રે, ગાયો વત્સ વનસ્પતિ એવાં રે;
ચકલી ચક ચક કરતી આવે રે, નિજ બાળનો ચારો લાવે રે. ૪
સાગર સરિતા સકળને નિરખો રે, મ્હોટો હિમાદ્રી દેખી હરખો રે;
જન કાજ શાકાદિક કીધાં રે, મેવા, ફળ, ફુલ માવે[1] દીધાં રે. ૫

---

૧ ઈશ્વરે.

જેની શક્તિનું માપ ન થાય રે, શેષ સહસ્ર મુખે ગુણ ગાય રે;
જે જન ગુણ યદુનાથના ગાય રે, ફરી જન્મ ત્હેનો નવ થાય રે. ૬

મારૂં મસ્તક માધવજીને નમજો રે, પાદ પ્રભુજી પરખવા પળજો રે;
મારાં નેત્ર નારાયણને નિરખે રે, સ્મરણ કરતાં અંતર અતિ હરખે રે. ૭

મ્હારી વૃત્તિ વિભુમાં વળજો રે, મ્હારૂં મનડું મોહનજીને મળજો રે.
મ્હારૂં ચિત્ત ચતુર્ભુજને ચ્હાજો રે, મ્હારી વાણી ગોવિન્દ ગુણ ગાજો રે. ૮

શ્રવણ શ્રીહરિગુણનું કરીએ રે, તેથી ભવના ફેરા નવ ફરીએ રે;
બુદ્ધિ બહુનામીએ કેવી કીધી રે, તેણે હુન્નરની હદ લીધી રે. ૯

મહાપૂરણનો પાર શો લઇએ રે, વાણી શુદ્ધ થવા ગુણ ગાઈએ રે.
જસ ઝાઝું કશું નવ જાણે રે, સીતારામ સ્મરણ ઉર આણે રે. ૧૦

૪.

શરણ યાચના.

इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा, स्विष्टस्य सुक्तस्य च बुद्धिदत्तयोः।
अविच्युतोऽर्थो कविभिर्निरुपितो, यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनम् ॥

(શ્રીમદ્ ભાગવત.)

રાગ રામગ્રી.

("લોચન મનનો રે, આ ઝગડો લોચન મનનો":—એ લય.)

શરણ આપો મને શ્યામ, શ્રી હરિ શરણજ આપો,
સ્હાય કરો શ્રીના કાન્ત. શ્રી હરિ૦ (ધ્રુવ.)

શોધી જોયું સર્વને, દેહ દામ ને ધામ;
અસત્ય સહુ અવલોકતાં, મન ન ઠર્યું કોઈ ઠામ. શ્રી હરિ. ૧

અસાર આ સંસારમાં, સ્મરણુ નામ તમ સાર;
દહી[1] કામના દ્યો હરિ, માગું મુકુન્દ આ વાર. શ્રી હરિ. ૨

લોભ ન સુત વિત લોકનો, અંતર જુઓ અવિનાશ;
સ્મરણુથકી સંતોષ છે, ચરણુ શરણુની આશ. શ્રી હરિ. ૩

નાથ તમે ના નવ કહી, શરણે આવ્યાં જેહ;
વિભીષણ ધ્રુવ પ્રલ્હાદ ને પાંચાળી પાંડવો જેહ. શ્રી હરિ. ૪

દિનાનાથ દયાળ હે! દ્વિજ, વ્રજ, ગજ આધાર;
રાખ્યાં ગોકુળ ગોપને, જય જય શ્રી નન્દકુમાર. શ્રી હરિ. ૫

જીવ શિવને જવ જોઈએ, દહે દોષ તે કાળ;
પણુ અનુગ્રહ જો કરો, તોજ ઘટે એ ગોપાળ. શ્રી હરિ. ૬

સાધન સાધ્ય જ્યાં છે નહીં, અનુભવ સુખ અપાર;[2]
કરે ફરે બનતું નથી, કેવળ કૃપા ગુરૂ ગોપાળ. શ્રી હરિ. ૭

મન મોટું પણુ મટકા સમું, વાણી વશ નહિ જેહ;
પણુ પૂરણુ પરખાય તો, દયા દયાળુની એહ. શ્રી હરિ. ૮

સાગર સત્તા શું લહે, જળનાં જળચર જેહ?
આહાર સાર જળમાં સહુ, આનંદ માને એહ. શ્રી હરિ. ૯

આ તનમાં ઇચ્છિો હરિ, બીજે થશો બે હાલ.[3]
ભજન કરો ભડ થઈ હવે, જસ ત્યારે થશો તમે ન્યાલ. શ્રી હરિ. ૧૦

---

૧ બાળી.
૨ यतो वाचो न्यवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ॥ (ઉપનિષદ્)
૩ दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः ॥ (શ્રીમદ્ ભાગવત)

૫

ભક્તિપ્રભાવ.

कलौ केशवकीर्तनम् ।

("ઓધવજી સંદેશો કહેજો શ્યામને":—એ લય.)

કલિયુગમાં શ્રી કૃષ્ણ અમારૂં ધન છે,
સાચવી રાખ્યું શુદ્ધ પેટી મનમાંહ્ય જો. કલિયુગ. ૧
લોભીનો સૌ લક્ષ્ય રહે છે દ્રવ્ય ભણી,
વિષય ઠગારા લૂંટી રખેને જાય જો. કલિયુગ. ૨
શ્રમ કરી શ્રી કૃષ્ણરૂપી ધન મેળવ્યું,
જતન કરીને જાળવ્યું મહાધન મહાન જો. કલિયુગ. ૩
શ્રીમંતને સ્વપ્નામાં ધનનું દુઃખ નહિ,
દ્રવ્યતણું સુખ જાગૃતમાં તો હોય જો. કલિયુગ. ૪
ધનિકને દુઃખ સહેવાં નહિ વ્યવહારનાં,
મસ્ત રહે જે દ્રવ્ય દર્શનની માંહ્ય જો. કલિયુગ. ૫
શ્રીમંતને શી તંમા રહે સંસારની,
અધિકારીને અર્પી રાજી થાય જો. કલિયુગ. ૬
મહાધનને મહાભક્તો તે મેળવી શક્યા,
શુકયોગી સનકાદિક ને પ્રલ્હાદ જો. કલિયુગ. ૭
પાર્થિવ દ્રવ્યથી દુર્યોધન દુખીયો થયો,
પાંડવ સુખીયા કૃષ્ણ દ્રવ્યની માંહ્ય જો. કલિયુગ. ૮

સુદામાએ સ્નેહ કર્યો શ્રી શ્યામમાં,
મીરાંબાઇએ મોહીને મૂક્યું રાજ જો. કલિયુગ. ૯

કલિયુગમાં દ્રવ્યજ તે કૃષ્ણનું નામ છે,
સ્મરણ કરતાં ભવની ભ્રમણા જાય જો. કલિયુગ. ૧૦

દ્રવ્ય દાગીના જતન કરી જન સાંચતા,
મરણ સમે તે મૂકી ઠાલાં જાય જો. કલિયુગ. ૧૧

સાથે આવે દાન ધર્મ હરિ નામ જે,
ઉભય સ્થળે વળી આદર પામે તેહ જો. કલિયુગ. ૧૨

જસ કહે હું ઝાઝું કાંઇ જાણું નહિ,
રાખું મનમાં શ્રીકૃષ્ણરૂપી મહાધન જો. કલિયુગ. ૧૩

૬.

ઈશ્વર સ્મરણની આવશ્યકતા.

कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ।
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालोहि दुरतिक्रमः ॥

પદ.

("મોટાનું વચન સુખધામ ઇતિ રીતે કરીએ":—એ લય.)

તમે સમરોને સીતારામ, અવસર નહિ આવે,
આતો સુધર્યું વણુસે કામ, આગળ નહિ ફાવે.

મનુષ્ય દેહનું માન ધરાવ્યું, ખરનરમાં શી ખામી રે;
ભાવ ધરીને ભજન કરો તો, ધન્ય મનુષ્યતનુ પામી. અવસર. ૧

અનેક જન્મની આરત જાણી, દેહ દયાળે દીધી રે;
આશ કરી પણ હામ ન પકડી, કસર ઘણી તેં કીધી. અવસર. ૨
ધામની સંગે ઘણી બંધાયાં, છુટવાનો નહિ છેડો રે;
ધામ ધણીઆણી ધન અહીં રહેશે, ત્હારો કયાં નિવેડો. અવસર. ૩
કુથલી કરતાં કાં નવ હારો, ફોગટમાંહી ફસાયાં રે;
મનુષ્ય દેહનો મોટો સોદો, કહો કમાઇ શી કમાયાં. અવસર. ૪
મોહ મમતમાં દહાડા ખોયા, અવિચારે અવરાયાં રે;
સૂરજ ઉગે સૌને સૂઝે, અંધારે અથડાયાં. અવસર. ૫
ભજન થકી તો ભવભય નાસે, પૂરણ જ્યોતિ પ્રકાસે રે,
તેજને દેખી તિમિર ન્હાસે, અનેક એક પ્રકાસે. અવસર. ૬
દેહદેવળમાં દેવ ને દેવી, ઇંદ્રિયતણા અધિકારી રે;
અધ્યક્ષ તો અવિકારી કહીએ, સભા બની છે સારી. અવસર. ૭
આપ આપણું કારજ કરતા, ઉપર સત્તા અધિકારી રે;
અધ્યક્ષને ન કહેવું કરવું, એ સત્તા અતિ ભારી. અવસર. ૮
જન્મ મરણનું જોખમ ટાળી, અલગ અવિચળ રહીએ રે;
જસ કહે ઝાઝું શું કહેવું, અનુભવ આનંદ લઇએ. અવસર. ૯

૭.

ઉદ્બોધન.

जन्मदुःखं जरादुःखं जायादुःखं पुनः पुनः ।
अन्तकाले महादुःखं तस्माज्जाग्रहि जाग्रहि ॥

પદ.

(" મોટાનું વચન સુખધામ ઇતિ રીતે કરીએ ":—એ લય.)

તમે ચેતો દીવસ છે ચાર, ભજોને ભાઈ ભગવતને,
થાય સુખ રૂપ સૌ સંસાર, ભજોને ભાઈ ભગવતને;
દેહાદિક સૌ દ્રશ્ય તે મિથ્યા, જોતાં જોતાં જાય રે,
વિશ્વાસ સૌ વિજળીનો રાખો, ક્ષણમાં તે ક્ષય થાય. ભજોને. ૧

કષ્ટ કરી કંઈ દ્રવ્ય કમાયા, અહિં રહેવાનું જાણો રે;
એવીજ રીતે સગું સંબંધી, મિથ્યા સર્વે જાણો. ભજોને. ૨

'હું' અહંકારને હાંકી ક્હાડો, 'હું' નહિ તો 'આ' શાનું રે;
પરબ્રહ્મ છે પરમાર્થ દ્રષ્ટે, થાવું જાવું પછી કોનું. ભજોને. ૩

મુસાફરીમાં મહા દુઃખ આવે, સહાયકારી સંગ લેવું રે;
મુકામ વિના મજા નહિ આવે, ચિત્તમાં ચેતી જોવું. ભજોને. ૪

સહાયકારી સ્મરણ સત્ય હરિનું, ટીમણ તત્વવિચાર રે;
આરોગી આનંદમાં રહેવું, નિજ ઘર મળશે નિરધાર. ભજોને. ૫

ઘર વિના ગોઠે નહિ કોઇને, જુઓ વહેવારની વાત રે;
ભય જો ભુવન પોતાને હોય તો, કોઇએ ઘર નહિ જાત. ભજોને. ૬

માટે સ્વરૂપ છે નિજ ઠેકાણું, વાકેફગાર વિવેકી રે;
ગુરૂ ગોવિંદનો પાલવ પકડો, રાખી ભજનની ટેકી. ભજોને. ૭
સુકૃત્ય વિના શી રીતે આવે, આ ચિન્તામણી દેહ રે;
ઝવેરી કોઇ જવલો પરખે, જે સમજે નિજનું શ્રેય. ભજોને. ૮
મનને વારો મોહને મારો, સુખ સમજણ વિના છે નહિ રે;
સુખ સંસારનું હોયે સાચું, દુઃખ પડચું કો કહે નહિ. ભજોને. ૯
મહાસુખનો તો તે જન ભાગી, સમજીને સુખ માણે રે;
દીન વિષયમાં દહાડા ગાળે, અનુભવ કેમ કરી આણે. ભજોને. ૧૦
કપટ તજી કરો કૃષ્ણભજન તો, સર્વે સારૂં થાય રે;
અનુભવ એ ઉત્તમ સમજણનો, મુક્તો તે જન કહેવાય. ભજોને. ૧૧
ભવનાં દુઃખ દેખીને ડરવું, કરવું નહિ નિષિદ્ધ કામ રે;
વૈરાગ્યનું ફળ વસ્તુ જાણો, એ જ્ઞાનીનું જ્ઞાન. ભજોને. ૧૨
ભક્તિ વિનાની ખોટી ખટપટ, હરિ ન આવે હાથ રે;
મોહ મૂકી માધવને ખોળો, પ્રભુ પોતાની પાસ. ભજોને. ૧૩
પ્રીત કરી પુરૂષોત્તમ પેખો, એજ શરીરનો સાર રે;
સફળ ફેરો તે જનનો, જેને વ્હાલા નંદકુમાર. ભજોને. ૧૪
જસ જનમ જૂઠો છે જાણો, સાચું સચ્ચિદાનંદ રે;
અનુભવી આનંદમાં રહેવું, ઉલટું તે અનિત્ય. ભજોને. ૧૫

૮.

આદેશ.

श्रद्धाभक्तिध्यानयोगादवैहि ॥ (ઉપનિષદ્)

દેશની ચાલ.

("કામણ દીસે છે અલબેલા ત્હારી આંખમાં રે"—એ લય.)

ગોવિન્દ ગતિ તમારી કોણ કળે કળિકાળમાં રે !
ભોગે ભટક્યાં, રોગે સીઝયાં, મનભાવ્યું તે કરીને રીઝયાં;
દુષ્ટ દુર્ગુણે નાંખ્યાં ઉંડી ખાડમાં રે. ગોવિન્દ. ૧

ધન સુત દારા લાગે સારાં, ચાર દિવસ છે તે તો ત્હારાં;
લપટાઇ તેમાં કૃષ્ણભજનને ખાળ માં રે. ગોવિન્દ. ૨

ભક્તિ કરવા ભવ આવ્યો તું, કહેને ત્યાંથી શું લાવ્યો તું;
આપ્યું તેના ગુણ ગા, ઘડી એક ગાળ માં રે. ગોવિન્દ. ૩

ભજવાથી ભવ રોગો જાશે, રચનારો બહુ રાજી થાશે;
સ્મરણ વિના સુખ નહિ આવે સંસારમાં રે. ગોવિન્દ. ૪

કર્તવ્ય ત્હારૂં કરીજ લેજે, કાંઇ ન કર તો કૃષ્ણજ કહેજે;
વખત જાય છે, આળસ આણી ઉંઘ માં રે. ગોવિન્દ. ૫

ચતુર થઇને ચિત્તમાં ચેતો, ઘરમાં રહી ગોવિન્દને ગોતો;
જાગ્ય, જાગ્ય, શું પડી રહ્યો જંજાળમાં રે. ગોવિન્દ. ૬

ખટપટમાં આવરદા જાશે, સમજ વિના ક્યમ શાન્તિ થાશે;
વસે રામ હૃદયે તેને વિસાર માં રે. ગોવિન્દ. ૭

વળગ્યાં તે તો અળગાં થાશે, પસ્તાવો પછી અતિશય થાશે;
વિચાર કરને ગોવિન્દ વિણ તું ગાજ માં રે. ગોવિન્દ. ૮

રમતાં જમતાં સમયજ જાશે, કરીશ કંઇક તે આગળ થાશે;
કર કિર્તનને નિર્ભય રહે, કળિકાળ માં રે. ગોવિન્દ. ૯

પશુ પક્ષી તન બને ન કરવું, જે નીરે તે ચરવું ફરવું;
તન ધન વિદ્યુત્‌ના ચમકારા, બાઝ માં રે. ગોવિન્દ. ૧૦

પ્રથમ પ્રીત કીધાથી આવે, તને દબાવી તે બહુ ફાવે;
દુર્ગુણ દુષ્ટો તેને દિલમાં રાખ્ય માં રે. ગોવિન્દ. ૧૧

સદ્‌ગુણથી સહુ કારજ સુધરે, ઉંચો ચડતો કો દિન ઉધરે;
શુભમતિ વિણ બીજું મનડા તું માગ્ય માં રે. ગોવિન્દ. ૧૨

જેનું લક્ષ્ય લાગ્યું છે જેમાં, સુખ સર્વે તે માને તેમાં;
ભૂધરની ભક્તિ વિણ રસ કોઇ ચાખ્ય માં રે. ગોવિન્દ. ૧૩

વૈભવ કોઇ વેળાએ આવે, તેમાં શું તું ગર્વજ લાવે;
ભુજંગ ભોગો પ્રીતિ કરીને, પાળ્ય માં રે. ગોવિન્દ. ૧૪

પિંડ પોતાનો પોષી લીધો, દાનાર્થે એક દામ ન દીધો;
કર કંઇ પરમાર્થ લોભ વૃત્તિ તું રાખ્ય માં રે. ગોવિન્દ. ૧૫

પુણ્યદાન પરમાર્થજ કરજે, ભાવ ધરી ભૂધરમાં ભળજે;
આ તન ધન મિથ્યા છે સાચું જાણ માં રે. ગોવિન્દ. ૧૬

અવળું ચાલી બહુ અથડાવું, વારે વારે થાવું જાવું;
નિરખી ન્યારો થા અવસર આ દેહમાં રે. ગોવિન્દ. ૧૭

પ્રાણી સહુને પ્રભુનાં જો જો, માન મૂકીને મોટાઈ ખોજો;
રાવણ જેવા ભળી ગયા કંઇ ખાખમાં રે. ગોવિન્દ. ૧૮

કરજોડીને કૃપણ કહુંછું, ચરણ શરણ સાહીને રહુંછું;
કુહે જસ હવે તું માયા પડદો પાડચ માં રે. ગોવિન્દ. ૧૯

૯.

ભક્તિની આવશ્યક્તા.

आलोक्य सर्व शास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणस्सदा. ॥

(પાંડવગીતા.)

દેશની ચાલ.

જનતન આપ્યું પણ તું ગોવિંદને ગાતો નથીરે,
ઓસીંગણ થાતો નથીરે. જનતન.

શરીર લઇને જો તું સટક્યો, ભૂલી પ્રભુને ભવમાં ભટક્યો;
ભોગ ભોગવ્યે કોઇનું શ્રેય થાતું નથી રે. જનતન. ૧

મોહ મૂકી મોહનને મળજે, હેત કરી શ્રી હરિથી હળજે,
પ્રભુ પામવા એ ઘરની વાતો નથી રે. જનતન. ૨

રાત દિવસ રસળીને કહાડે, વધે વખત વાતોમાં ગાળે,
ખધું કર્યું પણ જોવાનું જોતો નથી રે. જનતન. ૩

વ્યસન વસીલો વેગે ખોળે, અધિકાર પણ અમથો ડહોળે;
મિથ્યા એ સહુ, ધાવું ત્યાં ધાતો નથી રે. જનતન. ૪

દેવ દયાળુ એવો મોટો, અમરમાં નહિ એનો જોટો;
એવા હરિના ગુણ તું કયમ ગાતો નથી રે. જનતન. ૫
મનુષ્ય દેહમાં ભક્તિ ભાવી, મુક્તિ તો તો કરમાં આવી;
દેવ દયાળુ દૂર ઘડી થાતો નથી રે. જનતન. ૬
વિપત્તિ બહુ વ્યવહારની વેઠે, કર્યું બધું એમ માની લે છે;
શ્યામ શરણ વિણ સુખીયો કોઇ થાતો નથી રે. જનતન. ૭
ખરા સુખમાં શેની ખામી, આળસમાં બહુ થાયે હાની;
શાન્ત થઇને શ્રીવરને ધ્યાતો નથી રે. જનતન. ૮
એક તરફ વૈભવને મૂકો, શાણા સરસ સમય કયમ ચૂકો;
હરિ નામનું અમૃતફળ ખ્હાતો નથી રે. જનતન. ૯
શું કરવા કર પાછી પાની, લાભ ઘણો છે ગોવિન્દ ગાની;
ભાગ્યશાળી કયમ ભજન કરી થાતો નથી રે. જનતન. ૧૦
જસ કહે જન ઝટપટ ચેતો, આ તનમાં અવિનાશી બેઠો;
ગયો વખત તે ફરી ફરી મળતો નથી રે. જનતન. ૧૧

૧૦.

જીવને બોધ.

नह्यतोऽन्यः शिवः पन्थाः विशतः संसृताविह ।
वासुदेवे भगवति भक्तियोगो यतो भवेत् ॥

(શ્રીમદ્ ભાગવત.)

મહિદીપ છંદની ચાલ.

("શ્યામ ચરણ સ્મરણ મિત્ર સરસ રીત સાચી":—એ લય.)

ગા ગોપાળ, ગા ગોપાળ, વખત જાય વીતી;
સાર સર્વ શાસ્ત્રનો એ કર પ્રભુમાં પ્રીતિ. ગા. ૧
ભજન કરવા ભવમાં આવ્યો, શું કરે અનીતિ;
સંતાડે શું સાક્ષી થકી, રાખ ભય ભીતિ. ગા. ૨
વિવિધ દુઃખ જન્મ મર્ણ, કોણ શકે જીતી?
સમજ તો શી બાકી, ત્હારે માથે બહુ વીતી. ગા. ૩
ઉપાય હાથ આજ છે, તું શીદ જાય ચૂકી?
સ્મરણ કરી શ્રીપતિનું, મમતા દેને મૂકી. ગા. ૪
દેવ દયાળ કૃષ્ણ કૃપાળ, તે વિષે કર રૂચી;
દુઃખ જાશે, સુખ થાશે, એ ખરી છે કુંચી. ગા. ૫
સમજ્યા સંત, આવ્યો અંત, વાસનાઓ તૂટી,
મને ભજે તે મ્હારો, એમ બોલીઆ શ્રીપતિ. ગા. ૬
જસ કહે જોયું જેમાં તેમાં સ્નેહથી સધ સિદ્ધિ;
ક્ષીરના વાસી દૂધના પ્રાશી, માગ્યાં દધિજ[1] દધિ. ગા. ૭

---

૧ દધિજ—દહીંમાંથી ઉત્પન્ન થએલું માખણ.

૧૧.

જગજંજાળ.

जन्मैव व्यर्थतां नीतं भवभोगप्रलोभिना ।
काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिंतामणि र्मया ॥

(સુભાષિત.)

("નાથ કૈસે ગજકો બંધ છુડાયો":—એ લય.)

જંજાળી જૂઠામાં જન્મ ગુમાવ્યો,
અમથો અથડાવા શીદ આવ્યો, જૂઠામાં જન્મ ગુમાવ્યો.

અધિકારવિણ તને અધિક આપ્યું,
માની 'મ્હારૂં' મલકાયો;
ગુણ ભૂલ્યો તું ગિરિધારી કેરા,
ગોવિન્દને નવ ગાયો. જૂઠામાં ૧

ઇંદ્રિય અવયવ તને સારાં આપ્યાં,
ખોડ ખાંપણ થકી ખાળ્યો;
પાડ પ્રભુનો કાંઇ નવ માન્યો,
ઉલટો એનાથી ચાલ્યો. જૂઠામાં. ૨

સારૂં શરીર ત્યારે સુખને ધાયો,
લાલચમાંહી લપટાયો;
કર્યા ઉપકારજ ભુલ્યો કૃતઘ્ની,
ધ્યાન ધરી નવ ધ્યાયો. જૂઠામાં ૩

આવું કર્યું ત્હેં ભજન ભૂધરનું,
  મ્હોટાઈ લઈ મોહવાયો;
સંકટનો સાથી સામળીયો,
  તેને ભજવાનો ભાવ ન આવ્યો. જૂઠામાં. ૪

કર સ્મરણ કંઈ શ્રેય ઈચ્છ ત્હારૂં,
  સકામી નથી શામળીયો;
તાંદુલ જેવી તુચ્છ વસ્તુમાં,
  શ્રીમંત સુદામો કરીયો. જૂઠામાં. ૫

સકામીયે પણ સમર્યા મુરારિ,
  તો તાપ તુરત તેનો હરીઓ;
ગજરાયે જો ગોવિન્દ સંભાર્યા,
  જસ મુકતજ ત્હેને કરીઓ, જૂઠામાં. ૬

૧૨.

જાગૃતિ.

गोविन्दं भज मूढमते ॥

(જગદ્ગુરૂ શ્રી શંકરાચાર્ય)

("ઉત્તમ આસો રે માસ":—એ લય.)

સ્મરણ કરોને હવે શ્યામનું, આયુષ્ય ઓછું રે થાય;
ભજવા જેવા ભગવંત છે, જેને દેવો રે ચાહ્ય. સ્મરણ. ૧

જન્મ આપ્યો છે યદુપતિ, સમજ સાર અસાર;
લાભ લેજે લાલચ તજી, કરો નામનો વહેપાર. સ્મરણ. ૨

દાન દયા દીનતા નથી, નથી તીવ્ર વૈરાગ્ય;
દીન જાણી દીનાનાથજી, હેતે ગ્રહ્યોછે હાથ. સ્મરણ. ૩

દુનીઆ છળી દંભ દાબથી, મન મેલુંરે અપાર;
જોનારો કંઇ જૂદો નથી, સાક્ષી સર્વે જોનાર. સ્મરણ. ૪

અહિંઆં આડું અવળું કરો, નથી ડરતાં લગાર;
જમપાસે જબરાઈ નહિ નભે, ખાશો મેચકીના માર. સ્મરણ. ૫

સેવા કરેથી મેવા મળે, એવો અંતર વિચાર,
રમાપતિ કેમ રીઝશે, શો એ સેવામાં સાર. સ્મરણ. ૬

મહાન્ પાસે શું માગવું, નમવુંજ વારંવાર;
સંભારતાં સુખ ઉપજે, ટળે[1] તન મનના તાપ. સ્મરણ. ૭

સંસાર સ્વરૂપમાં છે નહિ, નથી દોરીમાં સાપ;
તત્વ સમજીને તર્ક ટાળજો, સિક્કો વેદાંતનો ખાસ. સ્મરણ. ૮

જસ કહે, જગજીવન જન ભજો, લાભ અપરંપાર;
તોટો નથી ત્રિલોકમાં, પ્રસન્ન ગુરૂ ગોપાળ. સ્મરણ. ૯



---

૧ यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामाएप हृदि स्थिता।
..................तत्र ब्रह्म समश्नुते॥

૧૩.

મનને શિક્ષા.

न हि प्रतीक्षते कालः कृतमस्य न वा कृतम् ॥

(સુભાષિત.)

(" રામ બાણ વાગેલ હોય, તે જાણે ":—એ લય.)

મનુષ્ય દેહ મર્મ સમજવો ટાણે, પછી કાલ દીઠી છે કોણે ?
વાસુદેવ રહ્યો વ્યાપી સર્વમાં, કેમ તેને તું નવ જાણે. મનુષ્ય.

કુથલી કરતાં કાળ ગુમાવ્યો, દેહની જૂઠપ ન જાણે;
ભરી થાળીએ ભૂખ્યો તું ઉઠયો, ઠરીશ તું કયે ઠેકાણે. મનુષ્ય. ૧

કંઇ નવ જાણે તો કૃષ્ણનું કીર્તન, મમત મૂકી તું કરજે;
અરજ સુણીને આદર ત્હારો કરશે, પ્રેમે પછી તું મળજે. મ. ૨

પર ઉપકારી પૂરા પ્રભુ છે, ચતુર્મુખે ચો દિશે જૂવે;
વિષયથી વવાયાં[1] વસ્તુને ન દેખે, દુઃખ દારિદ્રે રૂવે. મનુષ્ય. ૩

દીનતા રાખી તું નિરખ નારાયણ, કૃપાસિન્ધુ એતો કહીએ;
સ્મરણ માત્રથી સાચું બતાવે, નિરખી નિરાળા રહીએ. મનુષ્ય. ૪

ચાર દહાડાનું આ છે ચાંદરણું, સમજી સનાતન સહીએ;
કાળ કળિમાં કષ્ટ છે થોડું, જસ કહે યદુપતિ ગાઈએ. મનુષ્ય. ૫

---

૧ છેતરાયાં.

૧૪.

ઈશ્વરનું અધિષ્ઠાનરૂપે દર્શન.

किं हेयंकिमुपाधेयं किमन्यर्त्किं विलक्षणम् ।
अखण्डानन्दपियूषपूर्णे ब्रह्ममहार्णवे ॥

(શ્રી વિવેક ચૂડામણિ.)

("સંદેશો કહેજોરે મોહનને એટલો":—એ લય.)

વાસુદેવ વિચારો વેગે કરી, જેનાં નામે કોટિ કિલ્મિશ જાય જો;
શ્યામ સનાતન સચરાચર શોભી રહ્યો,
જળ સ્થળ ખળમાં યુક્તિ વડે જણાય જો. વાસુદેવ. ૧

મન મ્હારૂં માપ આપનું શું કરે,
શ્રુતિ સ્મૃતિયો સાન કરી રહી શાન્ત જો;
નિર્મળ નિરખી તત્વરૂપ નિશ્ચે કર્યું,
પણ વાણિના વિવિધ પ્રકારે વાદ જો.[1] વાસુદેવ. ૨

મહાપદનું[2] મહાનપણું શું માપીએ,
સ્થાયી સ્થિર તે થયું નથી નહિ થાય જો;
શિવ શક્તિ વળી સકળ દેવ શોધી રહ્યા,
બ્રહ્મા નારદ ભજતા ભાવે જેહ જો. વાસુદેવ. ૩

---

૧ અધિષ્ટાન એ ચાર વાણી (પરા, પશ્યંતિ, મધ્યમા ને વૈખરી) થી પર છે.
वाचारंभण विकारो नामधेयम् मृत्तिकेत्येवसत्यम् ॥ ઉપનિષદ્.

૨ यो वै भूमातत्सुखम् ॥ ઉપનિષદ્.

પંચાયતને પરમપદનું પ્રમાણ છે,
પૂરણ પ્રીતે પૂરણ તેજ પમાય જો;
પરબ્રહ્મને પરાપાર તું પેખજે,
મૂકી દેજે મનના ઘડીયા ઘાટ જો. વાસુદેવ. ૪

ગાવું ને થાવું જાવું થઈ રહે,
પૂરણ જ્યોતિ પ્રગટયે તમનો નાશ જો;
આ[3] સર્વ આનન્દ છે અવિનાશનો,
સચ્ચિદ્રૂપે સર્વોત્તમ જણાય જો. વાસુદેવ. ૫

ઝીણામાં[4] જગજીવન સૂક્ષ્મ જણાઇ રહ્યા;
મહાતત્વમાં મહાનપણે મહારાજ જો;
સત્તાને વળી સ્ફુરતી તેની જાણજે,
નામરૂપને ભેદી થાજે ન્યાલ જો. વાસુદેવ. ૬

આડીને વળી અવળી આંટી કાઢજે,
સમજી લ્યો જસ સચ્ચિત્ પ્રિય સ્વરૂપ જો;
તું મ્હારૂંજ તપાસી તૃપ્તિ પામજે,
અન્ય સ્થળે અથડાયે થાશે હાણજો. વાસુદેવ. ૭

---

૩ यदानन्दलेशैस्समानन्दि विश्वम् ॥

૪ अणोरणियां महतो महीयान् ॥ आत्मास्य जन्तोः निहितो गुहायाम् ॥ ઉપનિષદ્.

૧૫.

વૈરાગ્ય બોધ.

रे चित्त, चिंतय चिरं चरणौ मुरारे।
पारं गमिष्यसि यतो भवसागरस्य ॥
पुत्राः कलत्र मित्रो नहि ते सहायाः
सर्वं विलोकय सखे मृगतृष्णिकेऽयम् ॥

(સુભાષિત.)

દેશની ચાલ.

વિચારો મન આછે ખોટું[1] અતીરે; અંતે કાંઇ રહેવું નથીરે.

ઝાંઝવાં જળ સમ જાણજે, દોડયેથી દુઃખ હોય;
વારી ત્યાં તો છે નહીં, મિથ્યા મહેનત સોય;
ત્યાં તૃષા કોઇની છીપી નથીરે. વિચારો. ૧

ઇંદ્રજાળ તું જાણજે, માયા મ્હોટાઇ જે;
મમતથી મોહીશ નહીં, છે છેતરનારી એ;
સુત વિત ઘર સહુ એ રીતે જાણજે રે. વિચારો. ૨

સાચા ઉપર શોભતો પણ ખોટો છે ખેલ;
ગુરૂ ગોવિન્દ કૃપા કરે, તો સમજાશે સ્હેલ;
તેં માન્યું તે ભૂળગું નથી રે, વિચારો. ૩

સદાય સત્ જેમ તેમ રહ્યું, થયું ગયું નહીં થાય;
વચમાં[2] મન મંડાણથી, જીવ જગત કલ્પાય;

---

1 मायामात्रमिदं द्वैतम् ॥ (જગદ્ગુરૂ શ્રી શંકરાચાર્ય.)

2 मनो आद्यं मनोमध्यं मनः संकल्पना जगत्। (યોગવાશિષ્ઠ.)

તપાસ તું તો આદ્ય અંત ઘટતું નથી રે. વિચારો.

પૂર્ણ એક પરબ્રહ્મ છે, સત્ ચિત્ આનંદ સાર;
આદિઅંતમાં જે રહ્યું, તે મધ્યે નિરધાર;
બાધશેષ[3] તત્વ રહ્યું રે. વિચારો. ૫

નામ તેનો નાશ છે, જે જાયું તે જાય;
પણ પ્રતાપી જે થયા, ધન્ય જન્મ્યા ભુમાંહ્ય;
શિબિ અમરીષાદિ ગયા રે. વિચારો. ૬

ત્યાગી ગયા રાગી ગયા, ગયા પ્રતાપી પાંચ;
બ્રહ્મચારી ભીષ્મે ગયા, હરિશ્ચંદ્ર સમ સાચ;
મહા શુરવીર દિસતા નથી રે. વિચારો. ૭

જવાનું જરૂર છે, માટે સમરો શ્યામ;
કર્મ અતિ ઉત્તમ કરો, ઠરી બેસવું ઠામ;
પછી અથડાવું અહીંયાં નથી રે. વિચારો. ૮

મુસાફરી મહા અટપટી, સમજે તેને સુખ;
રામ ભજીલે રીતથી, લાગે નહીં કંઇ દુઃખ;
મોહે પડયાં ભવકૂપમાં રે. વિચારો. ૯

સંત જતા થતા નથી, રહ્યા પ્રપંચની પાર;
આત્મારામી અમર છે, કરવો સત્સંગ સાર;
જસ જીવનમુક્તા ઠામઠામ હોતા નથી રે. વિચારો. ૧૦

---

૩ अहमात्मा गुडाकेश सर्व भूताशय: स्थित: ।
अहमादिश्च मध्यंच भूतानामंत एव च ॥ (શ્રી. ભ. ગીતા.)

१६.

ભાવિનું બળ.

अवश्यं भावि भावनां प्रतिकारो भवेद्यदि ।
तदा दुःखैर्न लिप्येरन् नलराम युधिष्ठिराः ॥

(" સત્સંગનો રસ ચાખ ":—એ લય.)

ભાવિ હોય તે થાય ભમો શું તમે ભાવિ હોય તે થાય.

પાંડવ પ્રતાપી મહા કષ્ટ પામ્યા, પ્રમાણિક કહેવાય;
કષ્ટ સહ્યાં પણ કાંઈએ ન ચાલ્યું, સ્હાય હતા વ્રજરાય. ભમો શું.

પ્રલ્હાદ પીડયો અજર થઇ હીંડયો, હિરણ્યકશિપુ રાય;
દાસ ઉગાર્યો દુષ્ટને માર્યો, જયજય શ્રી નરસિંહરાય. ભમો શું.

મીરાંબાઇને મારવા માટે, રાણે રચ્યા ઉપાય;
ઝેરનું અમૃત કર્યું જદુપતિ, લીધી ઉગારી મીરાં માય. ભમો શું.

હાસ્ય નિમિત્તે શ્રાપ અપાવ્યો, યદુકુળ યાદવરાય;
ભાવિ જોયું સામર્થ્ય ખોયું, મૌન રહ્યા કૃષ્ણરાય. ભમો શું.

અમૃત પીવા મંથન માંડયું, દેવ દૈત્યો સુરરાય;
વારિમાંથી વિષ પ્રગટીયું, એ ઇશ તણી ઇચ્છાય. ભમો શું.

ચંદ્રહાસને મારવા માટે, ઘણા કર્યા ઉપાય;
[1]વિષની વિષયા કરી મ્હારે વ્હાલે, મૌત ત્યાં મંગળ થાય. ભમો શું.

---

१ अरिर्मित्रं विषं पथ्यं अधर्मो धर्मतां व्रजेत् ।
त्वयि तुष्टे जगन्नाथ विपरीते विपर्ययः ॥

દેવીદેવળમાં મારવા ધાર્યો, દુષ્ટબુદ્ધિ એ રાય;
મદન મુઓ ભાવિને જુઓ, ખેલ રચ્યો જગરાય. ભમો શું.
ભાવિ જાણો ધીરજ આણો, મટે ન કોટિ ઉપાય;
આવે તે સહેવું કાંઇ ન કહેવું, એજ ખરો ઉપાય. ભમો શું.
જસ કહે જાગો, સમરણ માગો, ભજવા શ્રી વૈકુંઠરાય;
વિધાતાએ અક્ષર પાડયો, ભાવિ નહીં ભૂંસાય. ભમો શું.

૧૭.

દુઃખદોષાનુદર્શન.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्यच ।
तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

(શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા.)

ગરબી.

(હરિભજન વિના દુઃખદરિઆ સંસારનો પાર ન આવેઃ—એ લય.)

શું જતન કરૂં જનમ્યું તે જાશે રે, પળમાંહે પડી;
ઉપન્યું તે અળસાસે, રાખ્યું નહિ રહે તે તો અરધી ઘડી.
શું જતન. ૧

જ્યાં ગતિ નહીં ત્યાં કૃતિ કોની, મન ખટપટ તું કરે શેની?
તું ધણી થયો આ દેહ માની. શું જતન. ૨

તારી બાળ અવસ્થા હતી જ્યારે, સંભાળ્યો કોણે તેવારે?
જે જીવન આપે તે મારે. શું જતન. ૩

તને ભાન નહોતું આ સ્થૂળતણું, તે વખત જતન કર્યું તું ઘણું;
તે રક્ષણ કરશે ક્ષણ ક્ષણ. શું જતન.
એમ સમજે તો ચિન્તા શેની, નહિ દેહ તું તો ફિકર કોની;
મિથ્યા જાણી, મૂંગો રહેની. શું જતન.
એમ સમજ્યું બહુ ખપમાં આવે, સમજ્યાથી આ જગમાં ફાવે;
મન છટકે તો મહાદુઃખ આવે. શું જતન.
ત્રિકમ મનને તાણી રાખો, બહુ બળીઆ છો ને કેમ સાંખો;
મહા સમર્થ છો મારી નાંખો. શું જતન. ૭
કોટિક યોદ્ધાઓ સંહાર્યા, શું શું કહું માર્યા તાર્યા;
શું આ સમય જાણી હાર્યા. શું જતન, ૮
છુંપ્યા કેમ રહોછો છત ધણી, મારો મનને સુરમુગટમણી;
જસ અરજ કરે શું નાથ ધણી. શું જતન. ૯

૧૮.

સંસારને વિષે દોષદૃષ્ટિ.

असारः खलु संसारो दुःखरूपि विमोहकः।

(શ્રી પદ્મપુરાણ.)

(ધીરાનાં પદનો રાગ.)

સુખ નહીં સંસારમાં રે શાણા જન સમજે સહી;
સુખ સાચું માનો રે શાન્તિ કોઈ પામ્યા નહીં.
પતિ થકી જો સુખજ હોય તો, મીરાં કેમ રે દુભાય;

પતિએ સતીને પાચું હળાહળ, કહો પતિ થકી કેમ થાય;
સ્વારથ નિજ સાધેરે પતિ પ્રીતિ તૂટી ગઇ. સુખ૦ ૧

પુત્ર થકી જો સુખજ હોય, સગર પુત્ર સાઠ હજાર;
સંખ્યા ઘણી મ્હોટીરે, સુતથી ન શાન્તિ થઇ રે. સુખ૦ ૨

રાજયાસનમાં જો સુખજ હોય તો, નહુષ મન હરખાય;
રાજમદે પ્રીતિ પરત્રિયાશું, અજગર થયો તે રાય;
શાપ્યો મુની સર્વેરે, પ્રાણી થયો પદવી ગઇ. સુખ૦ ૩

વાસવ તે જુઓ વસીઆ, સ્વર્ગમાં સુરતણા સરદાર;
તેને પ્રગટ્યું દુઃખ જે વારે માથે બળીનો માર,
ભયે હૃદય ભેદ્યું રે જનેતા પાસે રોયા જઇ. સુખ૦ ૪

બળિયાને જો સુખજ હોય તો, જુઓને રાવણ રાય;
દશ મસ્તક દશ દિશા ધ્રુજાવે ભુજા વીશરે કહેવાય,
રામે રોળ્યો રણમાંરે, બળ શક્તિ ક્યાંરે ગઇ. સુખ૦ ૫

માન્યું રે સુખ જુઓ ભજનમાં નારદ હેતે હરિગુણ ગાય;
એવો રે લક્ષ પ્રાણી લાગે તો સારો તેનું જીવ્યું સફળ કહેવાય,
સુખ સાચું તેનું રે જે જઠરામાં ઝુરે નહિ. સુખ૦ ૬

દેહ આવ્યો તેનું કર્તવ્ય એ છે કરવું ભજન કિરતાર;
ખોટામાં શું ખુપી જાવું, ઉતરવું ભવ પાર;
જગદીશ જસ ગાવારે જગ ભણી જોવું નહીં. સુખ૦ ૭

૧૯.

કર્મ વિચાર.

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥

વલણ.

નિજ સ્વરૂપ જીવ સમજ્યો નહીં, કુકુર્મજ[1] કાંટા રૂચે;
વિહિત અવિહિત વિચારજે, પછીથી કાંટા ખુંચે. ૧

કર્મ થકી આ દેહ છે, કર્મે જીવ કષ્ટે પડયો;
કર્મ મર્મ સમજ્યો નહીં, ભોકતા થઇ ભવ બહુ ફર્યો. ૨

કામ કણુસ જેમ વાવીયે, તેમ તેમ અઠકું થાય;
હુંસતણો ચારો નહીં, એ ભલે પશુઓ ખાય. ૩

ખાઇને બહુ ખોંખારતાં, પેટ ચડયેથી પડતાં;
કરે શું જ્ઞાન એને નથી, ભલે બિચારાં ચરતાં. ૪

અનાજ ઉત્તમ વાવીયે, દુકાળ દુઃખડાં જાય;
ખડની તો શી ખોટ છે, ભલે બિચારાં ખાય. ૫

ચતુરાઇથી જો વાવશો, અમુક કાળે ફળશે;
વિચારી તમે વાવજો, સુખ દુઃખ તેવું મળશે. ૬

સુખદુઃખ સ્હેજે આવશે, શ્રમ ત્હારે કરવો નહીં;
સ્મરણ કરો શ્રીરામનું ણી વાણ્યું ઉગશે સહી. ૭

---

૧ કુકર્મમાંથી ઉત્પન્ન થએલા.

શાણા જન ચારો કરે, ઉત્તમ લાગે જેહ;
પાચન થઇ આવે પ્રૌઢતા, દુર્બળ ન રહે દેહ. ૮

રામ ભજો વિષય તજો,[1] કૃત્ય કામમાં અતિ ઘણી;
નિમિષ નવરાં નહીં રહો, ખોશો દેહ મોંઘો મણિ.[2] ૯

વિષય સદા સન્મુખ થશે, વૃત્તિ પાછી વાળજો;
ત્યાગતીર સાથે લઇ, ખરા વેરીને ખાળજો. ૧૦

પુરવિષે જો પેસશે, ખરો ખજાનો લુંટશે;
સદ્ગુણ મંત્રિ સર્વ જે તેની સત્તા તૂટશે. ૧૧

સોઢો સદ્ગુણ સર્વ લઈ, મોડો એનું માન;
તોડો એનાં મૂળને, ભલું થશે પછી ભાન. ૧૨

જગમાંહી જન આવીને, કરજે એકજ કામ;
તૃષ્ણા સર્વે ત્યાગજે, રાજી કરવા રામ. ૧૩

સ્વર્ગે સઘળુ સુખ નહીં, વિચારી વૃત્તિ વાળ્ય;
સુખ બતાવું શક્રનાં, મોહ ને મમતા ટાળ્ય. ૧૪

સ્વર્ગતણી લક્ષ્મી સકળ, દેવતણું સ્વામિત્વ;
તપસ્વિ તપ અતિ જવ કરે, થાય તદા ભયભીત. ૧૫

ઇન્દ્રાણી ઘર આગળે, ઉર્વશી રૂપ અપાર;
અહલ્યાની આરત ધરી, સુરેન્દ્ર થયા મંજાર. ૧૬

ઐરાવત હસ્તિ સમું, વાહન વડું વિશેષ;
કલ્પવૃક્ષ સન્મુખ સદા, યાચવું નહીં લવલેશ. ૧૭

---

૧ विषयान्विषवत्त्यज ॥ —અષ્ટાવક્ર ગીતા.

૨ સંસારવ્યવહારમાંથી નવરાં પડાતું નથી, માટે પ્રયત્ન વડે ભજન, શ્રવણ, મનન ઇત્યાદિ સારૂ વખત મેળવવાની આવશ્યક્તા અહીં બતાવેલી છે.

સુખ નથી ભાઇ સ્વર્ગમાં, ત્યાં પણ દુઃખની દૃષ્ટ;
સુખ નિત્ય જો સ્વર્ગમાં, શક્ર ન પામે કષ્ટ. ૧૮

દૈત્ય દેવ જ્યારે વઢે, સુર ઉર દુઃખ અપાર;[1]
તૃષ્ણા ત્યજજે સ્વર્ગની, જીવ મનડાને વાર. ૧૯

વૈકુન્ઠને વળગીશ નહીં, મિથ્યા મમતા તોડ;
સુખ સ્વરૂપ છે તાહેરૂં, જલ્દી મનને જોડ. ૨૦

સુખ સહાયે નથી આવતું, દુખ કહાડે નવ જાય;
સ્મરણ કરીએ શ્યામનું, થનાર હોય તે થાય. ૨૧

મિથ્યા સમય ન કાઢીએ, કાળ ફાળ વિશાળ;
જસ ભજો જગદીશને, જીતવી જગ જંજાળ. ૨૨

૨૦

ઈશ્વરકૃપાનો પ્રભાવ.

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ॥

(શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા.)

ભુજંગી છંદની ચાલ.

કૃપાળુ કૃપાનાથને પાય લાગું,
વરં બ્રુહિ કહે, માધવા ભક્તિ માગું;
કૃપાએજ ધાર્યો ગિરિ ગિરધારી,
કૃપાએજ વાસવ વૃષ્ટિ નિવારી. ૧

---

૧ नचेंद्रस्य सुखं किंचिन्नसुखं चक्रवर्तिनः ।
सुखमस्ति विरक्तस्य मुनेरेकान्तजीविनः ॥

કૃપાએ યમુનાનું નિર્વિષ વારિ,
કૃપાએ નરો દેખતાં નાર તારી;
કૃપાએજ દાવાગ્નિની ઝાળ પીધી,
કૃપાએજ ધેનુને ઉગારી લીધી. ૨

કૃપાએજ આહિરનું અન્ન લીધું,
કૃપાએજ ગોપીતણું કાજ સીધ્યું;
કૃપાએજ આહિરની છાશ પીધી,
કૃપાએજ ભીમકસુતા વ્હાર કીધી. ૩

કૃપાએજ વામનતણો વેશ લીધો,
કૃપાએજ બળિને કૃતાર્થ કીધો;
કૃપાએજ વિદુરનું કામ સીધ્યું,
કૃપાએજ ભાજીનું પ્રાશન કીધું. ૪

કૃપાએ ગુરૂપત્નિનું કામ કીધું,
કૃપાએ વિભીષણને રાજ દીધું;
કૃપાએજ પ્રલ્હાદને માન દીધું,
કૃપાએજ નૃસિંહનું રૂપ લીધું. ૫

કૃપાએ ત્રિપુરારિ રક્ષણ કીધું,
કૃપાએ ઉમિયાતણું રૂપ લીધું;
કૃપાએજ મીરાંતણું ઝેર પીધું,
કૃપાએજ મોસાળું મોરારે કીધું. ૬

કૃપાએજ કુબ્જાને સુરૂપ દીધું,
કૃપાએજ ઓદ્ધવને જ્ઞાન દીધું;

કૃપાએજ સુરોએ અમૃત પીધું,
કૃપાએજ રમાતણું રૂપ લીધું. ૭

કૃપાએજ સુગ્રીવને રાજ આપ્યું,
કૃપાએજ ધ્રુતું ધ્રુવસ્થાન સ્થાપ્યું;
કૃપાએજ માબાપ આહિર કીધાં,
કૃપાએજ ગોપાંગના વસ્ત્ર દીધાં. ૮

કૃપાએજ આહિરનાં દૂધ પીધાં,
કૃપાએજ દ્રુપદસુતા વસ્ત્ર દીધાં;
કૃપા એજ જે કૂર્મનું રૂપ લીધું,
કૃપા એજ જે સુરનું કાર્ય કીધું. ૯

કૃપાએ સુધન્વા તણી સાર લીધી,
કૃપાએ કઢા તેલ શિતળ કીધી;
કૃપાએજ મીરાંપરે મ્હેર આણી,
કૃપાએજ મહેતાતણી ભીડ જાણી. ૧૦

કૃપાએજ બોડાણાનું બિર્દ રાખ્યું,
કૃપાએજ ડાકોર વૈકુંઠ વાસ્યું;
કૃપાએજ બ્રહ્માપતિ જ્ઞાન ભાખ્યું,
કૃપાએજ વાસવનું રાજ્ય રાખ્યું. ૧૧

કૃપાએ ગજરાજના બંધ તોડ્યા,
કૃપાએ જરાસંધથી રાય છોડ્યા;
કૃપાએ સુદામા તણી સાર લીધી,
કૃપાએજ ગાંગેવને મુક્તિ દીધી. ૧૨

કૃપાએ કુબેરાત્મજો મુક્તિ પામ્યા,
કૃપાએ વસુદેવનાં દુઃખ વામ્યાં;
હરિનામથી સર્વ કિલ્મિષ જાયે,
કૃપાએ કરી જનને છે સહાયે. ૧૩

૨૧.

કૃપા યાચના.

भूमौस्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं विभो ॥

ધીરાનાં પદનો રાગ.

ભવના તારણ રે ! ભવમાં ન દ્યો મૂકી,
દીનના દયાળુ રે ! સમય કેમ જાઓ ચૂકી. ભવના.
આપમાયામાં અનંત અથડાયા, નિમિષ પણ નિરખો રે !
બંધન જાય છૂટી. ભવના. ૧
મરેલાને મરવું શાનું, પડયાંને શું પડવું રે !
સ્મરણ દઈ કરોને સુખી. ભવના. ૨
મ્હોટું તેને છોટું ન છાજે, અન્ય ન યાચું રે,
ભક્તિની છું ભૂખી. ભવના. ૩
જનનું જીવન પદાર્થપ્રીતિ, મોહમાં મરાયા રે !
ધાંધળમાં રહ્યા ડુંકી. ભવના. ૪

શ્યામકૃપા વિણ સવળું ન સૂઝે, એ કૃપા જેને કીધી રે,
તેને હોય સ્મરણ રૂચી. ભવના. ૫

વ્યંવહાર ભકતનો ભાગ્યો મનથી, વ્હાલાનો વસીલો રે!
રખે જાય તૂટી. ભવના. ૬

જીવવું સફળ તનમન ખોવું, સ્વરૂપ નિજ જોવું રે,
મમતા મોહ મૂકી. ભવના. ૭

જીવને જોવો સંશય ખોવો, કૃપામાં શું કાચું રે!
ચતુર પણ જાય ચૂકી. ભવના. ૮

તુજ કૃપાએ કરવું તરવું, પંડિતાઇ પાડે રે!
મહામાયા ન જાય મૂકી. ભવના. ૯

આશા અમોને વડી રે તમારી, બિરદને છે બટ્ટો રે!
સંબંધ જો જાય છૂટી. ભવના. ૧૦

તનનું ફળ જયાં ભકિત ત્હારી, બાકી જૂઠી જુકિત રે!
સમજુ ન જાય ચૂકી. ભવના. ૧૧

જગનું જીવન વિદ્યુત્ ચમકાર, વર્ષાકાળે વેગમાં રે!
ઝબકી ચમકી રહે ન ઉભી.[1] ભવના. ૧૨

વાર ન લાગે વિખાઈ જાશે, જસ સ્મરણ સાથે રે!
બાકી સઉ જાય મૂકી. ભવના. ૧૩

---

૧ विद्युच्चलं जीवितं

૨૨.

વાસના ત્યાગ.

जले स्थले योऽपि च शैलमस्तके ।
सदैव पुष्णाति जगच्चराचरम् ॥
स मे न किं दास्यति विश्वपालको ।
अश्नन्किमर्थं तु गतो ऽस्मि दीनताम् ॥

(વિચારદીપક.)

ભુજંગી છંદની ચાલ.

કરો કૃષ્ણની ભક્તિ હી કર જોડી,
નમો વિશ્વના નાથને માન મોડી.
તનુ આપીયું દુઃખમાં શું ગુમાવો ?
અરે ! અંતરે કૈંક વિવેક લાવો. ૧

સુરાદિ મુનિ માનવો શીષ નામે,
નહિ પાર જેનો કદી વેદ પામે;
બહુ શાસ્ત્રકારે વળી શીખ દીધી,
જશે દેહ તો ના મળે વાર બીજી. ૨

ભજો નાથ ને કામને દામ મૂકી.
અરે ! ચાકરી જાઓછો શીદ ચુકી ?
વડો શ્રમ વેઠો વ્યવહાર કરતાં,
અરે કામ શું આવશે અંત મરતાં. ૩

ઘડી એકમાં શ્વાસ રૂંધાઈ જાશે,
વડા કષ્ટમાં કોણ ત્યાં વ્હારે ધાશે ?
મહાસિન્ધુની માંહિ ઝંપાઇ જાશો,
નહિ પાર પામો વળી દુઃખી થાશો. ૪

ચતુરાઇમાં ચૂક આવે છે મ્હોટી;
ભજ્યા ના અરે ! નાથને થાઓ ખોટી.
પડો પ્રેમના પૂરમાં કૃષ્ણ કહીને,
તરો ત્રિગુણાતીતનું તુંબ લઇને. ૫

કરી પ્રેમભક્તિ તર્યાં ભક્ત કોટિ,
હરિભક્તિની મહત્તા બહુજ મ્હોટી.
દીનાનાથનાં દિવ્ય કૃત્યો નિહાળો,
પાસે વાસ છે મનને માંહિ વાળો. ૬

મહાકૂટયમાં વસ્તુ ખોવાઈ જાશે,
પછી ખોળતાં તો ઘણો ખેદ થાશે.
વિચારી પડો વાસના વાવ ઉંડી,
શીખો કાંઇ તારૂતણી રીત રૂડી. ૭

કદી દેહ આ સ્વર્ગનું સુખ પામે,
ધરી વાસનાને કહો કયાં વિરામે ?
કંઇ રાગી વૈરાગીઓ રાન ફરતા,
વડી વાસનાથી બહુ દુઃખ ધરતા. ૮

વરી વાસનાને કંઈ ભાવી ભટકયા,
કરી યોગ યોગિ વડા સિદ્ધ અટકયા.

ઘણા યજ્ઞ તીર્થો કરી દાન દેતા,
ધરી વાસના લોકની લુબ્ધ રહેતા. ૯

અરે ! વાસનાથી થશે દુઃખ મ્હોટું,
ભલે હો પ્રતાપી, છતાં થાય છોટું.
કરી કામના જીવ કોટ્યાનકોટી,
ગયા કંઇક કાળો થયો ખૂબ ખોટી. ૧૦

કહે કામના વિણ શું કાર્ય થાયે,
વેરાયો કણ કીડીને મુખ જાયે.
કહો, ગર્ભમાં કોણે રક્ષણ કીધું,
વળી જન્મ થાતાં પયઃપાન દીધું ? ૧૧

અજાણ્યે પડયો કૂપમાં કો તથાપિ,
વટેમારગુએ તેને સ્હાય આપી;
હરિ આપણા ઉરનું સર્વ જાણે,
ભીડો ભાગીને ભક્તનો પક્ષ તાણે. ૧૨

વધુ વાસના વેગથી ખુબ ચાલે,
મળ્યું રાજમંદીર ત્યાં બહુજ મ્હાલે.
હવે કામનાને કંઈ શીખ આપો,
રઘુનાથનું રૂપ હૃદયે રાખો. ૧૩
કરો વાસના વિશ્વના નાથ કેરી,
મટે જન્મ ને મૃત્યુની મહાન ફેરી.
સહુ વાસના વિશ્વના નાથ તોડો,
જસ વાસનાને તમો સાથ જોડો. ૧૪

૨૩.

શાસ્ત્રની ઉત્તમતા.

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ।

(સુભાષિત.)

હરિગીત છંદની ચાલ.

શાસ્ત્રથી સુખ થાય છે, વળી શાસ્ત્રથી દુઃખ જાય છે;
આધાર શાસ્ત્રો સુખનો ધીમંત ત્હેને ધાય છે. ૧
શાસ્ત્રથી નિવૃત્તિ ને પ્રવૃત્તિ સુવિધ પળાય છે,
કિંચિત્ પ્રવૃત્તિ શાસ્ત્રની દિનદિન વૃદ્ધિ થાય છે. ૨
શાસ્ત્રથી વિદ્વાન સર્વે શાસ્ત્રથી ગુણવાન છે;
સન્માર્ગવૃત્તિ શાસ્ત્રથીજ અભાનનું એ ભાન છે. ૩
વળી બોધ થાયે ભૂલ જાયે શાસ્ત્ર સહુની જાણ છે;
[1]ભવ બૂડતાં બચાવવા વિવેકનું એ વહાણ છે. ૪
શાસ્ત્રથી સુકૃતિ રીતિ ને શાસ્ત્રથી સૌ જ્ઞાન છે;
આસ્તિકનેજ અલભ્ય વસ્તુ પામવાનું સ્થાન છે. ૫
વ્યવહાર ને મર્યાદ સર્વે શાસ્ત્રથીજ જણાય છે;
પૂર્ણ રીતે પેખતાં તો જડપણું ઝટ જાય છે. ૬
વિદ્યાની વૃદ્ધિ ગૃહની શુદ્ધિ મંત્રનું મંડાણ છે;
સત્શાસ્ત્રને શોધ્યા વિના કહો મુક્તિનું ક્યાં સ્થાન છે. ૭

---

૧ शास्त्राणि यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति ये नराः ।
मतयोर्यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानराः ॥

(શ્રીમત કૃષ્ણાનંદ સરસ્વતી.)

સત્શાસ્ત્ર મુક્તિ ભક્તિ વિદ્યા ને વિનયની ખાણ છે;
પંડિત તે પંકાય છે જે શાસ્ત્રના સુજાણ છે. ૮
શ્રવણ શાસ્ત્રે મનન શાસ્ત્રે નિદધ્યાસન ત્યાં વળે;
સહજ પ્રવૃત્તિ શાસ્ત્રની પુરૂષાર્થ ચારે ત્યાં ફળે. ૯
ક્યાં વ્યાસ ક્યાં વસિષ્ઠ ક્યાં આચાર્ય શંકર જે કહ્યા;
મહા તત્વવેત્તા શ્રોત્રિયો આ લોકમાં ગવાઇ રહ્યા. ૧૦
[1]આ સૃષ્ટિનો ક્રમ મર્મ સર્વે, શાસ્ત્રથી જણાય છે;
આદિપુરૂષનું જ્ઞાન તે સત્શાસ્ત્રથીજ ગણાય છે. ૧૧
આખ્યાન ને વ્યાખ્યાન સર્વે શાસ્ત્રથી તો થાય છે;
તે સદ્ગુરૂથી શોધતાં પરમપદ પમાય છે. ૧૨
ધ્યાન ધર્મ ને યોગકર્મજ યજ્ઞ આદિ જે કહ્યાં;
ઉદય એનો શાસ્ત્રથી આ લોકમાં સેવાઇ રહ્યાં. ૧૩
જય શાસ્ત્રથી છે વિજય શાસ્ત્રે બુદ્ધિનું એ ધામ છે;
વિધિ અને નિષેધનો એ નિયમ સત્ય નિદાન છે. ૧૪
કામધેનુ, કલ્પતરૂ, અમૃત વળી અદ્રશ્ય છે;
સદ્વસ્તુનો વિચાર જે તે શાસ્ત્રમાંહી પ્રત્યક્ષ છે. ૧૫
શિરશાસનું એ વેદ છે, પુરાણ ઉર પ્રમાણજો;
સમજો સ્મૃતિ ને પાદકર, આદિપુરૂષ એ જાણજો. ૧૬
આગળ જુઓ જે આર્યજન તે શાસ્ત્રનેજ અનુસર્યા;
પ્રમાદ કીધો આપણે પુરૂષાર્થ ચારે વિસર્યા. ૧૭
માટે હવે પ્રમાદ મૂકી શાસ્ત્રને સંભારજો;
જસ સુખનું સાધન એ વિવેકથી વિચારજો. ૧૮

---

૧ परोक्षेप्यसंदिग्धो भवेच्छास्त्ररतोमुनिः ॥ (શ્રી મદ્ ભાગવત.)

૨૪.

જ્ઞાની સહજસ્વભાવ,

ज्ञानीत्वात्मैव मे मतः ।

(શ્રીમદ્ ભગવદ્‌ગીતા.)

છપ્પાની ચાલ.

જ્ઞાની તો જન તેહ ભક્તિ વશ વર્તે સદા;
જ્ઞાની તો જન તેહ વિષય ચિંત્વન નહિ કદા; ૧
જ્ઞાની તો જન તેહ કુથલી કંઈ ના કરતા,
જ્ઞાની તો જન તેહ સ્વરૂપ વિચારે રમતા; ૨
જ્ઞાની તો જન તેહ સદા આનંદમાં રહે છે;
જ્ઞાની તો જન તેહ સૌ જનને સુખ દે છે; ૩
જ્ઞાની તો જન તેહ ભોગ થકી નવ ભીંજયા;
જ્ઞાની તો જન તેહ રામ ભજનમાં રીઝયા; ૪
જ્ઞાની તો જન તેહ પરમારથ પગલાં માંડે;
જ્ઞાની તો જન તેહ પ્રપંચ, પરનિંદા છાંડે; ૫
જ્ઞાની તો જન તેહ સર્વમાં શ્રી હરિ દેખે;
જ્ઞાની તો જન તેહ અન્ય અવગુણ નહીં લેખે; ૬
જ્ઞાની તો જન તેહ વસ્તુ વહેંચી ખાચે;
જ્ઞાની તો જન તેહ અરપી રાજી થાચે; ૭

જ્ઞાની તો જન તેહ સુખ દુઃખ ધિરજે વહેતો;
જ્ઞાની તો જન તેહ મિથ્યા જાણી બે સેહેતો; ૮

જ્ઞાની તો જન તેહ સ્ફુરણુ નહીં જ્યાં નરતું,
જ્ઞાની તો જન તેહ મન સ્વરૂપમાં મળતું; ૯

જ્ઞાની તો જન તેહ ધર્મકર્મને જાણે;
જ્ઞાની તો જન તેહ વૈરાગ્ય ભોગમાં આણે; ૧૦

જ્ઞાની તો જન તેહ સૌનું રૂડું ચ્હાયે;
જ્ઞાની તો જન તેહ નામતીરથમાં ન્હાયે; ૧૧

જ્ઞાની તો જન તેહ પ્રપંચને ઝટ પરખે;
જ્ઞાની તો જન તેહ નિષ્કપટી નિરખી હરખે; ૧૨

જ્ઞાની તો જન તેહ વૃતિ વિષયથી વાળે;
જ્ઞાની તો જન તેહ દઇ શુદ્ધ બોધ સુધારે; ૧૩

જ્ઞાની તો જન તેહ નીતિ, નરમાશ, ન છોડે;
જ્ઞાની તો જન તેહ મોહ માનને મોડે; ૧૪

જ્ઞાની તો જન તેહ તુચ્છ વસ્તુને ત્યાગે;
જ્ઞાની તો જન તેહ ભક્તિ માધવની માગે; ૧૫

જ્ઞાની તો જન તેહ શબ્દને વળગે નહિ;
જ્ઞાની તો જન તેહ શબ્દ પાર પ્હોંચ્યો સહિ; ૧૬

જ્ઞાનીની ગતિ ગૂઢ છે, સમજીને વર્તે સહિ;
સર્વત્ર બ્રહ્મ અવલોકતાં જસ દોષ કહીં દેખે નહિ. ૧૭

૨૫.

દયાનિધિ પ્રતિ વિનતિ.

("રાતલડી કોની સંગે રે જાગ્યા":—એ લય.)

દયાળુ નામ દયાનિધિ કહાવો,
તેથી ભક્ત કરે તમપર દાવો. દયાળુ૦ ૧
આગે જુવો દયા ઘણાને કીધી;
કોડી સાટે મણિની બક્ષીસ કીધી,
સુદામાને તાંદુલ સાટે શ્રી દીધી. દયાળુ૦ ૨
દ્રુપદસુતાવસ્ત્ર જ્યાં દુષ્ટે લીધાં,
અરજ સુણી શીઘ્ર પ્રયાણજ કીધાં;
અબળાતણી આશ પુરી ચીર દીધાં. દયાળુ૦ ૩
ઋષીતણી રામાને કરૂણા કીધી,
અન્ન લઇને મુકતી અનુપમ દીધી;
સુધન્વાને કાજે કઢા શીળી કીધી. દયાળુ૦ ૪
શક માટે સ્વરૂપ સુંદર તમે લીધું;
વામન થયા બાળ વપુ તમે કીધું;
દુર્લભ દર્શન ધ્રુજીને દીધું. દયાળુ૦ ૫
પ્રલ્હાદનું દુઃખ પ્રભુજી જાણ્યું,
નટવર તમે નરસિંહનું રૂપ આણ્યું;
કુંવરબાઇનું પુર્યું મામેરૂં જક્તે જાણ્યું. દયાળુ૦ ૬
ભૂધરજી, ભક્તિ ભરવાડણની ભાવી,
મહેતાપર મહેર મોહનજી આવી;

સભામધ્યે, શામળીયા, માળ પહેરાવી. દયાળુ૦ ૭
પાવકથકી પશુ ઉગારી લીધાં,
ચિદાનંદ ! રૂપ ચતુર્ભુજ કીધાં;
દામોદરે દેવકીને દર્શન દીધાં. દયાળુ૦ ૮
પુરૂશોત્તમ પુષ્પ તુલશીપત્રે રાજી,
વિદુરને ઘેર આરોગ્યા ભાજી;
સંબંધ બેનો સરખો પાંડવ પક્ષ ઝાઝી. દયાળુ૦ ૯
દુર્વાસાયે અમરીશને દુઃખ દીધું,
ભગવત તમે ભક્તનું ઉપર કીધું;
કરી કસોટી ભકતને સુખ દીધું. દયાળુ૦ ૧૦
પોતાનાની પક્ષ પુરૂશોત્તમ કરતા,
નિજના જાણી તાપ ત્રિવિધ તેના હરતા;
નિમિત્ત સ્હેજ લઇને કૃપા બહુ કરતા. દયાળુ૦ ૧૧
પોતાનાં પ્રાણી ગણી પાપજ ધુવો,
દયાળુ દોષ દુર્ગુણ નવ જુવો;
જદુપતી જસના સામું તમે જુવો. દયાળુ૦ ૧૨

૨૬.

પ્રતિજ્ઞા.

तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ॥ શ્રીમદ્ ભાગવત.

("વિચારો મન આ ખોટું છે અતિ રે." :—એ લય).

સમર મન કૃષ્ણ હરે હરે રે, જેથી તું ભવસાગર તરે રે. સમર.

નામનૌકા નાની નથી, બેઠા તે પામ્યા પાર;
વાર નથી વૈકુંઠ જતાં, શુદ્ધ મને સંભાર.
તર્યા અજામીલ વાલ્મિક ખરે રે. સમર. ૧

ગોવિંદ કહે ગોપાળ કહે, જીભે જગદીશ રાખ;
નામે નામી સદ્ય મળે, માટે શ્રી કૃષ્ણજ ભાખ;
રટ રાધાવર રક્ષણ કરે રે. સમર. ૨

તું સંભારે તેહને, ત્હને સંભારે નાથ;
દયાળુ દામોદર ઘણા, હેતે ઝાલશે હાથ;
ગોવિન્દ ગરીબની પક્ષ કરે રે. સમર. ૩

જાગૃતમાં જપને હરિ, નથી સ્વપ્ન સુષુપ્તિ લાગ;
અવસ્થાત્રયનો સાક્ષી એ, કોઇ જાણે મહાભાગ;
જ્ઞાની ગોષ્ટિ હરિહરશું કરે રે. સમર. ૪

જો લીલા લક્ષ્મીકાન્તની, અદ્ભુત તે છે અપાર;
ચંદ્ર સૂર્ય તારા તડિત્, ભૂ ખં વહિનને વાર;
મોહન માયા અદ્ભુત ખરે રે. સમર. ૫

તર્કથી તારણ નહીં જડે,[1] થાકયા સુર હર સિદ્ધ;
થાકયાં દેવી સરસ્વતિ, હાર્યા મુનિ પ્રસિદ્ધ;
અચ્યુત માયા અદ્ભુત અરે રે. સમર. ૬

બાંધ્યા છે તે છોડશે, આજીજી કર આ વાર;
ન્યાયી નિર્દય છે નહિ, માફ કરે મોરાર,
ગોવિંદ ગરીબની પક્ષ કરે રે. સમર. ૭

---

૧ तर्कस्याप्रतिष्ठानात् (सूत्र).

કરી પ્રતિજ્ઞા[1] પાળતા, સાચા તેહ સુજાણ;
લંપટ લુચ્ચાઈ બહુ કરી, રખડે ચારે ખાણ;
ચોર ચતુર્ભુજનો નહીં ઠરે રે. સમર. ૮
માટે ભજો મોરારને, સાચો વશીલો સ્હાઓ;
ખરી વખત ખપ લાગશે, ગુણ ગોવિન્દના ગાઓ;
જેની આશા સુર મુનીઓ કરે રે. સમર. ૯
મૂરખ માતાઉદરમાં, દુઃખ વેઠયાં બહુ વાર;[2]
જન્મ મરણને ટાળવા, દેહ દીધો શુભ સાર;
સમજી સ્મર તો સઘ તરે રે. સમર. ૧૦
ડરીને ડગલું મૂકજે, નિષિદ્ધ કર્મથી ન્હાશ;
વિહિત સોંપ વ્રજરાજને શ્રુતિમત એ છે ખાસ;
જસ અકર્તા આનંદ કરે રે. સમર. ૧૧

૨૭.

દયાળુને પ્રાર્થના.

धियो यो नः प्रचोदयात् । (વેદમાતા).

(" વનચર વીરા વધામણી ":—એ લય.)

હે હરિ તુજને યાચું હું, આપ્ય અવિચળ ભક્તિ;
જોટો નહિ આ જગ વિષે, હરિ હરિ દ્યો મુક્તિ. ૧

---

१ यदि योन्याः प्रमुच्यामि ध्याये ब्रह्म सनातनम् (ઉપનિષદ્).
२ जातो बालो युवा वृद्धो मृतो जातः पुनस्तथा ।
घंत्रमित्येष संसारे घटीयंत्रसमो ऽवशः ॥ (સુભાષિત.)

દયા તો દિસે હે પ્રભુ, જેવી સાગર લ્હેરી;
સહજ સ્વભાવ એ તમ તણો, ઉધાર્યાં ઘણા વેરી. ૨
નામ દયાળુ તે દિનતું, નાથ, ધારણ કીધું;
ભીડ ભાગી સુરનરતણી, સર્વેથી અચરજ દીઠું. ૩
દયા જેના દિલ વિષે, તે તો દેવાધિદેવા;
શોધું પણ એવા ન મળ્યા, એક દેવાધિદેવા. ૪
દોષ ન જુઓ દયાનિધિ, સાહ્ય કરવામાં શૂરા;
કેમ સમજાય કમળાપતિ, સંસ્કારો અધૂરા. ૫
ત્હારી કૃપા કિંચિત્ થતાં, કાર્યો સર્વે સુધરશે;
જસ જન જે જગદીશનો, ચિંતા તેની હરિ હરશે. ૬

૨૮.

દર્શન.

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादात्मयाच्युत ।

(શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતા.)

("ઉત્તમ આસો રે માસ, શરદ પૂનમની રે રાતડી":—એ લય.)

લગની લાગી રે નન્દલાલશું, મટ્યા મનના ઉચાટ,
દ્રષ્ટિ કરૂં ત્યાં દયાળ છે, મૂક્યો માયાનો ઠાઠ. (૨) લગની. ૧
ક્રીયા સાધનથી કૃપા કરી, નથી જંપીઆરે જાપ;
યમ નિયમ નથી આવડ્યા, કરી કૃપા મહારાજ. લગની. ૨

સર્વે સાધન સાથે ફળ્યાં, શમ દમ ને વિચાર;
પૂરણ પ્રભુજીને પેખતાં, ઘટ મઠમાં ગોપાળ. લગની. ૩
જોવા સરીખા યદુવીર છે, શાન્તિ સ્મરણથી થાય;
દર્શન કરોને દયાળનાં, ફેરો ફોગટ ન થાય. લગની. ૪
ન્યાલ થશો નિરખી હરિ, રૂપ અદ્‌ભૂત અપાર;
કહેવાપણું કાંઇએ નથી, સર્વે શોભાનો સાર. લગની. ૫
જે જે જોઇએ તે જગદીશમાં, શાસ્ત્ર સંતોની સાખ;
અંતરથી અવલોકજો, સર્વે સુવર્ણના ઘાટ. લગની. ૬
સત્ ચિત્ આનંદ સઘળે ભર્યો, પૂર્ણ આપોઆપ;
જીવ જગત કંઈ છે નહીં, બોધ જશ નો એ ખાસ. લગની. ૭

૨૯

હરિસર્વસ્વ.

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।

("રોકયો પનઘટ રસિયા રાજ":—એ રાગ.)

મ્હારૂં સર્વસ્વ હરિ તમે શ્યામ, કહોને પ્રભુ કયાં જઈએ.
કંઇ ઠાલો ન સુઝે જરી ઠામ, કહોને હરિ કયાં જઇએ. ૧
ઘણા દહાડા ગોવિંદ રહ્યા દૂર. કહોને.
ભજ્યા ત્યારે ભાસ્યા ભરપૂર કહોને. ૨

દુનિયા ઝુરતી પ્રીતે મેં તો જોઇ, કહોને.
તેનું સગપણ નાંખ્યું ધોઇ. કહોને. ૩
જેથી વાસના સઘળી વામી, કહોને.
પાસે[1] હતા ને કેમ કહું જે પામી. કહોને. ૪
આ તન ધર્યું જેને કાજે, કહોને.
ઘણી કૃપા કરીરે મહારાજે. કહોને. ૫
મન વિના મોહન નથી મળતા, કહોને.
જેવી પ્રીતિ તેવા તમે ફળતા. કહોને. ૬
કિંચિત્ ભેટ ભૂધરજી માગો, કહોને.
શરણે આવ્યાને ભવમાં ન નાંખો. કહોને. ૭
સ્હેજ સંભારે તેના સ્હાયક બેલી. કહોને.
તેથી પ્રીતિ કરવી સૌ પહેલી. કહોને. ૮
ગજું નથી ગોવિંદ શું ગાઉં, કહોને.
મહિમા અતુલ મનમાં શું લાવું. કહોને. ૯
દયા ઘણીરે કરી દીનાનાથ. કહોને.
મ્હારે માતા ભ્રાતા તમે તાત. કહોને. ૧૦
અલ્પ અર્પ્યું લ્યોછો મહાન માની; કહોને.
જસ જાહેર ન રાખો મ્હેર છાની. કહોને. ૧૧



૧ નિત્ય પ્રાપ્તની પ્રાપ્તિ ઘટતી નથી. અપ્રાપ્તિનો સમય કલ્પીને કથનમાત્ર છે.

૩૦

આવાહન.

जयति ते ऽधिकं जन्मना व्रज ।
श्रयत इंदिरा शश्वदत्र हि ॥

ગોપિકાગીત.

("હું તો રામ રટન કર રંગમાં":—એ રાગ.)

મ્હારી વ્હારે ચડયા વ્રજનાથજી, મનમોતીડે વધાવ્યા;
નન્દલાલ ગોવિન્દ ઘેર આવીયા.
પગથીઆં પ્રેમ પુષ્પોથી પૂરીયાં, મનસિંહાસને મોહનલાલ.
ગોવિંદ. ૧
પ્રેમપૂર્ણતણું સિંહાસન રચ્યું, બુદ્ધિબેઠકમાં બળવીર.
ગોવિન્દ. ૨
જતાં આવતાં ઝાંખી જુગદીશની, નિર્મળ નયણે નીરખું નંદલાલ.
ગોવિન્દ. ૩
સેવા શી કરૂં, સમરથ છો ઘણું, મ્હારૂં મન અર્પું મહારાજ.
ગોવિન્દ. ૪
લઘુ લાયક ગણો લક્ષ્મીપતિ, મ્હોટું મન ઘણું મોરાર.
ગોવિન્દ. ૫
દીનબન્ધુ દયાસિન્ધુ કહાવો, અર્ણવ ઉપમા દીધી કેમ જાય.
ગોવિન્દ. ૬
મર્યાદા મહાનિધિ ન મૂકતો, તમે માઝા મૂકી મહારાજ.
ગોવિન્દ. ૭

શુદ્ધ જળથી શેરી છંટાવીએ, અંતર ઉજળે આવે અવિનાશ.
ગોવિન્દ. ૮
કૃપા ઘણી કરો કરૂણાનિધિ, દ્રષ્ટે દુઃખ ચોરાશી જાય.
ગોવિન્દ. ૯
અર્ઘ્યપાદ્ય પુરૂષ પુરાણને, એનું રૂપ ત્રિભુવન ત્રણ.
ગોવિન્દ. ૧૦
એવા ગોવિન્દ ભરપૂર ભુવનમાં; જસ નમન કરે સહસ્રવાર.
ગોવિન્દ. ૧૧

૩૧

શુકન સાર.

नित्योत्सवः सदा तेषां नित्यश्री र्नित्यमंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ॥

("લોચન મનનો રે આ ઝઘડો લોચન મનનો":—એ લય.)

મોહન મંગળ રૂપ, મ્હારે મન મંગળ વસીયા. મોહન.
દેશ વિદેશે જ્યાં જઉં, મંગળમૂર્તિ સાથ;
સ્મરણ કરતાં સંચરૂં, મંગળ શ્રીપતિ નાથ. મ્હારે મન. ૧
શુકન સરસ નરસ કરે, સાચું શરણું શ્યામ;
મંગળ મંગળ શ્રીહરિ, મંગળ ત્હારૂં નામ. મ્હારે મન. ૨
સકળમાં શ્રીહરિ દેખતાં, મહા મંગળ દેખાય;
શુભ સ્વરૂપ મન ચિંતવો, જન્માક્ષર એ કહેવાય. મ્હારે મન. ૩

ઉંચ નીચ ગ્રહ આવી અડ્યા, કર્મફળ કહેવાય;
જો રીસે જગદીશ નહીં, દહીંલાડુએ શું થાય. મ્હારે મન. ૪
દશાનને દશગ્રહને બાંધ્યા મહાબળવાન;
ભાવી કાંઈ ભૂલે નહીં, પરિવાર સહિત થઇ હાણ. મ્હારે મન. ૫
મંગળ રૂપ મોરાર છે, અમંગળ નવ થાય;
સર્વ સર્વમાં શ્રીપતિ, જસ જેને પડે છે પાય. મ્હારે મન. ૬

૩૨.

પ્રભુ દર્શન.

ગરબી.

उत्तस्थुर्युगपद् सर्वास्तन्वः प्राणमिवागतम् ।
(ભગવાન્ વેદ વ્યાસ.)

("માતા જશોદા ઝુલાવે પુત્ર પારણે":—એ લય.)

મારા મનમાંહી મોહનજી સ્હેજે મળ્યા,
જેથી ભાગી ભવની જાડી જે જંજાળ;
સુકૃત શું કર્યાં તે જરિયે જાણું નહિ,
રામાને રીઝયો જે રમાતણો ભરથાર. મ્હારા મનમાંહી. ૧
દયાળે દયા કરી દીધું દર્શન આ દેહને,
નિરખ્યું નારાયણનું અદ્‌ભુત રૂપ વિશાળ;
પરખી પુરૂષોત્તમને પરમપદ પળમાં મળ્યું,
શાંતિ સુખનું સ્થાનક સમરૂં શ્રીગોપાળ. મ્હારા મનમાંહી. ૨

જેને વિરંચિ ને વસુદેવ વિનવી રહ્યા,
શુભ સુકૃત ઉદયથી દયાળ દર્શન થાય;
મનની મુંઝવણી સહુ મટી ગઈ મુરારિથી,
મુકુંદજી મળ્યા આતો મહામાયાની પાર. મ્હારા મનમાંહી. ૩

શક્તિ સનક સુર બ્રહ્માદિક સર્વે સેવતાં,
જ્યોતિ જગમોહન જગજીવન કહેવાય;
સુરને શક્તિનું કારણ એ આદિ આત્મા,
એની દયા વિના એ દિવ્ય દર્શન નવ થાય. મ્હારા મનમાંહી.૪

નામ નારાયણ શ્રીધર માધવ મુકુંદજી,
વિઠ્ઠલ વનમાળી ને વાસુદેવ કહેવાય;
નામે નરનારી પશ્વાદિક સર્વે ઉદ્ધર્યા,
ભવની ભ્રાંતિ ભાગે કોટિ કિલ્મિષ જાય. મ્હારા મનમાંહી. ૫

સમજી શામળીયાને સંભારો સ્નેહે કરી,
ચૈતન્ય ચતુર્ભુજ ધ્યાને નિત્ય દેખાય;
જાતિવર્ણાશ્રમની જંજાળો જતી રહી,
પ્રત્યક્ષ પુરૂષોત્તમ છે કર કંકણને ન્યાય. મ્હારા મનમાંહી. ૬

સહેજે સંભારો શાંતિ સદાએ આપશે,
શશિ રવિ શારદ સદાયે શ્રીપતિના ગુણગાય;
વેદે ભેદ લહ્યો નહિ, વિરામી વિનતી કરી,
જસ્ કહે જન્મ્ સફળ શ્રીહરિ સ્મર્યેથી થાય. મ્હારા. ૭

૩૩.

પ્રકાશ.

रज्जु सर्पवदात्मानं जीवं ज्ञात्वा भयं भवेत् ।
नाहं जीवः परात्मेति ज्ञातं चेत् निर्भयो भवेत् ॥

(આત્મબોધ.

કાફી.

ભગવત ! ભય ભાગ્યોરે, ભવની તો ભ્રાન્તિ ગઇ,
તત્વને તો તપાસ્યેરે સૃષ્ટિ સર્વે શ્રીહરિ થઇ. ભગવત. ૧

વ્યાપક સઘળે વિષ્ણુને દીઠા તનમન તપાસ્યું ત્યાંહી,
ઓચિંતો અરૂણ ઉદય થતાં તમ ન ખોળ્યું મળ્યું ક્યાંહી;
ચૈતન્યદીપ ચેત્યોરે, દેવ તો દિલમાં સહી. ભગવત. ૨

વસ્તુને કદી વેગળી કરીયે આકાશ અલગ ન થાય;
આશ્રયને સૌ અવલંબી ઉભાં, મૂકે તો મૂળ ન જણાય;
પુરૂષોત્તમ પૂરણરે, જગપણું જોતાં નહીં. ભગવત. ૩

સુર તું, ઉર તું, નૂર તું, સઘળે વ્યાપ્યો શ્યામ,
પડદો પાડી પ્રૌઢતા કીધી, કીધાં વિવિધ તેમાં કામ;
ખેલાડી ખોટી જાણેરે, રમતમાં રીઝ્યા કંઈ. ભગવત. ૪

પડદામાં બહુ પૂરી કલ્પના નિરખતાં નવનવું થાય,
જેની સત્તાએ શોભા તે સઘળી શાણો તે શો કહેવાય;
રમતે રઢ લાગીરે, ખેલાડીને ખોળો સહી. ભગવત. ૫

દીર્ઘદ્દષ્ટિ વિના દુઃખ નહિ ભાગે, સમજ સ્વરૂપ સુખ થાય,
માયા માંહીરે મળી રહેતાં સુખમાં દુઃખ દેખાય;
સ્વરૂપ નિજ સમજોરે, જંજાળ જીવની ગઇ. ભગવત. ૬

સંસારમાં શું કરવા આવ્યા અનુભવ્યાં દુઃખ અપાર,
અથડાઇને ઘણી આબરૂ મેળવી ધન સારૂ ધંધો વેપાર;
બધું રહ્યુ બાકીરે, ઓળખાણુ તુજ ન થઇ. ભગવત. ૭

વારે વારે વિપત વેઠી કોટી ગયા અવતાર,
ડહાપણુ તો તારૂં ત્યારે દાખે જન્મ મરણુ જો નિવાર;
ભ્રમણા સર્વે ભાગેરે, મહાનંદમાં જાને મળી. ભગવત. ૮

સાધનરે શાં સાધ્યે, દયાળુ, કયે પુન્યે કૃપારે થાય;
વિવિધ પંથે વ્યાકુળ કીધા સત્ય તું શ્રીહરિ બતાવ;
તારા તુને ભજશેરે, ન્યારા તે તો થશે નહીં. ભગવત. ૯

જશને મશ જગદીશ છે તારો હેતે ઝાલોને હાથ,
કૃપાસિંધુને કષ્ટ શું લાગે દયા કરો દીનાનાથ;
અરજ શી અદકીરે, સ્મરણે શાન્તિ થઇ. ભગવત. ૧૦

—•—

પ્રભાતીયાં.

૧.

(" અખિલ બ્રહ્માંડમાં એક તું શ્રી હરિ ":—એ લય.)

સવારમાં ઉઠીને શમ દમ રાખવા, નિત્ય નારાયણ નામ લેવું;
અવર કારજને અળગું કરી અધઘડી, ક્ષણભર કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ કહેવું. ૧
નિજ કર્મના મર્મથી કંઇક સંકટ પડે, સમજી સમજાવીને સહીરે રહેવું;
નિત્ય અનિત્ય વિચાર વેગે કરી, શ્રીહરિને ગમે તે સહેવું. ૨
ફળ ઇચ્છિત તે સ્હેજ આવી મળે, પૂર્વની પૂંજી સૌ દઇને લેવું;
કૃષ્ણ ચતુર બહુ કહે એમ શાસ્ત્ર સૌ, કાંઈ તારે પડે નહિ કહેવું. ૩
આગે અસુર ને સુર બહુ તારીઆ, એને એનું નથી બિરદ ખોવું;
રાખ વિશ્વાસ મહારાજધિરાજનો, આપ્યું એનું અલૌકિક જોવું. ૪
નામ એ નાવ છે લાભ બહુ લ્હાવ છે, કૃષ્ણ કૃપા વિના લેવું અઘરૂં.
જસ કહે જાગશે પુણ્ય જે પ્રાણીનાં, નામ લીધું તેનું કાર્ય સધર્યું. ૫

૨.

મચ્છ ને કચ્છ વારાહ વામન થઈ, નરસિંહરૂપથી નાથ આવ્યા;
ભક્તને કાજ એ બ્રહ્મલીલા કરી, જુજવાં રૂપ અનેક લાવ્યા[૧]. ૧
યદુકુળે યાદવા રઘુકુળે રાઘવા, કર્દમ ઘેર શ્રીકપિલ કીધા;
ભૃગુજી દયાળ થઇ રેણુકા ઘર જઇ, ક્ષત્રી તે સર્વ સંહારી દીધા. ૨

---

૧ एतन्नानावताराणां निधानं बीजमव्ययम् ॥
यस्यांशांशेन सृज्यन्ते देवतीर्यङ्नरादयः ॥ (શ્રીમદ્ ભાગવત.)

મહાન મુંઝાવીઆ બ્રહ્મા ભૂલાવીઆ, મર્મ માયાનો મોહન જાણે;
ભક્ત કોઈ લહે વાણીથી કયમ કહે, વાણીની પાર વ્રજનાથ માણે. ૩
આણીઆ પ્રભુ ભજો મોહ માયા તજો, સ્વર્ણની સૂઝથી ઘાટ જાયે;
જસ કહે જુક્તિથી જોતાં જો આવડે, સર્વ સત્ ચિત્ આનંદ થાયે.૪

૩.

જીવ તું જાગજે હું પણું ત્યાગજે, રાખજે ચિત્ત માધવ ચરણે;
નામ દયાનિધિ દોષ કંઇ નહિ જુએ, સ્હેજમાં રાખશે નાથ શરણે. ૧
હું અને તું વિષે ભેદ એ ભ્રમ છે, વાસ્તવિક વાત વિચારી જોતાં.
હેતથી હળીમળી જાવું તેમાં ભળી, જીવનું રૂપ જુક્તિથી ખોતાં.[1] ૨
તું તને ન્યાળતો પ્રેમથી પાળતો, આપનો આપથી મોક્ષ થાયે;
ચૈતન્ય દીપ તે સદ્ય ચેતી ઉઠે, તિમિર તો તાહરૂં તુરત જાયે. ૩
સુર તું, નૂર તું, ઉર તું શામળા, ખોળું શું સર્વમાં તુંજ ગાજે;
સ્હેજ કૃપા કરી ઉર દયા ધરી, થયું રે પ્રભાત સંસ્કાર જાગે. ૪
સ્હેજ સ્વભાવ જનની તણો જાણવો, રક્ષવા પોષવા ફરજ જાણે;
અર્ભક અંતરે અણસમજુ લહી, દોષ કે રોષ નવ લેશ આણે. ૫
તેવી છે પ્રીતની રીત ત્હારી પ્રભુ, અન્ય જન વાત એ શું રે જાણે.
જસ કહે પ્રીતની રીત જો આવડે, પ્રત્યક્ષ તુજને સૌ પ્રમાણે. ૬

૪.

...ડને ખટપટ માયાની લટપટ, રમતમાં ગમત તેં બહુ રે કીધી;
હાવાં તો હારીએ મોહને મારીએ, જૂજવી દેહ અનેક લીધી. ૧

---

૧ अस्ति ब्रह्मेति चेद् वेद परोक्षज्ञानमेव तत् ।
अहं ब्रह्मेति चेद् वेद साक्षात्कारः स उच्यते ॥ (શ્રી પંચદશી.)

વિષયને વશ થઇ ભક્તિ ભૂલી જઈ, પાપની પોટલી શીર લીધી;
સંશયોમાં[1] રહી શક્તિ સર્વે ગઇ, કહે ચતુરાઇ ત્હેં શી રે કીધી? ૨
પોતાનુ ભૂલીયો દેવામાં ડુલીયો, વિણુ વિવેક વડાઈ કીધી;
અમૃત ઢોળીઉં ઝેરને ઘોળીઉં, વિષની પ્યાલી પ્રીતેથી પીધી. ૩
ભક્તિ તું કરને, દેવું કંઇ ભરને, શેઠ દયાળુ છે દીલ મ્હોટું;
પ્રસન્ન રહેજે થશે, દેવું ચૂકાઇ જશે, બાકી રહેશે તે એ કરશે ખોટું. ૪
અવિચારે આવર્યો, બની ગયો બ્હાવરો,[2] પાસ છે વાસ, વિચારી જો જે;
પાપ રૂપ પોળીઆ પેસવા નવ દિયે, જસ કહે કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ કહેજે. ૫

૫.

શમ અને દમ સહુ સાધનો શ્રેષ્ઠ છે, વિવેકથી રે વૈરાગ્ય આવે;
સકળ શુભ કર્મ સંસ્કારની ઉત્પત્તિ, સાધનો આત્માને લક્ષ લાવે. ૧
મોક્ષ મનમાં લહે તે તો પદને ગ્રહે, બંધ ને મોક્ષની બેડી ભાગી;
લક્ષ લઇને નિજ સ્વરૂપ નિશ્ચે કરે, જેહને જેહશું લેહ લાગી. ૨
લક્ષ નિજનો લહો દૂર કોને કહો, જરીએ આઘોજ એને ન જોશો;
જસ કહે જન તમે જુવોને ઝટપટ, હાથ આવ્યો છે હીરો ન ખોશો. ૩

૬.

અવતાર અવનવા શું ગણાએ ગણ્યા, જન્મ ને કર્મ છે દિવ્ય તારાં;
નામને રૂપની જ્યાં નહિ કલ્પના, પાપ ધૂવે, પ્રભુ! નામ ત્હારાં. ૧

---

૧ संशयात्मा विनश्यति । (શ્રીમદ્ ભગવદ્ ગીતા.)

૨ पीत्वामोहमयी प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् । (ભર્તૃહરિ.)

નારદ નાથજી વ્યાસ શુકતાતજી, શ્રી ઋષભદેવ હૃષિકેશ કહીએ;
પૃથુ રૂપે પ્રભુ થયા ધરણિને દોહી ગયા, સમુદ્ર મંથન સમે શ્યામા[1] કહીએ. ૨
હંસ હરિ તો હવા સનક શ્રીપતિ થયા, નર નારાયણ નામ લઇએ;
જગતનું જીવન જે જગદીશ છે, તેનું ધન્વંતરી નામ દઇએ. ૩
નામ હૃદયે રહ્યું પાપ સર્વે ગયું, નાથ હું નામનું સ્મરણ માગું;
કૃષ્ણ કૃપા કરો ઉર દયા ધરો, જસ કહે જદુપતિ પાય લાગું. ૪

૭.

કળિતણો કાળ પણ નાથ ન્યારા નહિ, ભક્તને સ્હેજ ભગવંત ભેટયા;
કાળ ને કર્મ તે શું કરે તેહને, જ્યાં દીનાનાથ દયાળ બેઠા. ૧
કષ્ટ થોડું કળી કાળમાં પ્રાણીઆ, પૂંજી થોડી ને વ્હેપાર વધતો;
નાથનું નામ દઇ થાઓ નાણાવટી, દાનથી દામ વધતોજ વધતો. ૨
લક્ષ્મિનો જ્યાં પતિ ખોટ નહિ ત્યાં રતિ, લાભ ઉપર ત્યાં લાભ આવે;
દૂર દારિદ્ર રહે જસ શ્રીકૃષ્ણ કહે, એ પ્રભુને કોઇ લક્ષ લાવે. ૩

૮.

વ્રત અને નિયમ છે નાથના નામમાં, નામીને નિરખીને નિત્ય નમવું;
નામી સ્હેજે મળે ભવ તણો ભય ટળે, સ્વરૂપ અનૂપ તે માંહિ ભળવું. ૧
જગત જાતું રહે[2] પદ હારદ લહે, વાણીએ વાત તે શી રે કહીએ;
કોટી કઇ તીર્થને તપ તણું ફળ એ, સમજી શ્રીનાથને શાન્તિ ગ્રહીએ. ૨

---

૧ મોહિની સ્વરૂપ.

૨ रज्जुरूपे परिज्ञाते सर्पखंडं न तिष्ठति ।
अधिष्ठाने तथा ज्ञाते प्रपंचः शून्यतां गतः । (શ્રી શંકરાચાર્ય.)

દેશને કાળ દબાણ ત્યાં બહુ કરે, બહુરૂપી રે જયહાં બ્હાર બેઠા;
મનમાં મોહ મલિનતા જ્યાં લગી, શુદ્ધ સત્‌ચિત્‌ પણ દૂર દીઠા. ૩
નિરખ ન્યારો નથી પરખ પોતેજ છું, ભૂલથી ભવનો ભય લાગ્યો;
ઉષ્ણુતા અગ્નિથી અળગીરે નહિ રહે, એમ તું[1] તત્વથી નહીંજ આઘો. ૪
કૃષ્ણ કૃપા કરે વૃત્તિ એમાં વળે, સ્મરણથી સુખ અમાપ લેવાં;
જીવની ઝંખના જ્યાં લગી જીવતી, ત્યાં લગી કષ્ટ કોટિક સ્હેવાં. ૫
પ્રીતે પ્રભુજી મળે જેમ છે ત્યમ કળે, દેહ ધરીને દર્શન કરવું;
રામ હૃદયે લઇ મુખ શ્રીકૃષ્ણ કહી, જસ કહે જકતમાં ના રે ફરવું. ૬

૯.

नामैव तव गोविंद कलौ त्वतः शताधिकम् ।
ददात्युच्चारणान्मुक्तिः विना साष्टांग योगतः ॥

(પાંડવ ગીતા.)

ગોવિન્દ નામથી ગત પાતક થશે, પ્રભુ કહેતાં બહુ પુન્ય લાજે;
ત્રિકમ તારશે તરત ત્રિગુણ થકી, કૃષ્ણ કહેતાં કલિ કષ્ટ ભાગે. ૧
ઇંદ્ર ને ચંદ્ર ભવાની ને ભવપતિ, કૃષ્ણ કૃપાળનું ધ્યાન ધરતા;
માધવ નામનો મર્મ જેણે લહ્યો, હરિજનો નિત્ય કિર્त્તન કરતા. ૨
દ્રષ્ટિ દયાળુ કર ભક્તિ ભરપૂર ભર, ઓછી થયાની અધીર આવે;
જસ કહે નાથનું નામ જો વિસરે, આ કળિકાળમાં કેમ ફાવે? ૩

૧૦.

સ્નેહ સંસારમાં કર શ્રીનાથનો, આદિને અંતમાં સુખ થાયે;

---

૧ जीवो ब्रह्मैव नापरः । (श्रुति.)

ચોર લૂંટે નહિં, જાય, ખૂટે નહિ, પ્રીતિ વધતાં બહુ શાન્તિ થાયે. ૧
અન્ય મન ધારવું, અંતમાં હારવું, સ્નેહી પણ સંકટો બહુ પમાડે;
સ્મરણ સ્નેહીતણું થાય જે જે ઘડી, દુઃખને સહજ સૂતું જગાડે; ૨
સંબંધ સ્હેજે મળે હેતે આવી હળે, છોડતાં છેદું તે તો ન થાયે;
દૈવના યોગથી દૂર દૃષ્ટિથકી, રીઝવ્યું રહે ન રીસાઈ જાયે. ૩
સ્વાર્થ છે જે તણો દુઃખ દે તે ઘણું[1], પરવશ નાંખી પીડાજ આપે.
પારધી હાથ પંખી રે આવી ચડયું, બળ ન ચાલે બધો દેહ કાપે. ૪
પ્રીત પ્રભુજી તણી શ્રેષ્ઠ છે અતિ ઘણી, સ્હેજ સંભારતાં સુખ લાગે;
શ્રીહરિ મુજ મન તુજમહીં મેળતાં, જસ કહે અધિક આનન્દ જાગે. ૫

૧૧.

હરિ! ધન તું, તન તું, મન તું, ત્રિકમા, અવર વિચાર સૌ વેઠ લાગે;
સાધુજન સ્મરણના સુખને અનુભવે, અન્યને મર્મ એનો ન લાધે. ૧
જાગ્રતમાંહી જંજાળ જગતતણી, સ્થૂળને સ્થૂળ ભોગોજ જોડે;
કર્મની કૂટમાં, કૃષ્ણ, મુંઝાઇ ગયાં, તું વિના ત્રિકમા કોણ છોડે? ૨
મમત મૂકાવજે સત્ય સધાવજે, ફળ દેખાડી ફેરા ન આપો,
સમજુને સુખ છે શાન્તિમાં શ્રીહરિ, તે તણા સંશયો સર્વ કાપો. ૩
ભક્તને ભોગ સર્વે રે ભક્તિ વિષે, મધુ વિષે સ્વાદ સર્વે રે મીઠો;
જસ કહે જદુપતિ નાથને જન ભજો, સ્વાદ ને સાર એમાંજ દીઠો. ૪

૧૨.

રંકશું રોષ રાખો ન રમાપતિ, રંકનો વાંક વડા ન જુવે;
તું તો ત્રિલોકનો નાથ ત્રિગુણપતિ, કરી દયા દીનને કયમ ન જુવે? ૧

---

[1] ज्वलते ऽ निशम् । (શ્રીમદ્ ભાગવત.)

મ્હોટપ મોડ માં, ત્હારાં તરછોડ માં, નામ દયાળુ દેવો રે બોલે;
નામનો લક્ષ લ્યો નાથ લક્ષ્મીતણા, તારી દયા કહું કોણ તોલે. ૨
પ્રલ્હાદ આપના શ્રુ વય પાંચના, મ્હોટાઇ રાખીને માન દીધું;
રાંક નરસિંહ લહ્યો કૃષ્ણજી કર ગ્રહ્યો, કાર્ય તેનું કૃપાનાથ કીધું. ૩
દયા બહુ દીસતી વૃષ્ટિ સમ વરસતી, પક્ષપાતી નથી નન્દલાલા;[1]
ઉગવું આકરૂં ઉખર અવનિવિષે, તેમાં શો વાંક ત્હારો રે વ્હાલા. ૪
સુરતરૂને મન સર્વ સરખું રહે, સેવનારાં ઘણું સુખ પામે;
દૂર દરિદ્રી રહે આશરો નવ લહે, તેહનું દુઃખ તે કેમ વામે. ૫
સંસાર સાગર રોગ રગીઓ ઘણો, ઉત્તમ ઔષધિ નામ તારૂં;
વ્યાધિ વેગે ટળે વૃત્તિ તુંમાં વળે, જસ કહે યાચવું એજ મારૂં. ૬

૧૩.

રખે મન માહરા રમત તું તો કરે, કૂટમાં કાળ ખોવાઇ જાશે;
રમત ને ગમતમાં રામ સંભારજે, સર્વ વાતે તને સુખ થાશે. ૧
કુબેરને કમી કશી, ઘેર લક્ષ્મી વસી, લક્ષ્મી ત્યાં સર્વ લીલા રે લહીએ;
નન્દનો નન્દ અખૂટ ધન આપણું, સ્મરણ કરીનેજ શ્રીમંત થઇએ. ૨
વેપારી જે રળે શ્રમ ઘણે તે મળે, ખોટું થતાં ઘણી ખોટ આવે;
દ્રવ્ય દામોદરા ખરચ્યું ખૂટે નહિ, આદિ ને અંતમાં લાભ આવે. ૩
શુકને સ્મરણ શું, જ્ઞાન ગર્ભે વર્યું, સાર એ લઈને સ્મરણ કરજે;
ભાવનો ભૂખ્યો ભગવંતને જાણજે, જસ કહે જ્યમત્યમ પ્રીત કરજે. ૪

---

૧ समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः

(શ્રી૦ ભ૦ ગીતા.)

૧૪.

સુખ પણ સ્વપ્નના ન્યાય સમ જાણવું, આદિને અંતમાં એ ન દીઠું;
મધ્યમાં ઝાંઝવા જળસમું ભાસતું, આદિને અંતમાં હોય જુઠું. ૧
સુખ તે દુઃખને દૂરથી દેખતું, દુઃખ તે સુખને પાસ જાણે;
અનુભવી બેયને અનિત્ય છે એમ લહી, રાગ કે દ્વેષ એકે ન આણે. ૨
ભક્તિ તે ભવ હરે આનન્દ અતિ કરે, સ્મરણનું સુખ તે સુખ મ્હોટું,
જસ કહે સ્વરૂપને સ્હેજ સંભારતાં, સુખને દુઃખ બે થાય ખોટું. ૩

૧૫.

ધર્મ તે ધ્યાન છે સ્વરૂપ નિશાન છે, અધર્મ તે દેહને હુંજ માને;
મિથ્યા પોતે થયો સ્વરૂપ ભૂલી ગયો,[૧] અધિક અધર્મ તે કહેવો કોને? ૧
શુદ્ધ શોધી વળો શુદ્ધમાં જઇ ભળો, અવિચારેજ અશુદ્ધ બેઠા;
તત્વમાં તીર્થ સર્વે રે વાસો વસે, સમજુ તે શુદ્ધ થવાને પેઠા. ૨
શુદ્ધ સર્વે જુઓ નામથી મળ ધુવો, નિજ સ્વરૂપ સચ્ચિદ જાણો;
મોહ એ મેલ છે, 'દેહ હું", ભુલ છે, આપ સ્વરૂપ મનમાંહી આણો. ૩
વાત વિષય તણી લાગે મીઠી ઘણી, સુણતાં સદ્ય પાતક લાગે;
વિશ્વના નાથ વૃત્તિ તમે વારજો, જસ સ્મરણ તમારૂંજ માગે. ૪

૧૬.

સ્વરૂપ સમજ્યા વિના શાન્તિ આવે નહીં, તાપ તન મન થકી ત્રિવિધ ટાળે;
શ્રેષ્ઠ સાધન કરી શ્રીહરિ રીઝવે, દેહથી ભિન્ન વસ્તુ નીહાળે. ૧

---

૧ आत्मा ज्ञानमयःपूर्णो देहो मांसमयोऽशुचिः ।
तयोरैक्यं प्रपश्यन्ति किमज्ञानमतः परम् —શ્રીમદ્ શંકરાચાર્ય.

જન્મ મૃત્યુ જરા ધર્મ સ્થૂળ દેહના, પ્રાણનો ધર્મ જળ અન્ન લેવું;
મનના ધર્મ તે હર્ષ ને શોક છે, બુદ્ધિ નિશ્ચય કરે એમ જોવું. ૨
ધર્મિ શરીર તે ધર્મને નવ તજે, જન્મમૃત્યુને આધિન રહે છે;
સમજુ તે પૃથક્ પોતાથકી દેખતા, જન્મ્યું તે જાય એમ જાણી લેછે ૩
અન્ન જળ નવ મળે પ્રાણ પીડા કરે, ધર્મી તે ધર્મ છોડી ન દેતા,
પ્રાણપ્રકાશરૂપ પર પોતે રહી, ધર્મ તેનો ગણી અન્ન લેતા. ૪
મન ધર્મી નિજ ધર્મને પાળતું, સૃષ્ટિ સાથેજ સ્વભાવ સરજ્યો;
ધર્મ ધર્મિ સકળ સાક્ષી તે દેખતો, અલગ મુજથી એમ દ્રઢ કરતો. ૫
પૃથક્ પોતાપણું સુખ એમાં ઘણું, સંગમાં સુખ ને દુઃખ આવે,
શુદ્ધ સત્ ચિત્ આનંદ તે હુંજ છું, થાય વિવેક તો વાત ફાવે. ૬
પ્રથમ વિચારવું શરીર આ કારમું, પુન્ય પ્રભાવથી પાસ આવ્યું;
વિષય વેરી કદી પાપમાં પ્રેરશે. ધિક્ક અવતાર છે જાવું થાવું. ૭
એમ લહી અટકવું, વેરીથી છટકવું, સ્હાયમાં શુદ્ધ વૈરાગ્ય લેવો;
આશરો એક અવિનાશીનો દ્રઢ કરી, ભક્તિનો સ્તંભ અચળ ગ્રેહવો. ૮
રાગ રઘુવર વિષે જન્મ સફળ થશે, ભોગ ભટકારથી શાંત થાશો;
વસ્તુ અલભ્યને આ તને પામશો, ભક્તિ સીડી થકી ઠેઠ જાશો. ૯
જસ કહે જાગવું હુંપણું ત્યાગવું સ્વરૂપને સમજી સંતાપ ખોવો;
દેવનો દેવ આ દેહમાં દેખવો; સાર એ શાસ્ત્રનો સમજી લેવો. ૧૦

વસ્તુ વ્હાલો ગણી મમત મોહનભણી, હરઘડી કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ ભાખું. ૨
રાજ્ય રઘુવરતણું મ્હાલવું ત્યાં ઘણું, મૈત્રિ માધવતણી રાજ્ય ચાલે;
પુર પુરૂષ[1] તણું દીપતું અતિ ઘણું, જસનું મન તે રાજ્ય મ્હાલે. ૩

૧૮.

નાથ નજર કર શીઘ્ર તું શામળા, દીનબન્ધુ નથી દૂર જાવું;
વિશ્વમાં વાસ છે વિઠ્ઠલા તાહરો, હવે ઘટે નહિ ખોટી થાવું. ૧
વાટ વ્હાલાં જૂવે શીદ સમય ખૂવે, વાર લાગ્યે વડું દુઃખ થાશે;
પ્રીતિની રીત શરણાગત નહિ જુવો, તો પછી આપને કોણ ધ્યાશે ? ૨
ચતુરતા દિલ વશી શીખ સમજુ કશી, સાનમાં શામળા સમજી જાઓ;
જસ કહે જેહને ઝંખના આપની, તે તણો હાથ યદુનાથ સાહો. ૩

૧૯.

ડરૂં હું હરિજન થકી કંપુ નહિ કાળથી, પ્રીતિ કે રીતિથી નહીંજ ફાવે;
લછનો લે ને લાયકપણું નવ જુવે, અવગુણ ઉર અનેક લાવે. ૧
મેલ મનમાં રહે મેલાં સઉને કહે, આપ સમું રે તે અન્ય દેખે;
અનુભવી શો રે ઉપકાર તેને કરે, જે કરે તે રે શ્રીહરિને લેખે. ૨
પ્રપંચમાંહી પચ્યાં માયામાં રહે મચ્યાં, આયુષ્ય એમ એળે રે ખોયું;
શુદ્ધ મન નવ થયું દેવ દર્શન ગયું, કપટીનું કષ્ટ કૃષ્ણે ન ખોયું; ૩
ઇચ્છે હરિ ઝાંખવા દોષ નવ ભાખવા, પ્રપંચ માંહિ પડતાં રે બ્હીજે;
વેઠની પોટલી જાણ વ્યવહાર છે, જસ શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ કીજે. ૪

---

[1] ઞોપાધિક ઇશ્વર

૨૦.

સારમાં સાર સુસ્મરણ શ્રી રામનું, ભૂલીને શીદ ભવમાં રે ભમવું?
ગિરિધરલાલ ગોવિન્દ આરાધવા, દેહ ધર્યાનું સાર્થક્ય કરવું. ૧
માનુષી દેહ લઈ ભક્તિ જો નવ થઈ, પશુ સમો દેહ તે તો પ્રમાણો;
લાભ મ્હોટો અતિ ભજ લક્ષ્મીપતિ, દાવ ભજવા તણો આજ જાણો. ૨
વખતસર વાવવું ફળ ઘણું લાવવું, સાહ્યમાં શ્રીહરિ સદ્ય લેવા;
સરવડાં શ્રીહરિ નામનાં જ્યાં પડે, નીપજે ત્યાં બહુ મિષ્ટ મેવા. ૩
ભાથું ભેગું કરો, કેમ કાયર ફરો, ખ્હાનું કાઢેથી બટ્ટો રે બેસે;
સ્વાર્થ સમજી હવે સદ્ય હરિને ભજો, હરિ વિના "માહરાં" કોણ કહેશે. ૪
શરણુ લે શ્યામનું, નથી કશું કામનું, રામનું નામ જપીજ લેજે;
જસ કહે ગતિ કશી તુજને નવ પડે, હરઘડી કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ કહેજે. ૫

૨૧.

("ઉઠ પ્રભાત સમર લે તું શ્રી ગણેશદેવા":—એ લય.)

નન્દના નન્દશું પ્રીત કરો પ્રાણી, ભવમાં ન રે ભમવું. (ધ્રુવ.)
સ્મરો દેવ કરો સેવ, સંસૃતિ દુઃખ જાશે;
અનન્ય ભાવે હરિ કહો તો, તે પ્રભુ ઓળખાશે. નન્દ. ૧
સાધન સજો ભોગને તજો, પછી શું છે કરવું;
કૃષ્ણ કૃષ્ણ મનથી કહેતાં, આગળ નથી ડરવું. નન્દ. ૨
નામ દયાળુ દયાનિધિ, મહાત્મ્ય અતિ મ્હોટું;
વૈભવ મળે વાસવ સમો, અન્તે થાય ખોટું. નન્દ. ૩
વચન પાળ મોહને માર, પ્રતિજ્ઞા ત્હેં કીધી,
પારખું કરવા આ પ્રભુએ, દેહ ઉત્તમ દીધી. નન્દ. ૪

વિશ્વાસઘાત મહાપાપ, જૂઠાને હરિ ઝાલે,
જોર અહીંઆં બહુ જણાવે, જમ પાસે નહિ ચાલે. નન્દ. ૫
દયા રાખ દીનતા દાખ, આપ્ય, રંક જાણી;
નથી કર્યું તે નથી મળવું; દુઃખ થશે પ્રાણી. નન્દ. ૬
વાસનાને વશ થયો, જન્મ ત્હારે નિશ્ચે રહ્યો;
ભર્યે પત્રાળે ભૂખ્યો રહ્યો, જન્મ એમ એળે ગયો. નન્દ. ૭
પ્રભુ ન ભજ્યા પ્રપંચ રચ્યા, મહામાયાએ માર્યો;
ભટક્યો ભવ અનંત યોનિ, હજી નથી તું હાર્યો. નન્દ. ૮
ગરવો થા, ગોવિન્દને ગા, પાખંડથી પ્રભુ આઘો;
જસ કહે પુરૂષોત્તમ પરખી, પ્રાણી પાય લાગો. નન્દ. ૯

૨૨.

શિવરાત્રિતણું સુખ તે શું ભણું, શિવની સંગ ઉમયાજી રાજે;
ડાક ડમરૂ વળી ભેરી વાગે ઘણું, અધિક ત્રંબાળુને તાંસા વાગે. ૧
શિવજીને નિરખવા સુરપતિ ઉતર્યા, અજ અને શ્રીપતિ શિર નામે;
આદિને અંતની જેની અવધિ નહિ, પાર એ દેવનો કોણુ પામે. ૨
લક્ષ્મીજી આવીયાં સાવિત્રી લાવીયાં, ઇન્દ્ર સહિત ઇન્દ્રાણી રાજે;
સુર સકળ આવીયા હસ્ત જોડી રહ્યા, ઉમિયા ઇશ થેઇ થેઇ નાચે. ૩
કૈલાસ કડકડયો મેરૂ ત્યાં ખડખડયો, દેવના દેવે ઓચ્છવ કીધો;
શારદ નારદ ત્યાં સ્તુતિ કરી રહ્યાં, જસ કહે શંભુપ્રસાદ લીધો. ૪

૨૩.

ધન્ય રાઘવ ગતિ ધન્ય જગતપતિ, રામ રૂપે મહીમાંહિ વસીઆ;
વીર, મહાધીર, શત્રુને સંહારવા, તાતનાં વચનથી વન વસીઆ. ૧

તાડિકાને હણી, યજ્ઞ રક્ષણ કરી, વરવા વૈદેહીને સદ્ય ચાલ્યા;
લગ્ન જોવા ગયા, જનક જમાઇ થયા, દેવ દાનવના ગર્વ ટાળ્યા. ૨
ત્ર્યંબક તોડીયું, માનને મોડીયું, રાય રાવણ તણા, ગર્વ હરીયા;
જાનકી આવીઆં માળ કર લાવીઆં, રામને ભાવીઆં, રામ વરીયા. ૩
ગર્વ ભૃગુપતિ ગયો, તાપ સહુનો દહ્યો, તેજ શ્રીરઘુવરે, તાણી લીધું;
રાય રાવણ તહીં રંક સૌ થઇ ગયા, પાણિગ્રહણ સીતાનું કીધું. ૪
અવધપુરી વળ્યા તાપ સહુના ટળ્યા, સાગર સેતુ રઘુનાથ બાંધી;
એક વચન વળી, પત્નિવ્રત પાળતા, હર્યો ભૂભારને ચાપ સાધી. ૫
પુરજન ભાવિયા, પુષ્પે વધાવિયા, રઘુપતિ રામ રાઘવ દેવા;
જન્મ સફળ જસ જાણવો તેહનો, વાણીમનથી કરે નિત્ય સેવા. ૬

૨૪.

શ્રાવણી અષ્ટમી અર્ધ નિશા હવી, ગોવિન્દ ગોકુળમાંહી આવ્યા;
ગોપિકા ગુણ ભરી નિરખ્યા નરહરિ, મોતીડે માધવને વધાવ્યા. ૧
નન્દના બાળ થઇ, બાળ ગોવાળ થઇ, ગિરિ ગોવર્ધન, કર લીધો;
ભીરૂ ભડકાવીઆ, દૈત્ય ચમકાવીઆ, દેવના દેવે, અનળ પીધો. ૨
બ્રહ્માએ વચ્છ હર્યાં, નાથે નવલાં કર્યાં, સુરપતિ શ્રીહરિ પાય પડીઓ;
સાંબનો તાત એ બળભદ્ર ભ્રાત એ, કાળીની સંગ ક્રોધેથી વઢીઓ. ૩
ગુણ એના ગાઓને, પાવન થાઓને, નામનો ભેદ નારદ જાણે;
કૃષ્ણ કૃપા કરી, રીઝીઆ શ્રીહરિ, જસ કાંઇક મનમાંહી આણે. ૪

૨૫.

કહે જસોદા તમે, જાગોને જદુપતિ, સમજુને શી રે નિદ્રાજ આવે;
ગોપી ગોવાળ આધાર ગૌ વચ્છનો, તુજ વડે સૌને આનન્દ આવે. ૧

કહાન શું કહું વળી મંડળી બહુ મળી, મધ્યમાં મોરલી મધુર વાગ્યો;
સંગીમાં જઇ વસ્યા, સમજુ કહીં નવ ફસ્યા, નૃત્યને નાદ તેવું રે ગાઓ. ૨
ચિંત્વન થાય નહિ માપ મપાય નહિ, મનમાં સમજીને મૌન રહેવું;
જોવું યુક્તિ થકી મળે મુક્તિ નકી, જસ કહે કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ કહેવું. ૩

સુદામાનું દ્વારિકાગમન.

૨૬.

શોચ શાને ધરો મન વિષે નાથજી મિત્ર માધવ છે કાં ન જાણો;
દ્વારિકા પરવરો મિત્રને જઇ મળો, રિદ્ધિને સિદ્ધિ અખૂટ આણો. ૧
મિત્ર માધવ થયા તાપ તેના ગયા, બાળપણમાં બહુ સ્નેહ કીધો;
મિત્ર મોટા બહુ રિદ્ધિ ઘરમાં સહુ, લક્ષ્મી અચળ છે અર્થ સીધ્યો. ૨
શ્રીપતિ જ્યાં વસે દૈન્ય ત્યાંથી ખસે, લક્ષ્મીજી ત્યાં રહ્યાં લ્હાવ લેવા;
આપશે બરબરૂં માન પામો ઘણું, એક છે એજ દેવાધિદેવા. ૩
સુર જેને નમે સિદ્ધિ પાછળ ભમે, યોગી અવધૂત સૌ ધ્યાન ધરતા;
દીનતા દુઃખ શાં વેઠવાં આપણે, મિત્ર માધવ આ જગતકરતા. ૪
કામિની કરગરી કહેતી ત્યાં વળી વળી, નાથ નિશ્ચે હવે ત્યાંજ જાઓ;
માન પામો નહિ જો પતિ માહરા, તો પછી સત્વરે ઘેર આવો. ૫
સમજી જન જાચતા દેહ નવ પામતા, માગતા એક અવિચળ સ્થિતિ;
યદુપતિ પામવા દુઃખ સહુ વાસવા, જરા સાધન અનન્ય પ્રીતિ. ૬

૨૭.

સુદામો સજ્જ થયા, વેગે વળતા ગયા, દ્વારિકા જઇ દીનાનાથ નિરખ્યા;
માગવું શું અહીં શાંતિ મુજને થઇ, કરીને દર્શન દીલમાંહી હરખ્યા. ૧
મિત્રને દેખીઆ ઇશ સમ લેખીઆ, આવો આવો કહી મુખ જોતા;
પ્રીત આધિન છું પ્રાણ મ્હારા તમે, શીઘ્ર સેવા કરો શ્યામ કહેતા. ૨
ચરણ લક્ષ્મી ધુવે મુખ લલિતા લુહે, થાળ લઇ સદ્ય સત્યભામા આવ્યાં;
કર ઝારી ધરી બીડી સુન્દર કરી, રેવતી રૂઠાં આસન લાવ્યાં. ૩
માનિની બહુ મળી સેવતી સહુ મળી, પ્રભુ રીઝાવવા પ્રીત કરતી;
વિપ્ર વચમાં કરે સ્મરણ શ્રીશ્યામનું, સુન્દરીઓ સહુ પાસ ફરતી. ૪
પ્રીતથી હરખીઆ રીતથી રીઝીઆ, ભાવ ભુધરનો બહુ રે દેખી;
કોણ મારૂં ગજું અન્યને નવ ભજું, આશ્રય શ્રીહરિ એમ લેખી. ૫
શ્રીહરિ એમ વદે 'હે સુદામા સખે! આવો પધારીએ મિત્ર પ્યારા;'
તાંદુલ આરોગતાં કષ્ટ સહુ કાપીયું, "કહેજો ભાભીને પ્રણામ મ્હારા". ૬
પ્રભુને જે ગમે જગત તેને નમે, કૃષ્ણકૃપા એ કારણ મ્હોટું;
જસ જયમ ત્યમ કરી એ કૃપા મેળવો, બાકી થયું ગયું સર્વ ખોટું. ૭

૨૮.

સુદામો નીસર્યા ગામ ઘર વિસર્યો, ક્યાં ગઇ પ્રેમદા બાળ મ્હારાં;
આ તો છે ધામ કોઈ ધનપતિ શેઠનાં, પુન્ય પૂર્વે કર્યાં જેણે સારાં. ૧
સુંદરી શું ગઇ બાળ નાઠાં કહીં, જર આપી ઘર લઈ રે લીધાં;
નાણું જેને મળે મહેલ તે તો કરે, આપણે સુકૃત્યો કાં ન કીધાં. ૨
મિત્ર પાસે ગયો લાભ કંઇ નવ થયો, કામિનીને કહે લોભ લાગ્યો;
તદપિ સારૂં થયું સત્ય મ્હારૂં રહ્યું, કૃષ્ણ પાસે નવ દામ માગ્યો. ૩

માગતું નવ ફરી મશાન ગયા નહીં, બીજાથી કૃપા કોની ન જાચે;
જન્મ આપ્યો જદા પાળશે તે સદા, માગે ગહેલાલ કોને ન યાચે. ૪
ભક્તિ એક માગવી બીક સહુ ભાગવી, આપ્યું તે પામીએ એમ જોવું;
ભાગ્યમાં જે હશે તેજ આગે થશે, માગીને માન શાને રે ખોવું. ૫
ભક્ત માગે નહિ આશરો લે સહી, કહું શું જાચવું માન ખોવા;
જશ કહે કૃષ્ણ ભક્તિ મને આપજો, માગું હું એક દેવાધિદેવા ! ૬

૨૯.

નાર આતુર તણી વાટ જોતી ઘણી, નાથ શું ત્યાં રહ્યા નગર દેખી;
સુખ સહુને ગમે ભૂખે અહીં કોણ ભમે, સ્વામીએ પરહરી રંક લેખી. ૧
નાથ આવ્યા નહિ શોગ કરતી સહી, વિણ સૌભાગ્ય શું સુખ રહાવું;
પતિ વિણ પ્રેમદા સુખ ઇચ્છે કદા, રાનમાં ગાન જેવું રે ગાવું. ૨
કામિની કંથ વિણ હોય જો ગુણ વિન સુખ ઇચ્છે પણ દુઃખ દાખે;
નીતિ વિણ સુખ ઇચ્છે નથી આવતું, શાણી શ્યામા રે વૈરાગ્ય રાખે. ૩
સાધવી નાથનું ધ્યાન મનમાં ધરે, મહેલથી ત્યાં નિજ નાથ દેખ્યા;
તેડી લાવ્યો સખી નાથ સુજ એ નકી, પ્રેમ આધિન પરમેશ પેખ્યા. ૪
હેતે હળ્યાં મળ્યાં કૃષ્ણ ભજન ફળ્યાં, આશરો રાખી અહર્નિશ ગાઓ;
જશ કહે જન્મ આ ધરીને જીવ્યાં ભલું, માનુષી દેહનો એજ લહાવો. ૫



શ્રી રણછોડરાયજીની ડાકોરમાં પધરામણી.

૩૦.

નાથને નિરખવા બોડાણો આવીઆ, બાંહ્ય ઝાલી, પ્રભુ બોલ દીધો;
મ્હારે ને ત્હારે તો સ્નેહ સબળ થયો, ઘેર આવીશ તુજ, કોલ કીધો. ૧
વ્હેલ લઇ આવજે પ્રગટ કહીં નવ થજે, ભાવનો ભેદ તો હોય છાનો;
મ્હારી ઇચ્છાએ આ જગ સહુ અનુસરે, રોકવા, ટોકવા ભાર કોનો ? ૨
નિશાએ નાસશું ઘેર જઇ ગાજશું, જઇને ખાખરીએ ખોંખારો કરશું;
ગુગળી ઘેર વઢવા કદી આવશે, આપણે કંઈક ત્યાં યુક્તિ કરશું. ૩
તુળસીએ તોળજે હામ નવ છોડજે, ભક્ત માટે બહુ ભેદ કરવો;
જેમ તેમ રાખવો ભાવ એક દાખવો, તાપ ત્હારો મારે સર્વ હરવો. ૪
મ્હારો જે જન થયો વશ તેને રહ્યો, વૈકુંઠ પરહરી પ્રીત જોતો;
સાધન ભક્તિ એક પામવા મુજને, અન્ય સાધન નહિ, એહુ જોટો. ૫
મહેતાનો શેઠ થઈ મોસાળું લઇ ગયો, સ્તંભમાં હું રહ્યો ભક્ત માટે;
પ્રેમીને પાળતો દુઃખ સૌ ટાળતો, જસ ભક્તિ કરે શિર સાટે. ૬

૩૧.

ડાકોર ગામની શોભા ચાર ધામની, રાય રણછોડજી જ્યાં બિરાજે;
દુર્લભ દર્શન છે દીનાનાથનું, ગોમતી નીર ગંભીર ગાજે. ૧
ડાકોર દેખતાં નાથને નિરખતાં, આનન્દ ઉરમાંહી રે જાગે;
ઘુમટ ઉંચો અતિ નાથ મન્દિર તણો, સમીપ સિંહનાદ નોબત વાગે. ૨
રણછોડરાય ધણી લક્ષ્મી લીલા ઘણી, પૂનમે જ્યારે પરઠંદા વાગે;

જન અતિ જોરમાં દર્શનના કોડમાં, પ્રેમે નિરખે અને પાય લાગે. ૩
દર્શન થાય છે પાપ સઘ જાય છે, સુખ સહુ ત્યાં છે વૈકુંઠ જેવું;
નાથને નિરખતાં પ્રેમથી પરખતાં, સ્વરૂપ સુંદર અલૌકિક જોવું. ૪
દ્વારિકાં પરહરી ગુર્જર પાવન કરી, ભક્ત બોડાણાનું દુઃખ ભાગ્યું;
ભકતને કાજ સંકટ પ્રભુએ સહ્યું, ગોમતી ગુપ્ત ત્યાં તીર વાગ્યું. ૫
ફરકે ચારૂ ધ્વજા નિરખો ચતુર્ભુજા, આનન્દ ઉરમાં થાય ભારી;
જસ કહે શું કહું નાથના જસ બહુ, પ્રેમે પાયે પડી જાઉં વારી. ૬

૩૨.

ગોમતી ઘાટમાં શ્રીપતિ ઠાઠમાં, મન મોહ્યું હવે ક્યારે જાવું;
દર્શન પામીને દુઃખ સહુ ટાળવું, પતિતને ત્યાંજ પાવન થાવું. ૧
ભ્રાંતિ સૌ ભાગવી ભક્તિ એક માગવી, શાન્તિ સ્મરણ વિના નહિ રે આવે;
ભાવને વશ ભુધરજી નિત્ય છે, પ્રેમીને સદ્ય પ્રત્યક્ષ કહાવે. ૨
પૂનમે પૂજવા દેવ સહુ જુજવા, સ્વર્ણ માંહે સહુ ઘાટ જોવા;
આરોપ સર્વ અળગો રહ્યો જે ઘડી, નિરખવા એક દેવાધિદેવા. ૩
સુકર્મથી સાધવો પ્રેમથી બાંધવો, ઉપાસ્યનો અનુભવ એમ કરવો;
ગ્રંથિ સહુ છૂટતાં મોહ સહુ તૂટતાં, તેજ હું એમ નિશ્ચય ધરવો. ૪
મહાધન નિરખીશું હેડું ત્યાં હરખીશું, દ્રષ્ટિથી દૂર તે તો ન જાયે;
દ્રવ્ય દર્શન વિના દીનને દુઃખ બહુ, અન્ય ઉપાયે શું સુખ થાયે? ૫
પાપ અટકે જદા પુન્ય પ્રકટે તદા ડાકોરનાથ દર્શન પામે,
કરશે માધવ દયા, દોષને દૂર થવા, જન્મ મરણનું દુઃખ વામે. ૬
સદ્ય સ્મરણ કરો જસ કહે ભવ તરો, વખત વીતી જશે શુંય કરશો?
ઉડતાં શીખજો સમય છે આ ઘડી, નહિ તો પીંજર આવીરે પડશો. ૭

૩૩.

ગોમતી ગંગ પ્રભુએરે પાવન કરી, તીર પર ત્રિકમજી બીરાજે;
સુરસરિતા સમી નિશ્ચે જન જાણજો, પ્રેમે ન્હાતાં સદ્ય પાપ નાસે. ૧
ગુપ્ત ગોવિન્દ થયા જળમાં આવી રહ્યા, ભક્તને કાજ એ કાર્ય કીધું;
ધન્ય બોડાણાની ભક્તિ ભૂતળ વિષે, અરૂપીએ રૂપ દર્શન દીધું. ૨
ગુગળી આવિયા ગોષ્ટિ બહુ લાવિયા, ભક્તનો ભાવ ભગવંત જોયો;
લોભીઆ લડત ફાવ્યા નહિ તે ઘડી, ત્રિકમા પાસ નિજ તોલ ખોયો.૩
ચરણ જળમાં ધરી પ્રભુએ પાવન કરી, નાહી ત્યાં નાથ દર્શન કરવાં;
દેહ માનવતણો લાભ છે અતિ ઘણો, પ્રભુને પામી સહુ પાપ હરવાં.૪
કાળ સહુ વહી જતો આયુષ્ય લઇ જતો, ચોરને ચતુર નર નિત્ય જોતા;
રિદ્ધિ સહુ રાધિકાવરને અર્પણ કરી, આયુષ્યમાંહી અસંગી રહેતા. ૫
દેહથી જુદા થયા ભય દેહના ગયા, દૂર રહી, નિત્ય દર્શન કરવું;
જસ કહે કૃષ્ણ કૃપાએ સર્વે ફળે, આવ્યા તે આવ્યા, પાછા ન ફરવું.૬

૩૪.

ધન્ય ડાકોરને ધન્ય ડાકોરને, ધન્ય બોડાણાએ શ્રમ લીધો;
નામ ગંગાબાઇ ગુણ ગંગા સમા, ભૂધરે ભુવને વાસ કીધો. ૧
વર્ણ ક્ષત્રી તણો, મોહ માર્યો ઘણો, ભવ છોડીરે ભગવંત ગાયો;
દેવ દાનવને વશ જે દેવ નહિ, ગાડે બેસાડી ગોવિંદ લાવ્યો. ૨
નાથ લક્ષ્મીતણો, ઢળી પડયો અતિ ઘણો, પરમ ઉપકારી પરમેશ પૂરો;
મોહના મારમાં કેઇક ખવાઇ ગયા, તમને ભજનાર તે શ્રેષ્ટ શૂરો. ૩
ચાહ્ય તેને તમે ચાહોછો હે પ્રભુ, ધાય તેને તમે શિઘ્ર ધાઓ;
રંક ઘેર રાય સેવા કશી થાય, એ ન્યાય લક્ષ્મીપતિ લક્ષ લાવો. ૪

જેમ તેમ જાળવો, ભક્તનો માળવો, મ્હારો કહેવામાં મોટાઇ માનો;
રાજને કાજ કરવુંરે રંકો તણું, વડું હોય તેને વિકાર શાનો? ५
પ્રહાર ભૃગુએ કર્યો, અવગુણ નવ ગણ્યો, હરિએ સ્તુતી કરી શાન્ત કીધો;
ગોપ ગૌ પાળવા, દુઃખ સહુ ટાળવા, પ્રેમ આધિન પાવક પીધો. ६
ભાજીથી ભીંજીઆ બોરથી રીઝીઆ, કમળની ભેટ લઇ કષ્ટ કાપ્યું;
અન્ય અધિકાર જોતા નથી, હે હરિ! ભક્તને આપવું યોગ્ય લાગ્યું. ७
શ્રેષ્ઠ સુરતરૂ કહે મણિનો મણિમા લહે, આપમાં છાપ સૌ ન્યૂન લેખું;
જસ કહે કૃષ્ણ ભક્તિ મને આપજે, તુજ વિના અન્ય દ્રષ્ટે ન દેખું. ८

૩૫.

ધન્ય રાઠોડ રજપુતની ન્યાતમાં, જન્મ ધરીને તેં જસ લીધો;
રાજ્ય ને પાટ મૂકાવીયું રાયનું, રાય રણછોડ તેં વશ કીધો. १
રાય રીઝે બહુ રિદ્ધિ આપે સહુ, પણ તે ઘેર તેને ન જાતા;
ઘેર ત્હેં રાખીયા શ્રીપતિ જદુપતિ, ધન્ય બોડાણા ત્હારીરે માતા. ૨
ભક્તિની હદ્દ થઇ બાંહ્ય હરિએ ગ્રહી, કૃષ્ણ જેના થયા જગત જીત્યા;
ધન્ય આયુષ્ય એ ધ્યાન ગોવિંદનું, કાળ ને કર્મના દોષ ફીટયા. ૩
નામ મ્હોટું અતિ કાર્ય છાનું નથી, નામથી વાલ્મિકે નાથ પામ્યા;
અજામેલ ઉદ્ધર્યા જન કંઈ સુધર્યા, નામે નામી મળ્યા દુઃખ વામ્યાં. ४
પૂર્વ પુણ્ય જાગશે ધ્યાન એક લાગશે, પ્રભુ નિરખીને પ્રપંચ ખોજો.
જસ મન વશ રહેજોરે તુંમાં મળી, સ્મરણ આપીને સામું રે જોજો. ५

ગરબીઓ.

૧.

પ્રબોધ.

("રામ લક્ષ્મણ વનમાં સિધાવતા":—એ લય.)

રામ ભજીયે રૂડા મન ભાવતા,
જેથી કળિના કિલ્મિશ જાય; રાજી રામ થાય,
ભજીયે રામ ભાવથી. ૧
દેહ મનુષ્ય તણો શ્રેષ્ઠ જાણવો,
અન્ય દેહે નથી અધિકાર, કર્તાને સંભાર. ભજીયે. ૨
સુખ સાચું નથી રે સંસારમાં,
એતો વૃત્તિનારે વિકાર; સ્વપ્ન જેવું સાર. ભજીયે. ૩
જન જગમાં કંઈ જુકતી કરી રહ્યા,
પણ પામ્યા ન શાન્તિ કે સુખ; એવું માયા રૂપ. ભજીયે. ૪
ઘણું ભટકયા પણ ભવને ન ભેદિયો,
નવ સમજ્યા શ્રીનું જે સ્વરૂપ; પડ્યા ભવકૂપ. ભજીયે. ૫
દયા કરીને કહે દયાનિધિ,
મારીમાયા તણો નહિ તાગ; છએ નહીં પાગ. ભજીયે. ૬
અંતર માંહીં દીપક અજવાળજો,
જેથી તીવ્ર તિમિર ટળી જાય, રીઝે વ્રજરાય. ભજીયે. ૭
જાગી જોને તું જગ કરતારને,
આવ્યો અવસર એળે ન જાય; પછી તું પસ્તાય. ભજીયે. ૮

જે જન જાગ્યા તે જગમાં જીત્યા સહી,
નથી ખોટામાં થયા ખુવાર; ભજ્યા ભવતાર. ભજીયે. ૯
નારદ ઉદ્ધવ ભીષ્મપિતા હુવા,
જેનું મન વાસુદેવની માંય; હનિંશ ગુણ ગાય. ભજીયે. ૧૦
ભાવે ભક્તિ કરી એને ભેટજો,
રહે છે ભક્ત કેરી એ પાસ; હેતે ગ્રહે હાથ. ભજીયે. ૧૧
અસુરો વૈરભાવે ભજી ઉદ્ધર્યા,
પાપી પ્રલંબક કેશી કંસ; હરિ દયાવંત. ભજીયે. ૧૨
એ છે સ્વભાવ જગકર્તા તણો,
જેમ પારસ લોહ પરસાય; કંચન લોહનું થાય. ભજીયે. ૧૩
પ્રાણી પૂર્વનાં પુન્ય ઉદય થતાં,
નેહે નિર્મળ નામમાં ન્હાય; હરિ જસ ગાય. ભજીયે. ૧૪

૨.

દેવીનો ગરબો.

("નારાયણ નામ લેને તું પ્રાણીરે" :—એ લય.)

દેવી તમે જગત તણી જાતા;
વર્ણન કરીએ શું, અંબે માતા. દેવી. ૧
નાનાવિધિ નોતમ ખેલ ન્યારા,
અંદર બ્હાર વશી રહ્યાં એક બાળા;
અદ્દભુત લીલા કોણ છે ગણનારા. દેવી. ૨

ભેદ છેદ દેખાડો, મા જ્યારે રે,
ચતુરાઈ ડહાપણ જાય ત્યારે રે,
દેવો પણ દુખીઆ તે વારે. દેવી. ૩
ભજે તમને ભક્ત થઈ રાજી,
સ્વરૂપ સત્ય દેખાડો માજી;
પછી કૂટચ સર્વ ગઇ ભાગી. દેવી. ૪
શક્રાદિક સેવી રહ્યા જેને,
મહેષ શેષ પ્રશંસી રહ્યા જેને;
તેત્રીશ કોટિ ધાઇ રહ્યા જેને. દેવી. ૫
સ્વરૂપ માનું શુદ્ધ સબળ સારૂં,
જસ, જોયે મનનું મટે અંધારૂં;
અંબા કૃપાથી થાય [1]અજવાળું. દેવી. ૬

૩.

શ્રી તુલસીનો ગરબો.

(" સમર મન કૃષ્ણ હરે હરેઃ " :—એ લય)

તુલસી પધાર્યાં આ સમે રે, ભવનાશિની ભક્તને બહુ ગમે રે. (ધ્રુવ.)
તુલસી ત્રિલોકપાવની, વિષ્ણુ ચરણમાં વાસ,
પુરૂષોત્તમને પ્રિય ઘણાં, માટે નમુંછું ખાસ;
મા અરજ કરૂં હું એટલી રે, તુલસી. ૧

---

૧ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ચંડીસ્તવ.

જગજીવન જમતા તદા, જ્યારે હો તમે પાસ,
માધવ મૂકી નવ જમે, ભોજન દાનમાં ખાસ;
કમલાપતિ કંઠે ધરે રે. તુલસી. ૨
લીલાલ્હેર લીલાં કરો, કૃષ્ણ કરો કલ્યાણ;
મંજરી સુરમુનિ સેવતા, સ્પર્શ થકી કલ્યાણ.
મા વંદનથી વૈકુંઠ મળેરે. તુલસી. ૩
કાર્તિકે કલ્યાણી તણા, વિવાહ ઉત્સવ થાય,
ગરૂડ ચ્હડી ગોવિંદજી, પરણવાને જાય;
દિન પ્રથમ પક્ષ એકાદશી રે. તુલસી. ૪
ત્રિલોકી ત્યાં તો મળે, દીપદાન ત્યાં થાય;
વેદાશિષ વિપ્રો વદે, મહામંગળ વરતાય.
ત્યાં સમસ્ત જન સેવા કરે રે. તુલસી. ૫
કેશવજી કર સાહી રહ્યા, ચૌદ લોકના નાથ,
ચુડી ચોળી ચુંદડી, પ્હેરી બેઠાં સાથ;
મહા મંગળ ત્યાં વર્તાઈ રહ્યાં રે. તુલસી. ૬
અખંડ એવાતણ થયું, શ્રીવર વર સાક્ષાત;
સુકૃત શું જાણું નહિ, સમજાવોને માત.
પરિક્રમા જસ પ્રેમે કરે રે. તુલસી. ૭

૪

પ્રાર્થના.

(" ખીરદાળી રે બહુચર માત " :—એ લય).

કરૂં સ્મરણ શ્રીના નાથ, સંકટ ભાગોને.
હરિ હેતે ઝાલો હાથ, સંકટ ભાગોને.

વાત સર્વ વનમાળી જાણો, શી રીતે પ્રભુ કહીએ રે,
સબળ પક્ષ સામળીઆ ત્હારો, જેમ રાખો તેમ રહીએ. સંકટ. ૧
દુઃખ નથી દામોદર બીજું, ભજન ત્હારૂં ભૂલાય રે;
ઈચ્છા નહિ અવિનાશી બીજી, સ્મરણથી શાન્તિ થાય. સંકટ. ૨
લેવું કંઇ નહિ દેવું કંઇ નહિ, ગડબડમાં ગયા દહાડારે;
મિથ્યામાંહી મોહ વર્ત્યો છે, ગુણ તારા નવ ગાયા; સંકટ. ૩
સહાય કરી સામળીઆ સૌને, કહો કેમ કરી ગણાવું રે,
પ્રીતતણી પત રાખો વ્હાલા, ઓશીંગળ કેમ થાઉં. સંકટ. ૪
મન કાચું તો સહુ છે કાચું, કામ ન આવે એક રે,
વાસુદેવ છે વશ તમારી, ત્રીકમ રાખો ટેક. સંકટ. ૫
ગરજ ગણો તોએ પણ ગોવિંદ, છે એ સાચી વાત રે,
પણ જન ઇચ્છે તે નવ ઇચ્છું, જાણો છો જગતાત. સંકટ. ૬
હાને જાણો નાને જાણો, ન્યારા રહીને નિરખો રે,
સાક્ષી હું સમજીને વર્તે, તેને દેખી હરખો. સંકટ. ૭
ગુરૂ કૃપા વિણ ગમ પડે નહિ, બાકી બીજી ખટપટરે,
જ્ઞાન વિના ગોવિંદ કેમ મળશે, બીજી માયાની લટપટ. સંકટ. ૮
ભક્તિ કરતાં ભેગું થશે, શુદ્ધ હશે સંસ્કાર રે,
વગસગ વ્હાલાને છે નહિ, જસ સમજી ભજજો સાર. સંકટ. ૯

૫.

બોધ.

("ગરૂડે ચડી આવજો ગિરિધારી":—એ લય).

મનુષ્ય દેહે મોક્ષનો લ્હાવ લઇએ,
ફરી દાવ મળે ન અન્ય દેહે. મનુષ્ય.

દેહ મિથ્યા પ્રપંચ પ્રમાણો,
એને વારિનો બુદબુદ જાણો;
લાભ મોક્ષનો ઉરમાંહી આણો. મનુષ્ય.

ઇશે મોંઘો મનુષ્ય દેહ દીધો,
ગફલતમાં ગુમાવીરે દીધો;
તેમાં ત્હારો અરથ શો સીધ્યોં. મનુષ્ય.

ષટ્શાસ્ત્ર વળી એમ ભાખે,
સ્વરૂપ શોધ્યાથી સારજ લાધે;
સ્થુળ સૂક્ષ્મ કારણની એ આગે. મનુષ્ય.

મહાપુરૂષોનો મારગ સાહીયે,
તેથી વિવેક વૈરાગ્ય લઇએ;
દયા શાન્તિ નીતિ સત્ય ગ્રહીયે. મનુષ્ય.

પ્રથમ વિવેક વૈરાગ્ય થાય,
હું ને મ્હારૂં તેની ભ્રાન્તિ જાય;
વાસુદેવ આ નિશ્ચય થાય. મનુષ્ય.

અનન્ય ભક્તિ અહોનિશ ચાહિયે,
ભાવ પૂર્ણથી ભેળાં થઇએ;
એ તો અદ્વૈત સિદ્ધાન્ત કહીએ. મનુષ્ય.

[1]ઈશ કૃપા અતિ ઉગ્ર થાશે,
હૃદય સ્વચ્છમાં ઈશ ઓળખાશે;
અંતર અરીસે મુખ દેખાશે. મનુષ્ય.

---

१ जन्मांतरसहस्रेण तपोध्यानसमाधिभिः ।
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥—પાંડવગીતા.

નિજ સ્વરૂપ જાણ્યે દેહ કેવો,
આત્મા અંતરે ઓળખી લેવો;
મોહ જગતનો ઝાંઝવા જેવો. મનુષ્ય.
કોઇ ચતુર્ધા મુક્તિ ચહે છે,
વિવિધ આશાએ બાંધ્યાં વહેછે;
ભ્રાન્તિ ભાગ્યા વિણ ભ્રમણ કરેછે. મનુષ્ય.
મુક્તિ આ દેહે શાસ્ત્ર વિચારો,
સતસંગ અહોનિશ ધારો;
જમે આ દેહમાં નથી ઉધારો. મનુષ્ય.
જયમ ત્યમ રામ હૃદયમાં રાખો,
પ્રેમે પરખી પછી પાય લાગો;
જાણો રખે રમાપતિ આઘો. મનુષ્ય.
ગીતા ગોતો શોધો નિજ ઘટમાં,
જેમ તંતુ વ્યાપી રહ્યો પટમાં;
બાકી પડવું છે ખટપટમાં. મનુષ્ય.
માધવ મંદીરમાંહી વસીયા,
જોવા અજ ઉમિયાપતિ ધસીયા;
જાણે અનુભવી જે જન રસીયા. મનુષ્ય.
હરિ અકળ સ્વરૂપ છે એવું,
મુંગે મુંગા રહેવા જેવું;
ઉગ્ર કૃપાએ અનુભવી લેવું. મનુષ્ય.
જેને ભાવ ભક્તિ થશે સારી,
તે તો એ પદના અધિકારી;
ગુણ ગાઇએ શું જુવો વિચારી. મનુષ્ય.

કામ ક્રોધ મોહ ચોરી કરે છે;
અમુલ્ય આત્મ વસ્તુને હરે છે;
જીવ સમજ્યા વિણ સંગ કરે છે. મનષ્ય.
તૃષ્ણા ત્રિવેણીમાં વહે છે,
મિથ્યા મોજામાં મન રીઝવે છે;
ફળ વિના બહુ શ્રમ લેછે. મનુષ્ય.
ચિંત્વન ચિત્તના દષ્ટાનું કરીયે,
જેથી મોહસાગરમાં ન મરીયે;
વિચારવહાણે બેશીને ફરીયે. મનુષ્ય.
અહીં કર્તવ્ય એવું કરવું,
ફરી ન રહે મરવું અવતરવું;
નિશ્ચે પદ એવું હૃદયમાં ધરવું. મનુષ્ય.
સગુણ નિર્ગુણ ભ્રાન્તિરે છોડો,
એક વિષે ઉભય લક્ષ જોડો,
તત્વ નિહાળી તર્કને તોડો. મનુષ્ય.
વિચારે સૌ વધરા જાશે,
આત્મા આપે આપ જણાશે;
નિશ્ચે સરિતા સિંધુમાં સમાશે. મનુષ્ય.
જેના ગુણ સુર શેષજી ગાય,
મોટા મુનિવર ધ્યાનમાં ધાય;
જેના નામથી કિલ્મિશ જાય. મનુષ્ય.
જેનો વેદ તે ભેદ ન પામે,
રસના વરણ કરીને વામે;
પૂર્ણ પાત્રમાં એ રસ જામે. મનુષ્ય.

જુવો ભક્ત પ્રલ્હાદજી કેવા,
ધ્રુજી જાણો તમે વળી તેવા;
શુક વ્યાસજી વંદવા જેવા. મનુષ્ય.

અર્જુન નારદ વિભીષણ જાણોં,
અમરીશ હનુમંતનેરે વખાણો;
સો એ ભક્તિપ્રસાદ પ્રમાણો. મનુષ્ય.

સ્નેહે નરસિંહ ભક્તને મળીયા,
મીરાંબાઇને ભાવથી વરિયા;
જેવી ગમ તેવા તેને ફળીયા. મનુષ્ય.

દાન દયા અતિ સુખકારી,
સાધન મોક્ષમાં એ અતિ ભારી;
કરી નિષ્પાપ થાય નરનારી. મનુષ્ય.

નેહે નારાયણ નામ લઇયે,
કોડે કૃષ્ણજી કૃષ્ણજી કહીયે;
પૂરણ પ્રીતે પ્રભુ પ્રીછી લઇએ. મનુષ્ય.

મહા સુખ વિચારે તે માણે,
દેહ નહીં મળે ટાંણે ને નાણે;
કોઈ વિવેકી જન જશ જાણે. મનુષ્ય.

૬.

હરિ સેવા.

(" ગભર એસી લટકસેં ચલના ":—એ લય.)

હરિ દેહદેવળમાં બેઠા,
મેં તો સર્વ સ્થળે એ દીઠા રે.[1] હરિ. ૧
બહુ ખોળોને ખેપ કરીને,
જુવો પ્રીતિથી ભાવ ધરીને રે. હરિ. ૨
મન મેલું થતાં જર જાશે,
કર દીપક દ્રવ્ય દેખાશે રે. હરિ. ૩
જડયે દુઃખ ને દીનતા જાશે,
જુઓ રત્નનો અર્ણવ પાસે રે. હરિ. ૪
શ્રમ સાચવવાનો ન સહેવો,
આનંદનો અનુભવ લેવો રે. હરિ. ૫
શીદ દોડીને દાખડો કરવો,
શોધ્ય ઘરમાં ગોવિંદજી ગરવો રે. હરિ. ૬
શીદ સંશયથી શુદ્ધ અગાડે,
નથી બેઠો એ ઓથની આડે રે.[2] હરિ. ૭
પડો પ્રેમના પૂરમાં પ્રીતે,
હરિ મળશેજ એવી રીતે રે. હરિ. ૮
મહા પુન્યે પ્રભુ ઓળખાશે,
જશ તન મન તે દેખાશે રે. હરિ. ૯

---

૧ करामलकवत्.
૨ ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ॥ શ્રી. ભ. ગીતા

૭.

વિવેક વિચાર.

("ડુંગર ન કોરીશ રે, ઘર ન ચણીશ રે તારે જાવુંરે ભમરા નોતરે":—એ લય.)

આવો બેનો આજ રે, કરીએ રૂડાં કાજ રે,
આ ફેરામાં અવસર રૂડો આવીયો રે. ૧
દયાળુએ દેહ દીધી, માનુષી દેહ મોંઘી કીધી;
શામળીયાએ શુદ્ધ લીધી, આ વારમાં રે. ૨
શરીરને શોધો રે, મનને રોકો રે;
દેહ દેવળમાં દેવ બીરાજે છે રે. ૩
માધવની ભક્તિ કરો, મોહ માયાને સહેજે તરો;
વાસુદેવ વિચાર્યે, જીવ જગદીશછે રે. ૪
શાસ્ત્ર વેદાંત તે ભાગે મનની ભ્રાંતરે;
સંશય ટળીયા, માધવ મળીયા, મહેલમાં રે. ૫
પચીસની પાર છે, અખિલ આધાર છે;
સારનું સાર છે જુગતે જોની રે. ૬
ધાતુમાં એ બેઠો દેવળમાં એ દીઠો,[1]
શામળીયો સચરાચર શોધી કાઢજે રે. ૭
રાજી પ્રભુ થાશે રે, જીવપણું જવ જાશે રે;
પુરૂશોત્તમ પાસે રહ્યા નિહાળજે રે. ૮
નારાયણનું નામજ દઇયે, મુખ થકી શ્રીકૃષ્ણજ કહીયે;

---

૧ देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सदाशिवः ॥
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोहंभावेन पूजयेत् ॥

અજામેળ આદિ રે નામે ઓધર્યારે. ૯
ભક્તિ કરી ભળવું, પ્રપંચ મુકી પળવું;
મન ઠરાવી ઠરવું ઠાકોરમાં રે. ૧૦
તપ તીર્થ ને વૃતાદિ કરવું, હું કતા મનમાં નવ ધરવું.
કર્તા, હર્તા, કરનાર વિચારજે રે. ૧૧
સર્યાતિએ હુંપદ કીધું પુન્ય સઘળું પટકી દીધું,
અહંકારે સર્યાતિ હેઠા ઉતર્યા રે. ૧૨
જસ કહે જન જાગોરે, મોટપ મમતા ત્યાગો રે,
સ્વપ્નાની સામગ્રી સુખ સૌ જાણજે રે. ૧૩

૮.

પરમસ્થાન.

("લટકાળો રે ગિરિવરધારી":—એ લય.)

મન નિશ્ચે માધવને મળજે,
કરી પ્રીતિ પ્રભુશું ભળજે રે. મન. ૧
એને મોહ્યા પછી નવ મ્હોવું,
એને જોયા પછી નવ જોવું રે. મન. ૨
એને અવયવ અવસ્થા છે નહીં,
એ ન્યારો સરવથી છે સહી રે; મન. ૩
એને સગુણ સૌમાં જોવો,
એને ઉરમાં અબાધિત લેવો રે; મન. ૪
એને સૂર્ય શશી નવ દેખે,

કોઇ મુક્તજ મનથી પેખે રે; મન. ૫
એ સત્ચિત્ અનુપમ કહાવે,
જસ અનુભવે આનંદ [1]આવે રે. મન.

૯.

કાળની ગતિ.

("આવજો આવજો આવજો રે કાલે વ્હેલાં નિશાળે આવજો":—એ લય.)

જાય છે જાય છે જાય છે રે,
દેહ મોંઘો મનુષ્યનો જાય છે;
શીદ ખોટામાં ખોટી થાય છે રે. દેહ. ૧
પાપને પુન્યનો સરખો સરવાળો,
મનુષ્ય દેહ પમાય છે રે; દેહ. ૨
ભગવત ભજનથી ભવ દુઃખ ભાગે,
મોક્ષ આદિ મેળવાય છે રે. દેહ. ૩
પંચ વિષયમાં પ્રાણી રે પડીયો,
ભોગ ભોગ્યા થકી ભય થાય છે રે.[2] દેહ. ૪
આ સારૂં આ નરતું કરતાં,
મણી પત્થર સાથ પટકાય છે રે. દેહ. ૫

---

૧ यं लब्ध्वाचापरं लाभं मन्यते नाऽधिकं ततः । શ્રી. ભ. ગીતા.
૨ भोगेरोगभयम्. ભર્તૃહરિ.
૩. किं भद्रमभद्रं वा द्वैतस्यावस्तुनः कियत् ।— શ્રીમદ્ ભાગવત.

મનની કુટુંબ કમાણી કલ્પના,
ખોટામાં કાળ ખોવાય છે રે. દેહ. ૬
કૈક ગયા કૈક જાય જોતામાં,
અરે મિથ્યામાં શું મોહ થાય છે રે. દેહ. ૭
જગકર્તાને જાણી રે લેવો,
જન્મ મરણ દુઃખ જાય છે રે. દેહ. ૮
જગકર્તાની સૃષ્ટિ રે જોતાં,
મહા દિવ્ય રચના દેખાય છે રે. દેહ. ૯
યશ કુટુંબ ધન મિથ્યા સર્વે,
સુખ સ્વરૂપ સમજે થાય છે રે. દેહ. ૧૦
જશ કહે જન જુવોને જાગી,
મહાપુન્યે પ્રભુ પમાય છે રે. દેહ. ૧૧

૧૦.

ભગવત લીલા.

("લટકાળો રે ગિરિવરધારી":—એ લય.)

વ્હાલે ગોકુળમાં ગૌચારી,
શશી મુખ પર જાઉં વારી રે. વ્હાલે. ૧
વ્હાલે વાસવ વૃષ્ટિ નિવારી,
અંગુલીએ ગિરિવર ધારી રે. વ્હાલે. ૨
ઋષિનારી રાધાવરે તારી,

પાપી પુતનાને સંહારી રે. વ્હાલે. ૩
કામ કેશી તણો ગર્વ તોડયો,
ક્રોધ કંસના ઠામને ફેડયો રે. વ્હાલે. ૪
વિવેક વાસુદેવ મોહ ઉપજાવ્યો,
ધી દેવકીયે દેવ દર્શાવ્યો રે. વ્હાલે. ૫
મન મથુરામાં માધવ મ્હાલ્યા,
મોહ મત્સર દાનવ ચાલ્યા રે. વ્હાલે. ૬
જન નગરનિવાસીરે હરખ્યા,
નેહે નંદના લાલને નિરખ્યા રે. વ્હાલે. ૭
એક પ્રીતિને વશ વ્રજવ્હાલો,
બાકી સર્વ મનોરથ ઠાલો રે. વ્હાલે. ૮
કરો સ્મરણ સૌ દુઃખ જાશે,
હોય અંધારૂં નહીં રવિ પાસે રે. વ્હાલે. ૯
આ જન્મ ધરી જન જાગો,
જસ માધવભક્તિ માગો રે. વ્હાલે. ૧૦

૧૧.

ઇશ્વરકૃપા.

("ઘેલી મને કીધી નંદજીને નેહે":—એ લય).

હરિ આતો દેહ દારાતણો આવ્યો,
સ્વરૂપ જીવ સમજ્યો નહીં, નવ ફાવ્યો. હરિ.
ભૂલ્યો આપ ચોરાશી, લક્ષ તન લાવ્યો;

જાગ્યો જીવ મૂળ સ્વરૂપમાં આવ્યો. હરિ. ૧
પસ્તાઇ જીવે સ્મરણ પોતાનું કીધું,
દયાળ તમે દેહમાં દર્શન તવ દીધું;
દયાળ ત્હારી દયા, ઉત્તમ પદ લીધું. હરિ. ૨
નારી તન નીરખી, નીરાળું કીધું,
ગતિ ન કંઇ સ્મરણ શામળિયા કીધું,
ઉદ્ધારવા અબળાને એ જ્ઞાન દીધું. હરિ. ૩
નાથ તમે નાનું મોટું નથી જોતા,
કૃપાનાથ! ઓછું વત્તું નથી કહેતા;
પૂરણ માટે પૂરણ માની આપ લેતા. હરિ. ૪
ગોવિન્દ જુઓ ગજને ગતિ તમે આપી,
વાસુદેવ રહ્યા સરવ સ્થળે વ્યાપી;
દયા ત્હારી દયાળુ કોઇએ ન માપી, હરિ. ૫
'મ્હારા જન' કહેવામાં મોટાઇ માનો,
બહિર્મુખ બુદ્ધિહીણા વાંક તેનો;
સન્મુખ થઈ સમરે, મેરૂ સમ માનો. હરિ. ૬
સ્મરણ કરો સમજુ સમો શીદ ચૂકો,
ભજન કરો ભવના ભોગો તમે મૂકો;
સ્મરણ વિના શાન્તિ નથી કેમ ચૂકો. હરિ. ૭
એક રીતે માનું માનુની દેહ સારો,
કમાવું ધમાવું મટયો છે કુટારો;
ઘરમાં રહી ઘટમાં ગોવિન્દજી વિચારો. હરિ. ૮
પરા પાર પૂરા પ્રભુજી દેખ્યા,

સચરાચર સુન્દર શામળીઓ પેખ્યા;
રઘુવીર રામા હૃદય આલેખ્યા. હરિ. ૯
જપ તપ સાધન કશું નવ જાણું,
ઉપકાર ત્હારો, અબળા અંતર શું આણું;
કેવળ ત્હારૂં ભક્તવત્સલપણું જાણું. હરિ. ૧૦
આવી જન જગમાં વ્હેપાર બહુ કીધો,
ભજ્યા ભવ ભવનાહરણ, લાભ લીધો;
વ્હેપાર તેણે સારો બરોબર કીધો. હરિ. ૧૧
પુંજી નામ પુરૂષ પૂરાણની ભરોને;
નિરખો દ્રવ્ય દયાળ નાણું ભરોને,
બળતા આ દવમાંથી કંઈક ઠરોને. હરિ. ૧૨
શુકર, શ્વાન, શેઢા, મેંઢા થકી ટાળ્યાં;
માતંગ, મચ્છ, મર્કટ, મયુર થકી ખાળ્યાં,
ઉત્તમ દેહ મનુષ્ય આપી, પ્રભુ પાળ્યાં. હરિ. ૧૩
મનુષ્યપણું આપ્યું તેમાં જાતિ ઉંચી;
જ્ઞાતિ શુભ દ્વિજતણી તેં તો દીધી;
કૃપા તુજ જેવી કોઇએ નથી કીધી. હરિ. ૧૪
દામ ધામ દેહ કૃપાળ શુભ દીધો,
સંભારૂં મેં તો કાંઇએ ઉપકાર નથી કીધો;
દયાનિધિ નામનો કીતાબ તમે લીધો. હરિ. ૧૫
ભજન ત્હારૂં ભૂધરજી શું રે કરાશે,
કૃપા તુજ વિના, ન ભવ રે તરાશે;
નજર જો કરશો તો બ્હાર નીકળાશે. હરિ. ૧૬

પંડિત ત્હારો પાર પ્રભુ નથી પામ્યા,
અગમ્ય લહી શારદ નારદ શેષ વામ્યા;
સુજશ જુગજીવન સચરાચર જામ્યા. હરિ. ૧૭

કરણી શુભ કરી જીવો તને જુએ,
વિષય તુજ શક્તિ સંતાન તેમાં મોહે,
મોંઘો દેહ મનુષ્ય તણો એમ ખુએ. હરિ. ૧૮



શ્રી રૂકિમણીજીનાં જોડકણાં.

પ્રથમ દુંદાળા નામ દીજે,
સરસ્વતી માતનું સ્મરણ કીજે; ૧
પૂજન શુભ કાર્યમાં કરાય,
શુદ્ધિ બુદ્ધિ સદા રહેજો સહાય. ૨
ગણેશજીને મોદકનો આહાર જોઈએ,
માતાજીની સ્વારી જોઇ મન મોહીએ; ૩
સ્વારી તો કીધી સુશોભિત મોર,
કસુંબી ઘાટને જરકશી કોર. ૪
બાજુબંધ બેરખા એકાવળ હાર;
શણગાર વિધવિધ શો વિસ્તાર. ૫
નેપુર અણવટ વીછુઆ વાગે,
ઘુઘરી ઘમઘમ અતિ ઘણું ગાજે. ૬
કુમકુમ આડ અક્ષત ચોડી કીધી,
હસ્તમાં ઔઢી પોથી માએ લીધી. ૭
માતાજીને કર જોડી પાય લાગું,
જોડકણાં ગાવાને શુભ મતિ માગું. ૮

---

૧. ટોળ, મજાક, મીઠી મશ્કરી અને મર્માળાં વાક્યોવાળાં જોડકણાં ગાવાનો ચાલ ઉંચી જ્ઞાતિઓમાં પ્રચલિત છે તેને અનુસરતાં ઉભયપક્ષનાં માર્મિક વાક્યોનો યથાધિકાર સમન્વય કરી શ્રી હરિની લીલાનું સ્મરણ અત્ર ઉદ્દિષ્ટ છે.

જગતની ઉત્પત્તિ જેથી થાય,
શક્તિ શિવ બ્રહ્મા વિષ્ણુની કહેવાય; ૯
વૈદર્ભ દેશ કુન્દનપુર ગામ,
અધિપતી રાય ભીમક તેનું નામ. ૧૦
પુત્ર તે પાંચ કહીએ નિરધાર,
પુત્રી અંબા તણો અવતાર; ૧૧
સુંદર સ્વરૂપ મુખે ન કહેવાય,
ઉપમા લક્ષ્મીતણી અપાય. ૧૨
ભીમકરાય પ્રત્યે ભામિની એમ બોલે,
નહિ કોઇ રૂકિમણીની તોલે. ૧૩
માતાજી કહે પુત્રીતણો વિવાહ કીજે,
સૌકોનું મન માને ત્યાં પુત્રી દીજે; ૧૪
વડીલ પુત્ર રૂકમૈયો કહેવાય,
તે કરે કૃષ્ણુતણી નિંદાય. ૧૫
મૂઢમતિ અતિ છે રે અજાણું,
તેણે ન ઓળખ્યા પુરૂષ પુરાણું; ૧૬
કુટુંબી કહે કૃષ્ણને કન્યા દીજે,
રૂકમૈયો કહે અણઘટતું કેમ કીજે. ૧૭
રાજકન્યા ગોવાળને કેમ દેવાય,
કુળમાં લાંચ્છન મોટું થાય; ૧૮
દમઘોશનો પુત્ર શિશુપાળ છે સારો,
તેને જમાત્ર વેગે ધારો. ૧૯
જમાઇ રૂડા સાજન સારૂં લાવે,
આવ્યો દમઘોશસુત એમ કહાવે ૨૦

નારદઋષી પ્રહુણા ભીમક ઘેર થયા,
રૂકિમણીજીએ સર્વે સમાચાર કહ્યા. ૨૧
કહે ઋષીજી, કૃષ્ણ ઉપર રાખો મન,
મહા બળીઆ છે દ્વારકાના રાજન. ૨૨
પુર્વનાં સુકૃત જો કાંઇ ફળે,
રૂકિમણી કૃષ્ણનું જોડું મળે. ૨૩
ઋષી કહે આશિર્વાદ મારો ફળજો,
મનસા વાચા કૃષ્ણને તમે વરજો. ૨૪
કન્યાબાઇ હર્ષ પામ્યાં અપાર,
બંધુ મારો શત્રુ થયો નિરધાર. ૨૫
કૃષ્ણનું બળ પરાક્રમ ન જાણે,
મિથ્યા દમઘોશસુતને વખાણે. ૨૬
રૂકિમણી આકુળ વ્યાકુળ થાય,
મનસા વાચા કૃષ્ણચરણ ચિત્ત જાય. ૨૭
ભટ્ટજી ભગિનીનાં કાર્ય કરજો,
વેગે દ્વારિકાપુરી પરવરજો. ૨૮
દ્વારિકાવાસીને વિનતિ કરજો,
વેગે દાસીની વારે ચડજો. ૨૯
હું તો તમારી છું નાથ વિચારો,
તમ વિના અવર ઉદ્યમ નહીં સારો. ૩૦
તમને તજી અવર વર જો વરીયે,
તો પછી ભવસાગર કેમ તરીયે. ૩૧
શીઘ્ર લઇ આવ્યો શિશુપાળ જાન,

રૂકિમણી ભુલ્યાં શુદ્ધ ને સાન. ૩૨
રૂકિમણીજીને ચિન્તા અતિશે થઇ,
હવે તો દ્વારામતી કહાવું સહી. ૩૩
ઘરના ગોરજી આવે જો અત્ર,
તેની સાથે લખીને મોકલું પત્ર. ૩૪
લોકે કહ્યું રૂકિમણી કૃષ્ણને વરશે,
રૂકમૈયો જોરાવર યુદ્ધ કરશે. ૩૫
કૃષ્ણ તો દ્વારિકાના ભૂપ કહાવે,
એની તોલે શિશુપાળ ન આવે. ૩૬
કૃષ્ણ રૂકિમણીનાં લગ્ન થાય,
માનુની મંગળ જોડકણાં ગાય. ૩૭
અમે તો અન્નોદક અહીં આવી લીધાં,
ભીમકરાયે છાનાં સામૈયાં કીધાં. ૩૮
યુદ્ધ કરી કન્યા લઈશું, નહિ ડરીયે,
રૂકિમણીજીને દ્વારિકાની પટરાણી કરીયે. ૩૯
શિશુપાળ શોક કરી પાછો જશે,
રૂકિમણી માનીતાં અતિ થશે. ૪૦
બળદેવ તો બેઠા ત્યાંથી ઉઠી આવ્યા,
સંગમાં જાદવ જોદ્ધા લાવ્યા. ૪૧
અમે તો કૃષ્ણ કાળા ન કળીયા,
જાદવ જોદ્ધા આવ્યા ઉછળીયા. ૪૨
જાડી જાન અતિશે કયાં માશે,
કુન્દનપુરવાસી તે કયાં જાશે. ૪૩

બળદેવજીએ બળદની સ્વારી કીધી,
　　આયુધ વડે યમુના તાણી લીધી. ૪૪
રમાપતી રામાનું અન્ન લઇ રાચ્યા,
　　કાળીની ફેણ ઉપર થેઇ થેઇ નાચ્યા. ૪૫
આહીરનું ઉચ્છિષ્ઠ અન્ન એણે ચાખ્યું,
　　બળીયા બહુ પાણીમાં પુર વાસ્યું. ૪૬
કૃષ્ણનાં બળ પરાક્રમ કોણ કળે,
　　રૂક્મિણી પરણ્યા પોતાને બળે. ૪૭
રૂકમૈયાને છોડયો તે માનીયે પાડ,
　　રૂક્મિણીને બહુ લડાવજો લાડ. ૪૮
એણે તો બાળામાં જગદીશ જપીયા,
　　આહીર પણ ભીમક જમાઇમાં ખપીયા. ૪૯
અમારૂં તો કીર્તિ સુણી મન મોહ્યું,
　　કુળ ને કાળાપણું નવ જોયું. ૫૦
રૂક્મિણી ગોરી અતિ કહેવાય,
　　અન્નોદક હોય ત્યાં કન્યા જાય. ૫૧
વિધાત્રાની કૃપા કૃષ્ણપર થઇ,
　　તેણે રૂક્મિણી પામ્યા સહી. ૫૨
રૂક્મિણી કૃષ્ણનું જોડું મળ્યું,
　　કંચન કુન્દનમાં જાણે ભળ્યું. ૫૩
ક્ષત્રી થઇ ગોવાળનો સંગ કીધો,
　　ભેરૂ સૌ દેખતાં પાવક પીધો. ૫૪
કૃષ્ણજી ગોકુળ મથુરાનો રાય,

માખણ માટે ગોપીને લાગ્યો પાય. ૫૫
બ્રહ્મભાણે એને કન્યા શું દીધી,
એક હતી બીજી અમારી લીધી. ૫૬
શ્યામ શરીર પીધું શ્યામ વારી,
ગોકુળ ગોંદરે ગૌ એણે ચારી. ૫૭
જાંબુવતી જાંબુવાનની કન્યાય,
રીંછડી પરણ્યા ઘણો અન્યાય. ૫૮
જસોદા કહે મારો પુત્ર બહુ બળીયો,
આંગળીયે ગોવર્ધન ધરીયો. ૫૯
જયાં ત્યાંથી માગી ચોરી ભેગી કીધી,
અમે પણ એવાં તે રૂક્મિણી દીધી. ૬૦
કૃષ્ણે બેવડી કીધી માય,
ગુણ એના શિવવિરંચિ ગાય. ૬૧
જમાઇનું જુગતે જુઓની રૂપ,
આવ્યો જાણે ત્રિલોક કેરો ભૂપ. ૬૨
કાળી કામળી ધોળી ધાબળી,
પીળી પછેડી કેસર બોળી. ૬૩
મસ્તકે મુગટ મોરપીંછ ઝળકે,
કરણે કુંડળ રૂડાં લળકે. ૬૪
ગળામાં તો ગુંજા ગળુબંધ સોહીયે,
બાજુબંધ જડાવમાં મન મોહીયે. ૬૫
કુસુમ છોગાથી અતિ સોહીયે,
મસ્તક શોભે વળી કયાં જોઇએ. ૬૬

મોજડી ચમચમતી એ ચાલે,
જાનમાં વરરાજા થઈ મ્હાલે. ૬૭

કૃષ્ણે તો ગોકુળમાં ચારી ગાય,
ગોપાળ ભૂપાળ જમાઇ થાય. ૬૮

અઘાસુર બગાસુર આદિ માર્યા,
પોતાના જન હતા તેને તાર્યા. ૬૯

કૃષ્ણે તો માશી મારી પય પીધું,
મામો મારી મોસાળનું રાજ્ય લીધું. ૭૦

મુષ્ટિક ચાણુર મલ્લને સંહાર્યા,
કુવલ્યાપીડ ક્રોધીના ગર્વ ઉતાર્યા. ૭૧

પિતાતણી આજ્ઞાએ પુર જોયું,
સ્વરૂપ શું કુબ્જામાં મન મોહ્યું. ૭૨

બાંધવ બે શૂરા છે આયુદ્ધવાળા,
સંકર્ષણ શ્વેત ને કૃષ્ણજી કાળા. ૭૩

શ્યામ પણ સ્વરૂપ જોઇ મન હીસે,
મુદ્રા જુઓ કોટિપ્રભાકર દીસે. ૭૪

આપ છો વિશ્વ તણા આધાર,
માટે મારી વેગે કરજો વાર. ૭૫

રિપુ સૌ રોળી વરીશું અમે,
હૈયે ધારણ રાખજો તમે. ૭૬

રૂક્મિણી પૂરણ પદને પામી,
પતિ જેનો ચૌદ ભુવનનો સ્વામી. ૭૭

નિજ પતિ જાણ્યા નહીં જેણે નેટ,
તેણે ભારે માર્યું જનનિનું પેટ. ૭૮

સુખી રહેજો શ્રીકૃષ્ણ ને રૂકિમણી એમ,
અવિચળ ભાનુ ને રન્નાદે જેમ. ૭૯

શશી સંગે રોહિણી જેમ રાજે,
કૃષ્ણ સંગે રૂકિમણી તેમ બીરાજે. ૮૦

જોડકણાં એંશી ટુંકે પૂરાં થાય,
જેવા તેવા જસ હરિગુણ ગાય. ૮૧

સંવત ઓગણીસેં ત્રેપન સાલ,
માગશર સુદી ષષ્ટી ને ગુરૂવાર. ૮૨



વ્યવહારિક બોધાત્મક કાવ્યો.

૧.

भ्रष्टो यः स्वाश्रमाचारात् पतितः स विधीयते ।
चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालनम् ॥

પ્રભાતિયું.

આર્યનો આજ આચાર સર્વે ગયો, દેહ વટલાવતા દંભ કરવા;
દ્રષ્ટિ ટુંકી થઇ ધર્મ નીતિ ગઈ, કાર્ય વ્યવહારનું સિદ્ધ કરવા. ૧
વિપ્ર વાતે રહ્યા, વૈશ્ય શૂદ્રો થયા, ક્ષત્રી નામે રહ્યા, રાજ્ય માટે;
ધર્મ નાઠો કહીં, શીઘ્ર ઝાલો સહી, સંગી અહીં ને તહીં એજ વાટે. ૨
નિત્ય નિમિત્ત ગયાં, દ્વિજને ષટ્ કહ્યાં, નાશ બહુધા થયાં, શીઘ્ર જાગો;
સ્નાન શૂદ્રોવત્ સહેજ કરતા ઘણા, ધર્મ જાતો હવે સદ્ય થાપો. ૩
લક્ષ્મી વાસો વસે, જન સૌ ત્યાં ધસે, નાત કે જાત કોઇએ ન જોતાં;
દ્રવ્ય દેખે જવ ચિત્ત ચમકે તવ, લાભ લેખીને લક્ષણ ખોતાં. ૪
માયાને સૌ મોહે, દીનને કોણ જુવે, ધર્મ ખુવે રે ધનીને માટે;
ધર્મને ધાઓ સૌ પાછળ જાઓ કહું, તેજ સંગી થશે સર્વ [1]વાતે. ૫
પુરૂષ પૂર્વે થયા, ધર્મ જે કહી ગયા, સુખને કાજ તે સર્વ માનો;
સમજી સેવો નહિ, અસર ઔષધ સહી, દુઃખ દેખાય તો વાંક કોનો ? ૬

---

૧. धर्मादर्थश्च कामश्च मोक्षश्चैव प्रजायते ॥ શ્રી વેદ વ્યાસ.

ધર્મ વિસર્યો જવ, દુઃખ આવ્યાં તવ, સુખી થાવા સો ધર્મ સાંચો;
આપ અજાણ્ય જો, આપણા ધર્મથી, શાસ્ત્ર છે ધર્મનાં, શીઘ્ર વાંચો. ૧
વાંચી, વળશો જદા, શાંતિ થાશે તદા, નિગમના નિયમ તોડી ન નાંખો
સીડી બતાવી છે શાસ્ત્ર સર્જી સહુ, કંઇક કર્ત્તાની મર્યાદ રાખો. ૨
ધર્મ મૂકયો સહી, લક્ષ્મી નાઠી તહીં, ભૂખ આવી અહીં ધર્મ પાળો;
નિર્મળું નીર તો ધર્મનું વહી ગયું, કંઈક ખાડો ભર્યો તેને ખાળો. ૬

૨.

વલણ.

ધનનું ધાંધલ ચાલ્યું હમણાં પડ ઉપર પડ નાંખ્યાં;
જેમ મલીન પડતાં ગયાં, જણાય તળેનાં ઝાંખાં. ૧
આરોપેલાં અલગ કરીને, ઝાંખાં પણ જુગતે જુવો;
વર્ણાશ્રમનો વિવેક આવે, સંશયો સઘળા ખુવો. ૨
વિધિ અને નિષેધ જણાયે, વૃત્તિ નિર્મળ થાશે;
ઉપાસના અવલંબન થકી, અહંભાવના જાશે. ૩
બીજી કોટી બહુ બળવાળી, ત્રીજીમાં તું તે છે નહિ;
સચ્ચિદાનંદ તે એજ છે, વેદાન્તે ભાખ્યું સહી. ૪
દેખાદેખી કરતાં હીંડે, પરંપરાને નવ જુવે;
મન શુદ્ધીનાં સાધનો, નિત્ય નિમિત્તને પણ ખુવે. ૫
સંમાર્જનીને નાખી દીધી, કચરો કંઈ પેર કાઢો;
કરો અંતર શુદ્ધ આંગણું, વળે કોઇ દિન દહાડો. ૬

આ જન્મમાં અખૂટ વસ્તુ છે, જે રૂચે તે જોજો;
જાગો જન ભારતતણાં, હૃદયથી અંધારૂં ખોજો. ૭
વર્ણાશ્રમ ધર્મ મેળવો, ઘર જરને શીદ ગુમાવો;
ઘરનું ઘર બેઠાં જડે, શીદં પરનું તાણી લાવો. ૮
આણ્યું તે અળગું કરો, પોતાનાને પાળો;
ધન ધર્મ સર્વે ગયાં; કોઇ સદ્ધર્મી વીર વાળો. ૯

ૐ.

વલણ.

પંડિત પુરાણી વાચ્ય જ્ઞાની, કળીમાં દીઠા કંઇ;
નૂર ગુમાવ્યાં નર તણાં, ઉપદેષ્ટા અબળાઓ થઇ. ૧
આચારહીન વિચારહીન, પુરૂષ ભ્રાન્તિમાં પડયા;
ભાષણ કરે કોઇ ભામિની, મ્હોટા પુરૂષો મોહી પડયા. ૨
વનિતાવિષે વિદ્યા કશી પછી પોગળ પેખશો;
જરા વિચારો જન તમે, શ્યામાથકી શું શીખશો. ૩
તમે તમારૂં જન વિચારો, દોડયેથી દહાડો નહિ વળે;
ગાર્ગી, મૈત્રેયી, અનસૂયા, તે, આજે ખોળી નહિ મળે. ૪
ઉપરનો આ ડોળ સર્વે, અનુભવી હા નહિ કહે;
પ્રપંચને જે પેખતા, તે ઠીક ઠીક મનથી લહે. ૫
રહેણી વિના કહેણી કથ્યે, કહોને કારજ શું થશે;
બાંધી મૂઠી લાખની, અંતે ઉઘાડી થશે. ૬

હારા વિષે જે દોષ છે, સ્વભાવથી સ્હેજે ભર્યા;
જુઓ સતી સીતા, શિવા, દેવોને દુઃખીઆ કર્યા.
પાંચાલી, રેણુકાવડે, પૃથ્વીપતિ પૃથ્વી પડયા;
નરસિંહ જેવા નર હતા, નારીતણા દોષો નડયા.

૪

વલણ.

ધોળાં ધારણ બહુ કર્યાં, મન ધુતારૂં ધોળ્યું નહિ;
ગર્વગોષ્ટિ પ્રપંચપુષ્ટિ, સાક્ષી સઘ જાણે સહી.
ભમી ભમી ભાષણ કર્યાં, કીર્તિ દેશે કહાડવા;
ઉપાય ઉપયોગી નથી, જન્મ મરણને ટાળવા.
અલ્પજ્ઞ હા હા સૌ કરે, સર્વજ્ઞથી સંતાડવું;
ખરાંનું ત્યાં ખાતું પડે, ખોટાંને અન્તે હારવું.
લોભ તણી લાદી ભરી, ખુપી ગયાં ત્યાં જન ખરાં;
અંતર અનુભવ હોય સાચો, કેમ બને તે બ્હાવરાં.
અંતર આશા જે ભરી, પ્રકટ પલકમાં તે થશે;
ઉપર આચ્છાદિત કરી તે મૂળથી મ્હોટી હશે.
કંઈ કર્યું કરી મકલાવું, નહિ માન્ય રાખે ઠેઠના;[1]
અવતાર એળે એમ જશે, એ પ્રપંચ પાપી પેટના.
સર્વજ્ઞને સમજાવવા, સુલભ નથી બહુ વેદના;
મમતે મરણ ટળે નહિ, દેહ ગેહ ગર્થની ખેવના.
સ્પૃહાને જો પૂંઠ દઈએ, ખોટી ખુશામત જો ટળે;
અંતરમાં જો અલ્પ બેઠી, અપમાન અણધાર્યું મળે.

---

૧. જગતના અધીશ્વર.

૫.

દોહરા.

જ્ઞાતિની પડતી થઈ, દેશ અને વિદેશ;
દુઃખ ઉપર દુઃખ આવતાં, સુખ નહિં લવલેશ. ૧
મરણ ઉપર મરણો થતાં, ત્રાસે તન સૂકાય;
એક વિસારે ના પડે, ત્યાં બીજું થઈ જાય. ૨
મનુષ્ય દેહ અમુલ્ય છે, સગા સંબંધી ન્હાય;
પ્રબળ બળ એ કાળનું, રૂદન કરી વેરાય. ૩
કંઇ કારણ છે કારસું, દિન દિન આવે દુઃખ;
પથારીવશ ઘેર ઘેર પડયાં, જોવું તેનું મુખ. ૪
કોઇ માત કોઇ તાત ને, પતિ પત્ની એમ જાય;
બાળટાળનું શું કહું, એમ કાળ લઇ જાય. ૫
ચંપ જંપ હોય કુટુંબમાં, સાજું માંદું એક;
શ્રી હરિ નમીયે તને, રાખજે સહુનો ટેક. ૬
સમય કહે સમજો તમે, શુભ ધર્મ ભણી થાવ;
આ દુઃખનો ઉપાય એ, બીજો નહીં કાંઇ દાવ. ૭
તન ધનથી ઘસાઈ ગયાં, દ્રવ્ય દવામાં જાય;
વર્ષાસન બંધાઇ ગયાં, વ્યાધિમાં વિત્ત જાય. ૮
તે પણ મજરે નવ પડે, એવો કાળનો કેર;
ઓચિન્તો આવી ગ્રસે, માગો પ્રભુની મ્હેર. ૯

૬.

પતિવ્રત.

(ધન્યાશ્રીની ચાલ.)

(" સત્સંગનો રસ ચાખ ":—એ લય.)

શિયળ સાચું વૃત્ત, સખીરે શુદ્ધ શિયળ સાચું વૃત્ત.
બાળપણેથી પાળ્યું બરાબર, જીવી બીજી સહુ મૃત. સખીરે. ૧
સાધન જપ તપ શ્રેષ્ઠ સમાધિ, ઉભાં સતીની સમક્ષ. સખીરે.
સતીઉદર શ્રીહરિ પધાર્યા, લેવો અનસૂયા લક્ષ. સખીરે. ૨
સતીતણું ધનમન તે સ્વામી, જેવું ભૂમિ દૃઢ વૃક્ષ. સખીરે.
સદ્ગુણ સર્વ શ્યામામાં જાણો, વિના પતિવૃત્ત વ્યર્થ. સખીરે. ૩
ભલી ભામિની કદી અભણ ભોળી, એક વૃત્તે હોય લક્ષ્ય. સખીરે.
પતિવૃતાને પ્રભુજી રીઝે, આપે અભયપદ તર્ત. સખીરે. ૪
પ્રીતિ રાખે તે પૂરી પ્રભુમાં, કરે સદાયે સુકૃત્ય. સખીરે.
વૃત્ત પ્રભાવે રીઝે રઘુવર, જ્ઞાનાદિ આપે સદ્ય. સખીરે. ૫



પ્રભુ રીઝવવા શ્યામાને સાધન શિયળથી સારૂં ન અન્ય.
સખીરે પતિવૃતાને ધન્ય ?
વિધિ સર્વે આ વૃત્તમાં જાણો, મટે અથડાતું મન. સખીરે.
સીતા સાવિત્રી સાધ્વી કેવાં, સ્વામી કારણ સેવ્યાં વન. સખીરે.

દમયંતીએ દુઃખ દાસત્વ વેઠયું, ધન્ય ! પતિવૃત ધન્ય ! સખીરે. ૨
સુધરે સ્વાર્થ પછી પરમારથ, જો શુદ્ધ માનિની મન. સખીરે.
સર્વ કાર્યમાં સ્હાય પ્રભુની, મળે શું કરવું અન્ય. સખીરે. ૩
શિયળ આભૂષણ સુંદરી કેરૂં, નિર્ધનનું પણ ધન. સખીરે.
સંતોષે હરિ, દેવ પ્રશંસે, જસ કહે સતીને ધન્ય. સખીરે. ૪

૭.

વલણ.

જુઓ પતિવૃતાની પાત્રતા, દેવે દેહ નાના ધર્યા,
રેણુકા રૂડી નાર, તેણે ભૃગુપતિ ઉત્પન્ન કર્યા. ૧
પતિવૃતાની પાત્રતા, શ્રીહરિ તેને ઘેર ગયા,
પતિવૃતાની પાત્રતા, અદિતી ઘેર વામન થયા. ૨
પતિવૃતાની પાત્રતા, કૌશલ્યા મોટી સતી,
ગુણ કર્મના પ્રભાવથી, રીઝી જન્મ્યા રઘુપતિ. ૩
પતિવૃતાની પાત્રતા, દેવકી દુઃખ સર્વે ગયાં,
પતિવ્રતાની પાત્રતા, કૃષ્ણતણી માતા થયાં. ૪
પતિવૃતાની પાત્રતા, દેવહુતી દૃષ્ટાંત છે,
પ્રભુ ઘેર પ્રગટ હવા, કપિલ જેનું નામ છે. ૫
પતિવ્રતા પ્રતાપ અમાપ માપ શું માપીયે,
જસ કહે શ્યામા શાણીઓ કૃષ્ણકૃપા એક માગીયે. ૬

૯.

છપ્પાની ચાલ.

સતી નારની રીત પ્રીત પતિપર પૂરી,
સતી નારની રીત સેવામાં રહે શૂરી;
સતીતણું શુદ્ધ મન મર્યાદા મૂકે નહીં,
કષ્ટ પડે કદિ ક્રોડ નિજ નિયમને મૂકે નહીં.
સતીમાં શાણપણું ઘણું, સહેજ સ્વભાવે શોભતું,
પતિ જેમ પરમેશ છે અન્યમાં મન નહીં લોભતું. ૧
સતી હોય જે નાર દિલે દયા બહુ ધરતી,
સતી હોય જે નાર સુખ કુટુંબને કરતી;
સતી હોય જે નાર કામકલ્પના તજતી,
સતી હોય જે નાર ભર્તા પ્રભુ સમ ભજતી.
સતી નારની રીત અહંકારને અળગો કરે,
દર્શન થાય તે નારનું તો ઘર બેઠે ગંગા વળે. ૨
એવી પતિવ્રતા કોણ, સીતા સાધવી જાણજો,
એવી પતિવ્રતા કોણ, અનસૂયા મન આણજો,
એવી પતિવ્રતા કોણ, મદાલસા મહા ગુણવતી,
એવી પતિવ્રતા કોણ, મૈત્રેયી જે જ્ઞાની હતી.
સતી કૃતિ બહુ શ્રેષ્ઠ છે સુર સરખા ગુણ ગાય છે,
કુળત્રય તારીને સતી અંતે વૈકુંઠ જાય છે. ૩
એવી પતિવ્રતા કોણ, પાર્વતી જે મહાસતી;
એવી પતિવ્રતા કોણ, સુલોચના એવી હતી.

એવી પતિવૃતા કોણ અરૂંધતી ઉત્તમ કહો.
એવી પતિવૃતા કોણ મંદોદરી મનમાં લહો.
પતિવૃતા પ્રતાપ માપ અમાપ શું માપીયે,
જસ કહે એવી સતીઓનાં નામે પાપજ કાપીયે. ૪

૯.

દુરાચરણી દોષ.

છપ્પાની ચાલ.

કુલટા કામિની સંગ કદાપિ જન જે કરશે,
ડાકણસમ તે કામની, પુણ્ય પવિત્રતા હરશે.
નીચ થઇ જે નારી તેનું, કુળ, કુટુંબ લજવાય છે;
જોર જાયે, ધન જાયે, અંતે દુઃખિણી થાય છે.
કુલટા કામિની ક્રૂર, કહ્યું કંથનું નવ કરે,
પિયુ જાય પરદેશ, વળતી ફેરા બહુ ફરે. ૧
લાડી લાડી બહુ લવે, શાણપણું સમજાવતી,
માન મળે જો મન ગમ્યું, ધુરંધર ધમકાવતી.
કુલટા કામિની કંથને કનડીને કાયર કરે,
બોલે ચાલે બહુ સતી, મર્મમાં પગલાં ભરે.
મહિલા મહાદુઃખરૂપ, કૂપ ઉંડામાં કંઈ પડયા,
નારી માટે નર, દૈત્ય, દેવ અને દાનવ વઢયા. ૨

માટે ચેતી ચાલજો, પરસ્ત્રીથી દુખીયા થશો,
જમ આગળ જવાબ શો, નિષિદ્ધથી નરકે જશો.
પાપ પ્રગટ થયું જાણવું, દુષ્ટાપર દ્રષ્ટિ પડી;
વિધાતા એવી અધમ ત્હેં, આ અવનિમાં શીદ ઘડી.
કુલટા કપટ અપાર, ચરિત્ર ચેન કરે ઘણું,
જસ બસ હવે શું બોલવું, કુલટાકલંક કેટલું ભણું. ૩

૧૦.

વ્યસન વિટંબણા.

ગરબી.

કોઇ રાગ તણા છે રાગીજી, કોઈ ભાંગ તણા છે ભોગીજી;
કોઇ તંબાકુને તલખેજી, કોઇ અમલ દેખીને હરખેજી; ૧
કોઇ પાનપટી બહુ ચાવેજી, કોઇ હુક્કા મુખ ગગડાવેજી;
કોઇ સોપારીના શોખીજી, કોઇએ અત્તર શીશી રાખીજી; ૨
કોઇ ચાહપી ચતુરાઇ કરતાજી, કોઇ કાફી લેવા ફરતાજી;
કોઇ ગાંજામાં તો ગળીયાજી, કોઇ માજમમાં જઈ મળીયાજી; ૩
કોઈ મદિરા મુખે ધરતાજી, કોઇ બીડી ફુંફું કરતાજી;
કોઇ છીકણીમાં તો છાકયાજી, કોઇયે રૂમાલ કરમાં રાખ્યાજી; ૪
કોઇ કહે વ્યસન દુઃખ દેછેજી, તેથી સજ્જન અળગા રહેછેજી;
સમજીને ટેવ ન કીધીજી, પછી ચાર એલચી લીધીજી. ૫

વળણ.

એમ વ્યસને[1] સઉ વળગી રહ્યા, કલ્યાણ કોઇનું નવ થયું;
હરિનામ વ્યસન લાગ્યું નહિ, આવ્યું તે તો ત્યમ ગયું. ૧
એ વ્યસન જેને લાગીયું, સંસારમાં સુખીયા થયા;
તેને અપેક્ષા એકે નહિ, હૃદયમાં રઘુપતિ રહ્યા. ૨
વેગે વળગ વ્રજનાથને, ખુમારી ચડશે ખરી,
વ્યસન વિટંબણા ભાગશે, પ્રીતિ પ્રભુશું, જો, કરી. ૩
અન્ય વ્યસન રૂચ્યું નહિ, દુઃખમય જાણી ના કર્યું.
જસ વ્યસન કૃષ્ણ ગુણગાનનું, વળગ્યાથી હૈયું ઠર્યું. ૪

૧૧.

ભક્તિ મહિમા.

વળણ.

પાંડવપર જુવો કૃપા કેવી, સમર્યા ત્યાં સન્મુખ રહ્યા;
દ્વારિકાનૃપ શ્રીકૃષ્ણજી, પાર્થનો સારથિ થયા. ૧
સમસ્ત જન રાજન વિશે, કદી રાજન એ કૃત્ય નવ કરે;
રાશ ગ્રહી રથ હાંકીઓ, ઉથ કૃપા એતો ખરે. ૨
દ્રૌપદી દુઃખ નિવારીયું, ચિર કારણ કર જોડીઆ;
વનિતાસૂત ખેડયો વેગથી, દ્રૌપદી કારણ દોડીઆ. ૩

---

૧ काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥ સુભાષિત.

અમ્બરીષ પર અતિ કૃપા કીધી, દુર્વાસે દુખીઆ કર્યા.
શ્રીહરિએ સુદર્શન પ્રેરીયું, બ્રહ્માંડ ચતુર્દશ ઋષિ ફર્યા. ૪
મુચુકન્દ અતિ મોહિત હુવો, મળ્યા મુકુન્દ ગિરિમાંહ્ય;
કરી કૃપા કરૂણાનિધિ, મોકલીઓ વૈકુંઠ જ્યાંય. ૫
ઇશકૃપા જો હોય તો, રાંકે રિદ્ધિ સાંપડે;
આરોગવા જ્યાં અન્ન નહીં, ત્યાં મઢીતણા માળા કરે. ૬
ઇશિકૃપા જો હોય તો, દરિદ્રી સુકન્યા વરે;
મહા દરિદ્રી સુદામાને દ્વારે ભેરી ગડગડે. ૭
નારદે કંસ ભંભેરીઓ, બાળક પટ્ હણાવીયા;
વસુદેવ દેવકી દુઃખ ટાળ્યું, કારાગૃહમાં આવીયા. ૮
વાત કીધી વસુદેવશું, બાળ સ્વરૂપે ત્યાં હવા;
દેવકી દુઃખ હરણ કીધું, વળતા શ્રી ગોકુળ ગયા. ૯
નન્દ જ્ઞાતિ આહીરની, કૃપા તે પર બહુ કરી;
યશોદા આનંદ વધારવા, સેજે પોઢયા શ્રીહરિ. ૧૦
કુંવરબાઇ મહેતાસુતા, શ્રીરંગ સુતને જે વરી;
અવસર રૂડો આવિયો, નિજ પિતા પ્રત્યે ઉચરી. ૧૧
પિતાજી પ્રભુ ન પધારીયા, હસે નાગર હાંસી કરી;
આથી અધિકું મરણ સારૂં, ઠાલી છાબ શાને ધરી. ૧૨
પિતા વદે પુત્રી પ્રતિ, વિશ્વાસ રાખો દીકરી;
મનગમતાં માધવ પૂરશે, ઠાલી છાબ દેશે ભરી. ૧૩
શેઠસ્વરૂપ લઇ આવીયા, લક્ષ્મી સંગે શ્રીહરિ;
માગ્ય માગ્ય પુત્રી માહેરી, ત્રૂઠયો કૃપા તુજ પર કરી. ૧૪

મન માન્યું માગી લીધું, ભક્ત માટે અવતર્યા;
કાર્ય કરવા ભક્તનાં, વિધવિધ દેહ હરિએ ધર્યા. ૧૫

એનો ભેદ કોઈ ભાખે નહીં, વેદે પારજ નવ લહ્યો;
ભક્ત માટે ભવ વિષે, એ હાજરાહજુર રહ્યો. ૧૬

હરિકૃપા જો હોય તો, અવળાતણું સવળું કરે;
ગિરિગુફા મધ્યે જઇ, કહો રીંછડીને કો વરે? ૧૭

પશુપણું પ્રભુએ વળી મટાડી પટરાણી કરી;
અગણિત પ્રમદાભુવનમાં, જાંબુવતી વ્હાલી ઠરી. ૧૮

પશુનો ઘણો પોકાર સુણતાં, લક્ષ્મી કર પણ મોડિયો;
ગજે ગરૂડધ્વજ તેડીયા, ગ્રાહથી ગજ છોડિયો. ૧૯

કરૂણા ઘણી છે કૃષ્ણની, સંખ્યા નહીં ત્યાં શું ગણું;
કૃપા રામતણી ઘણી હું લેશ માત્રજ વરણવું. ૨૦

વ્યાધનો અવતાર જે, કૃપાથકી કવિવર થયા;
કરી કૃપા ઋષિરાજને યજ્ઞ રક્ષાર્થે ગયા. ૨૧

વિભીષણને શરણ આપ્યું, શત્રુપક્ષને નવ લહ્યો;
કહો કૃપા એ-કેટલી, નિજ ભક્ત લેખી કર ગ્રહ્યો. ૨૨

સીતા સતીની વ્હાર કીધી, વિદેહીનું પણ રાખીયું.
વાળી મહા બળિયો હણી, વળી રાજ સુગ્રિવ સ્થાપીયું. ૨૩

કોણ જ્ઞાતિ ગૂહ કેરી, ભીલનો ભૂપતિ થયો;
શિલા તણી થઇ સુંદરી, શ્રાપદોષ સ્હેજે ગયો. ૨૪

આચાર તીર્થાદિક ગૌણ છે, જો શ્રી રઘુવર રીઝીયા;
શવરી કવણ જ્ઞાતિ તણી, ભીલડીએ ભગવત પૂજીયા. ૨૫

કહો કપિમાં ગુણ કિયા ? મિત્ર થયા રઘુરાય;
વનચરો વન ભમતા રહે, શોભ્યા રામ સભાય. ૨૬

જુઓ કૃપા રઘુરાયની, પક્ષીક્રિયા નવ સાંભળી;
નિજ પિતુમિત્ર જટાયુની, રામે દહનક્રિયા કરી. ૨૭

કબંધબંધજ છોડીયા, શરભંગ કાય સુંદર કરી;
વચન પાળ્યું વિઠ્ઠલે, દેહાંતરે તારા વરી. ૨૮

હરિની કૃપા જો હોય તો, શુદ્ધ ભક્તિ આદરે;
અનન્ય એક ઉપાસતાં જેનો છે તેમાં જઇ મળે. ૨૯

નિજરૂપના અનુભવ થકી, આવાગમન ફેરો ટળે;
અદ્વૈત અવલોકનથકી સ્વસ્વરૂપમાં સહેજે ભળે. ૩૦



તિથિ મહિના આદિનાં પદો.

૧.

દર્શનની તિથિ.

अन्तः पुरुषरूपेण कालरूपेण यो वहिः ।
समन्वेत्येष सत्वानां भगवानात्म मायया ॥

(શ્રીમદ્ ભાગવત.)

(" પડવાની પડપુછ ગતમત ભુલી રે ":—એ લય.)

પડવે પ્રપંચની પાર પ્રભુજી પેખ્યા રે,
મ્હારા દિલમાં દીનાનાથ પ્રત્યક્ષ દેખ્યા રે. ૧
બીજે બોલું શું કૃપા બહુ કીધી રે,
મ્હારા મનડા કેરી માળ અરપી દીધી રે. ૨
ત્રીજે ત્રિભુવનનાથ તમને હરજોરે;
ગણી મોતી કેરી માળ હૃદયે ધરજો રે. ૩
ચોથે ચતુર્ભુજ નાથ ચિત્ત પધારો રે,
હરિ હું છું તમારી દાસ દોષ નિવારોરે. ૪
પાંચમે પ્રભુજી પાડ ઘણો છે ત્હારો રે,
હૃદયામાં નિરખ્યો નાથ નહિ તું ન્યારો રે. ૫
છઠે છબીલા છેલ પ્રભુજી મ્હારા રે,
છો ગોબ્રાહ્મણપ્રતિપાળ મોરલીવાળા રે. ૬

સાતમે શોભા શી બની છે સારી રે,
મોર મુકુટ પીળી પાઘ તે પર વારી રે. ૭
આઠમે અલૌકિક રૂપ ગોકુળ આણ્યું રે,
વ્રજવાસી ભાગ્ય અપાર એ સુખ માણ્યું રે. ૮
નોમે નૌતમ ખેલ કરતા નિત્યે રે,
વ્રજવાસીને પૂરણું પ્રેમ પૂજ્યા પ્રીતે રે. ૯
દશમે દાનવ રાજ દળવા ચડીયા રે,
સર્યાં સુરતણાં સૌ કાજ સતીને મળીયા રે. ૧૦
એકાદશીનું વ્રત ઉત્તમ કરવું રે,
ભજવા શ્રીપતિ ભગવાન નિશ્ચે તરવું રે. ૧૧
બારશે બળિયા નાથ બહુ બળ આપ્યું રે,
મ્હારૂં જન્મ મરણનું દુઃખ સ્હેજે કાપ્યું રે. ૧૨
તેરશે ત્રિગુણ પાર ભુધર ભેટયા રે;
જ્યાં જોઇએ ત્યાં મહારાજ પલક નહીં છેટા રે. ૧૩
ચૌદશે ચતુરા નાર ચોમેર જોતી રે,
ગોપીવલ્લભના ગુણ અહર્નિશ ગાતી રે. ૧૪
પૂનમે ત્હારે પાય, પ્રભુજી રહીયે રે,
તુજ ગુણ અગણિત છે નાથ જસ શું ગાઇએ રે! ૧૫

૨

બોધની તિથિ.

(" રઘુપતિ રામ હ્રદયમાં રહેજો રે ":—એ લય.)

અરજ અમે કૃષ્ણને કાંઈ કરીએ રે,
સેવક સ્તુતિ શ્રવણ હરિ ધરીયે; અરજ. ૧

પંદર તિથિના નામ હું દેતી રે,
સાક્ષી શ્રીપતિને હું તો જોતી રે;
કરો કૃપા, કમળ નયન, કહેતી. અરજ. ૨

સખિ પડવે પુરૂષોત્તમ દીઠા રે,
સ્થાવર જંગમમાં શ્રીપતિ બેઠા રે;
મ્હારા દીલમાં દીનાનાથ દીઠા. અરજ. ૩

હરિ બીજે બુદ્ધિની પાર રે,
અખિલ વિશ્વ તણા આધાર રે;
સકળ સુર શિરોમણિ સાર. અરજ. ૪

સખિ ત્રીજે ત્રિકમજી તારો રે,
મોહ માયાને વ્હાલા વારો રે;
કરી કૃપા કર ગ્રહો મારો. અરજ. ૫

ચોથે ચિંતવો ચૈતન ધન દેવ રે,
પૂર્વ પુન્યે કરો કાંઈ સેવ રે;
પ્રભુ વિશ્વમાં છે વાસુદેવ. અરજ. ૬

સખિ પાંચમે પંચમાં વ્યાપ્યા રે,
કોઈ વિરલા વિવેકીયે સાધ્યા રે;
સુંદર શ્યામ હૃદયમાં સ્થાપ્યા. અરજ. ૭

સખિ છઠ્ઠે છો પૂરણ રૂપ રે,
ઉપમા શું અપાય અનુપ રે;
ચૌદ બ્રહ્માંડ કેરા ભૂપ. અરજ. ૮

સખિ સાતમે સર્વજ્ઞ મળજો રે,

સંશય તોડીને તેશું ભળજો રે;
કૃત અનેક જન્મોનાં ફળજો. અરજ. ૯

સખિ આઠમે આત્મા એક રે,
રાખો વિભુતણો વિવેક રે;
જુઓ અનેક તે છે એક. અરજ. ૧૦

નોમે નયણાં નિરખ્યાથી ઠરે રે,
પૂરણ પ્રીતે એ પદ મળે રે;
કોઈ મહાભાગી એમાં ભળે. અરજ. ૧૧

દશમે દયાળ કર સ્હાશે રે,
પ્રભુ પ્રીતેથી તુજ ભણી ધાશે રે;
ઝાઝું કેહેવું શું જોખમ જાશે. અરજ. ૧૨

એકાદશી અનુપમ કહાવે રે,
ભગવતીને ભજન બહુ ભાવે રે;
આવો અવસર ફરી નહિ આવે. અરજ. ૧૩

બારશે બહુનામી નાથ રે,
સહસ્રશીર્ષા હજારો હાથ રે;
વંદે સુર સકળનો સાથ. અરજ. ૧૪

તેરશે ત્રિલોકે બિરાજ્યા રે
ઘન પાવક થઈને ગાજ્યા રે;
થયા મહાનિધિ મુકી ન માજા. અરજ. ૧૫

ચૌદશે ચતુર જનને કહીયે રે,
સર્વ સૃષ્ટિ શ્રી હરિ લહીએ રે,

જગ્યા ખાલી નહીં ક્યાં જઇએ. અરજ. ૧૬
પૂનમે પૂર્ણને પધરાવ્યા રે,
અરજ કરતાં અવિનાશી આવ્યા રે;
જસ વાણીએ વ્હાલો વધાવ્યા. અરજ. ૧૭

૩.

શ્રી જગદંબાની તિથિ.

("મા તું પાવાની પટરાણી કે કાળી કાળિકારે લોલ." :—એ લય).

પડવે પૂરણ પેખ્યાં માત, જુગતે જાણીયાં રે લોલ.
રૂપનું વર્ણન કર્યું ન જાય, વાણી મન વામીયાં રે લોલ. ૧
૧બીજે બીરાજ્યાં બાવન બ્હાર, બાવન ગાઈ રહ્યા રે લોલ;
ગાતાં આનન્દ ઉર ન માય, મહિમા અતિ ઘણો રે લોલ. ૨
ત્રીજે બીરાજ્યા ત્રિભુવન મ્હાંય, સુર સેવી રહ્યા રે લોલ;
નિરખે નારાયણીનું રૂપ, સુર સ્વર્ગે રહ્યા રે લોલ. ૩
ચોથે ચતુર્ભુજા ગિરિજા, દક્ષનાં દીકરી રે લોલ;
માને નિરખું મનથી આજ, નયને નેહ ભરી રે લોલ. ૪
પાંચમે મુખ પૂનમનો ચન્દ્ર કે જ્યોતિ જળહળે રે લોલ;
દર્શન કરતાં સુખ સઉ થાય, મા શિર કર ધરોરે લોલ. ૫
છઠ્ઠે જગતતણું જીવન કે જગદંબા લહો રે લોલ;
વાઘે ચડીયાં વિશ્વવિદિત બાળા બાંહ્ય ગ્રહો રે લોલ. ૬

સાતમે સેવ્યાં તમને કૃષ્ણ યાત્રા અંબા ગયા રે લોલ;
શ્યામે સમજી જોડયા હાથ કે મા પ્રસન્ન થયાં રે લોલ. ૭
આઠમે હોમાર્ચન બહુ દીપ વિશ્વ વંદી રહ્યું રે લોલ;
માની સ્તુતિ કરે સુરસાથ કે વૃન્દ વીંટી રહ્યું રે લોલ. ૮
નોમે નવદુર્ગા નવ રાત ગરબો ગાઈ રહ્યાં રે લોલ;
તાલે મોહ્યા ત્રિભુવન લોક સ્થિર થંભી રહ્યા રે લોલ. ૯
દશમે દળ જાતું દેખાય કે મા મધ્યે રહ્યાં રે લોલ;
મોહ્યા યોગેશ્વર, શિવ, દેવ, નારદ નૃત્ય કરે રે લોલ. ૧૦
એકાદશી રૂપ અનુપમ માત કે દેવ દર્શન કરે રે લોલ;
દર્શન ટાળે ભવનાં દ્વંદ્વ[1] સુખ સાચું મળે રે લોલ. ૧૧
બારશે બળ પરાક્રમ અપાર સુખ શું કહું કથી રે લોલ;
ઉપમા શું આપું આ વાર કે જગ જોટો નથી રે લોલ. ૧૨
તેરશે તારા, બાળા, વિજયા, બહુ નામો ધર્યાં રે લોલ;
નમતાં કીધાં નિર્ભય ન્યાલ કે મા શીઘ્ર ફળ્યાં રે લોલ. ૧૩
ચૌદશે ચિત્ત ચૈતન ઘન માત કે ચિત્તમાં ચિન્તવું રે લોલ;
દેવી, બ્રહ્મવિદ્યા સાક્ષાત કે વર્ણન શું કરૂં રે લોલ. ૧૪
પૂનમે પૂરણ પરખ્યાં માત કે જગ જૂઠું કરી રે લોલ;
જસને કરી કૃપાથી સહાય, ઉમા મહેશ્વરી રે લોલ. ૧૫



૧ સુખ, દુઃખ; શોક, મોહ; જન્મ, મરણ ઈત્યાદિ.

૪.

શાંતિના મહિના.

भिद्यते हृदयग्रंथिः छिद्यते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

(શ્રીમદ્દ ભાગવત.)

રાગ રામગ્રી.

(" વૈદરભી વનમાં વલવલે " :—એ લય.)

કાર્તિકે કરૂણા જો કરો, કાંઇક લક્ષ્ય લેવાય,
અખંડ અનુપમ રૂપ થતાં, ભ્રાંતિ ભાગી રે જાય;
મોહનજી મ્હારૂં મન હર્યું.

રચના જુઓ શ્રી રામની, રચી જુદો રહેનાર;
અદ્દભુતતા આ છે અતિ ઘણી, જીવ પામે શું પાર. મોહનજી. ૧
માગશરે મોહ સર્વ ટળ્યા, મળ્યા દેવ મોરાર;
નિરખી હરખી નવ બોલવું, બોલ્યે બેપણું થાય. મોહનજી. ૨
આપબળે નવ ઓળખો, કેવળ કૃષ્ણ કૃપાય,
જુક્તિ જીવની નથી ચાલતી, દર્શન દે છે દયાળ; મોહનજી. ૩
પોપે પૂર્ણ હરિ પેખ તો, જગત જૂઠું જણાય;
કૃષ્ણકૃપા વિણ કેમ કળે, ડહોળ્યે દૂર દેખાય. મોહનજી. ૪
ભવનું બંધન ભગવંત હરે, પ્રભુ દિલના દયાળ;
વિઠ્ઠલ વાંક જુઓ નહીં, સમરો કૃષ્ણ કૃપાળ. મોહનજી. ૫

મ્હાં માસે મહામોહને તજી, ભજો ભવના આધાર;
પ્રીતે પ્રભુજી રીઝશે, અર્થાર્થી નથી આપનાર. મોહનજી. ૬

કુટુમ્બ કબીલો જે કહો, અસત્ એનો આધાર;
વખત આવ્યે રહેશે વેગળાં, સમજી મૂકો તો સાર. મોહનજી. ૭

ફાગણ ફેરા બહુ ફર્યા, હવે ગોવિંદ ગાઓ,
ભેરૂ નથી રે ભૂધર વિના, મિત્ર સાચાને સ્હાઓ. મોહનજી. ૮

આધાર અંત સમયતણો, કેવળ કૃષ્ણ કૃપાળ;
ભીડ ત્હારી પ્રભુ ભાગશે, દીનબંધુ દયાળ. મોહનજી. ૯

ચૈત્રે ચિત્ત ચપળ ઘણું, ઠરી બેસે ન ઠામ,
ચરણ શરણ આપો શ્રીહરિ, સુધરે સઘળાં રે કામ. મોહનજી. ૧૦

મનનું ભ્રમણ માનો ત્યાં લગી, મળ્યા નથી મોરાર;
સ્મરણ સુસંગમાં જોડવું, ઠરી બેસશો ઠાર. મોહનજી. ૧૧

વૈશાખે ગ્રહો વિવેકને, ભજો ભવના આધાર;
શાંતિ સ્મરણ વિના નહિ મળે, મનુષ્યદેહમાં દાવ. મોહનજી. ૧૨

ભોગમાં રોગ ઘણા ભર્યા, એ શું સુખ દેનાર;
છેતર્યો છેક લગી તને, એના દોષ વિચાર. મોહનજી. ૧૩

જેઠે જદુપતિને ભજો, જાગ્યાં ત્યાંથી સવાર;
પ્રાપ્ત તેમાં પ્રભુ પેખવા, કરવો વસ્તુ વિચાર. મોહનજી. ૧૪

રામ રહ્યા હૃદયા વિષે, સઘળે શ્યામ જણાય;
જોયા તેને જોવું નહીં, અલભ્ય લાભ અપાર. મોહનજી. ૧૫

આષાઢે અમૃત તણો, ઉત્તમ અનુભવ થાય;
તૃપ્ત થતાં તૃષ્ણા નહીં, આનંદ ઉર ન માય. મોહનજી. ૧૬

સાધુપણાએ શોધવો, શુદ્ધિથી સમજાય;
મલિનથી માધવ વેગળા, સારો સારાને સ્હાય. મોહનજી. ૧૭
શ્રાવણે શ્રી હરિ શ્રી પ્રભુ, ગાવા ગિરિધરલાલ;
શ્વાસનો શો વિશ્વાસ છે, કોણે દીઠી છે કાલ. મોહનજી. ૧૮
ખટપટમાં ખોવાઇ ગયો, મોંઘો મનુષ્ય અવતાર;
ભારે મારી ભૂમિ માતને, ગાયા નહીં જો ગોપાળ. મોહનજી. ૧૯
ભાદરવે ભક્તિ વિના, કેમ પામશો પાર;
ભરપુરને જુઓ ભાવથી, [1]અંતર બ્હાર આધાર. મોહનજી. ૨૦
પક્ષ સાચો પરમાત્મ છે, માનો મ્હોટી એ વાત;
શિશુના દોષ હશે કરી સાંખે જનની ને તાત. મોહનજી. ૨૧
આસો વાસો વ્હાલા તુજમાં, વૃત્તિ વેગથી વાળ;
સ્મરણ આપીને શ્રી હરિ, માયા મોહથી સંભાળ. મોહનજી. ૨૨
નિમિષ નજર જો નાથની, જય જગતમાં થાય;
દેવ દાનવ સેવી રહ્યા, ભક્ત ગુણ જેના ગાય. મોહનજી. ૨૩
અધિક માસે અધિકતા, પૂર્ણ પ્રીતે ભજાય;
સફળતા આ શરીરની, દેવ દર્શન થાય. મોહનજી. ૨૪
આ યુગમાં બહુ ના બને, જપ તપ કર્મ વિચાર;
વર્ણ ચારે ભક્તિ વડે, જસ પામશો પાર. મોહનજી. ૨૫

---

૧ स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । (શ્વેતાશ્વતરોપનિષદ.)

૫

શ્રી કૃષ્ણના મહિના.

("કાર્તિક માસે કયમ ગયા છો મૂકી, હો રંગ રસીયાજી.":—એ લય.)

પ્રથમ પાયે લાગું કમળા નાથરે; કૃષ્ણાજી.
બાર માસ ગાવા ઘો બુદ્ધિપ્રકાશ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧
કાર્તિક માસે કરૂણા કીજે, નાથરે ! કૃષ્ણાજી.
મહેર કરીને મોહન ઝાલો હાથ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨
હાથ ગ્રહો તો હરજી પાર ઉતરીયે રે; કૃષ્ણાજી.
ભવસાગરના ફેરામાં ન ફરીયે રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૩
માગશર માસે મનના સંશય ટળીયા રે; કૃષ્ણાજી.
મહા મનોહર મંદિરમાં મને મળીયા રે ! હરિ કૃષ્ણાજી. ૪
પ્રીત કરીને પુરમાંહે પધરાવ્યા રે. કૃષ્ણાજી.
આદર કરતાં વેગે વ્હાલો આવ્યા રે ! હરિ કૃષ્ણાજી. ૫
પોષ માસે તો પૂર્ણ લાગે પ્રીત રે ! કૃષ્ણાજી.
અખંડ અનાદિ અવલોકયા એ રીત રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૬
પ્રીત રીત એ સહુ સાધનનો તાજ રે; કૃષ્ણાજી.
માટે પરખી મન વસજો મહારાજ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૭
મહા માસે તો મહા માયાનું જોર રે; કૃષ્ણાજી.
નજર કરીને નિરખો નન્દ કિશોર રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૮
દ્રષ્ટિ કરતાં દુઃખડાં સઘળાં જાય રે; કૃષ્ણાજી.
નાથને નામે પતિત પાવન થાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૯

ફાગણ માસે ફરકે વેલી વૃક્ષ રે! કૃષ્ણાજી.
મહા દયાળુ મ્હોટી ત્હારી પક્ષ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૦

વસીલા વિણ તો વણસે સઘળાં કામ રે; : કૃષ્ણાજી.
મને ભારે ભરૂંસો ત્હારો સુંદર શ્યામ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૧

ચૈત્ર માસે ચિત્તની ચિંતા ટાળી રે; કૃષ્ણાજી.
અંતર માંહી જ્યોત અતિ અજવાળી રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૨

દીપક કરતાં દૂરનું દ્રશ્ય દેખાય રે; કૃષ્ણાજી.
મહાચૈતનધન મળતાં શાંતિ થાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૩

વૈશાખ માસે વિઠ્ઠલ વર્ણન થાય રે; કૃષ્ણાજી.
ભાવિક જન તુજ નામતીર્થમાં ન્હાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૪

સ્નાન થકી તો શુદ્ધિ શરીરની કહીયે રે; કૃષ્ણાજી.
પ્રીતિ પ્રભુશું કરતાં પાતક દહીયે રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૫
જેઠ માસે તો જન્મ સફળ, સઘ જન થાય રે; કૃષ્ણાજી.
ત્હારા તે તો યમપુરી નહિ જાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૬

ભક્તિ કરતાં ભવનાં દુઃખજ કાપો રે; કૃષ્ણાજી.
ચાર પદાર્થ, મુક્તિ, મહાપદ આપો રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૭

આષાઢ માસે અમૃતધારા વરસે રે; કૃષ્ણાજી.
બાર માસ તો ચાતક રહેછે તરસે રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૮

એ ટેક રીતથી ભજન ભૂધરનું કરવું રે; કૃષ્ણાજી.
દુર્જન દુભે તેહથકી નવ ડરવું રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૧૯
શ્રાવણ માસે શું કહું શ્યામ શરીર રે; કૃષ્ણાજી.
રેડ્યા કરુણા વર્ષાઋતુનાં નીર રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૦

જળ થકી તો વપુના મળ ધોવાય રે; કૃષ્ણાજી.
અંતરશુદ્ધિ સ્વરૂપ સમજયે થાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૧
ભાદરવો ભરપૂર હરિ કહેવાય રે. કૃષ્ણાજી.
કૃષ્ણ પક્ષમાં પિતૃ તૃપ્તિ થાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૨
પિતૃદેવમાં પુરૂષોત્તમજી વસીયા રે; કૃષ્ણાજી.
કર્મઉપાસક વિહિત માર્ગમાં વસીયા રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૩
આસો માસ તો અંબાનો કહેવાય રે; કૃષ્ણાજી.
નવરાત્રિયે માજી ગરબા ગાય રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૪
દેવદુઃખ ટાળ્યાં આરાસુર રાણી રે; કૃષ્ણાજી.
આ જગત જુક્તિ માત તમારી જાણી રે! હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૫
અધિક માસનો ઉત્તમ છે પ્રભાવ રે; કૃષ્ણાજી.
દેહ મનુષ્યનો લેવો કાંઇક લ્હાવ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૬
દ્વાદશના રાજા પુરૂષોત્તમ દેવ રે; કૃષ્ણાજી.
તપતીરથ વ્રત કરવી કિંચિત સેવ રે. હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૭
તેર માસ તુજ ગુણ હરિજસ ગાય રે; કૃષ્ણાજી.
પારસ લોહ ને સ્પર્શે કંચન થાય રે! હરિ કૃષ્ણાજી. ૨૮

૬.

કક્કો.

("કકા કર સતગુરનો સંગ":—એ લય).

કકા પ્રીત કર કૃષ્ણજ સાથ, આ ખોખું[૧] નહીં આવે હાથ;
ખખા ખોખું ખોટું ખરે, પણ એથી સૌ કારજ સરે. ૧

૧ न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते.–(શ્રીમદ્ ભ. ગીતા).

ગગા ગોવિંદ ઘટમાં ગોત્ય, અરસપરસ જ્યમ સૂતર પોત;
ઘઘા ઘાણી ઘરની છોડ, જ્યમ ત્યમ મન મુકુંદમાં જોડ. ૨
ચચા ચેતી ચતુર્ભુજ ગ્રહો, સર્વ શાસ્ત્ર કહે એમાં ઘો;
છછા છેતરે છૈયાં છોકરાં, પરખીને તે કરજે પરાં. ૩
જજા જન્મ તો સુધર્યો જાણ, વાસુદેવ જશ વદીએ વાણ;
ઝઝા ઝાલો હરિનું નામ, એ તો અંતે આવે કામ. ૪
ટટા ટેકો હરિનો લે, આભને કોણ સ્તંભજ દે;
ઠઠા ઠોકર ખાશો ઘણી, જો નવ જાણ્યા ત્રિભુવન ધણી. ૫
ડડા ડોળી મારીશ નહીં, હરિ સમજ્યો તે સાચો સહી;
ઢઢા ઢોળી નાંખીશ નહીં, અમૃત નામ હરિનું સહી. ૬
તતા તારે જગથી રામ, અવર વાત નહીં આવે કામ;
થથા થાપણ હૃદયે જાણ, મનમાં સમજી મહાસુખ માણ. ૭
દદા દુઃખડાં દાટી દે, પુરની પેરે આયુષ વહે;
ધધા ધ્યાન હરિનું ધરો, ભવસાગરના ફેરા હરો. ૮
નના નિશ્ચે ભજો નરહરિ, અમુલ્ય સમો નહીં આવે ફરી;
પપા પુરૂશોત્તમને ગા, મન માને તો વૈકુંઠ જા. ૯
ફફા ફેરા ફરશો સહી, જો અંતરમાં જાણો નહીં.
બબા બધે સ્થળ બેઠા નાથ, ખોળ્યે સઘળે છે જગતાત. ૧૦
ભભા ભેદવટે ભુલ થઇ, વાત સાચી તે ભુલમાં ગઇ;
મમા માયાની મોટપ ઘણી, માનીતીવશ સૌનો ધણી. ૧૧
યયા યાત્રા હરિની કરો, આઠે પહોર આનંદમાં ફરો;
રરા રાખ ભરૂંસો અધિક, જન્મ આગે પય પ્રભુએ કીધ. ૧૨
લલા લક્ષ્મીવરને વરો, જેમ તેમ પ્રીત પ્રભુશું કરો;

---

૧. ખોખું તે ત્રિગુણાત્મક દેહ.

વવા વાડી મોટી મચી, ભ્રમર થઈ ના રહેવું પચી. ૧૩
શશા સ્વરૂપને શોધી જો, પછી જ્યાં મન માને ત્યાં મ્હો;
ષષા ષટ્ સંપત્તીને આણ, પછી પ્રભુને સહેજે જાણ. ૧૪
સસા સાર તણો એ સાર, મોહમાયાને મનથી માર;
હહા હરિશું હેતજ કરો, ત્રિવિધ તાપને સ્હેજે હરો. ૧૫

૭.

બાજી.

("રામ જનકપુર આવીયા." :—એ લય)

બાજી ખેલો રે રામ નામની, ખેલ સાચો ખેલાય. બાજી.
પાસા તે પ્રણવ ૐકારના, દાવ સમજી દેવાય;
ચાર દેહ ચોપાટ જાણવી, જેમાં રમત રમાય. બાજી. ૧
પહેલું તે પડ મન જાણજો. જેની સોગઠી છે ચાર;
શમ, દમ, શિયળ, સંતોષ જે, ચાર સોગઠી કહેવાય. બાજી. ૨
બીજું તે પડ બુદ્ધિતણું, તેની સોગઠી છે ચાર;
સત્ય, નિશ્ચય, નિર્વિકારતા, વળી આર્જવ સાર. બાજી. ૩
ત્રીજું તે પડ ચિત્ત જાણજો, કહું કાંકરીઓ ચાર;
આસ્થા, શ્રદ્ધા ને સુકૃતિ, નીતિ, ચિત્તની કાંકરીઓ ચાર. બાજી. ૪
ચોથું તે પડ અહંકારનું, અન્તે ઊઠી જવાય;
શાન્તિ, સમાધિ, ભક્તિ ભલી, જીવનમુક્તિ કહેવાય. બાજી. ૫
ઝળહળ જ્યોતિ ઘરમાં જતાં, આનંદ ઉર ઉભરાય;
સમજી બાજી રમવી સહી, જસ તો તો ડંકા દેવાય. બાજી. ૬

હરિલીલાવર્ણનાત્મક કાવ્યો.

૧.

શ્રીમદ્‌ભાગવત દશમસ્કંધ પૂર્વાર્દ્ધ સંક્ષિપ્ત.

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ શ્રી. ભ. ગીતા.

("અંજનિના જાયા હનુમાનરે સમરૂં બજરંગી":—એ લય.)

દેવકીના જાયા ભગવાન રે, મોહન મહીદાણી,
યશોદાના પાળ્યા જીવન રે, ગોકુલ ગૌચારી. દેવકીના૦ (ધ્રુવ)
શ્રીકૃષ્ણને નમું સદા, પ્રણામ વારંવાર,
કૃપા કરી પૂર્ણ કરો, દશમ કેરો સાર. ૧
મથુરાપુરમાં શોભતું, જ્યાં કંસ કેરૂં રાજ્ય,
શ્રીકૃષ્ણ જન્મ કારાગૃહે, ઉતારવા ભૂભાર. ૨
દર્શન દીધાં દંપતિને, મૂળ રૂપ મહારાજ;
નિરખી હરખી સુખી થયાં, કરવું કવણ કાજ. ૩
શ્રીપતિ કહે શું જુઓ, મને મુકી આવો નંદદ્વાર;
મધુસૂદન કહે પિતા મ્હારા, હવે ન કરો વાર. ૪
વસુદેવ—આ પુત્ર પૂર્ણ પરાક્રમી, પરઘેર ક્યમ મૂકાય;
લોભાઇને જો લાલને રાખું વિઘ્ન

શ્રીકૃષ્ણ–બાર વર્ષ બોલવું નહીં, અમે થઇએ તૈયાર;
કંસને હણી વિદ્યા ભણી, સુખ દઇશું અપાર. ૬
વસુદેવ–આણુથી આ પુત્ર વ્હાલા, ફરી મેળાપજ થાય;
વધાતી આપું વિપ્રને, સવચ્છી સહસ ગાય. ૭
કમાડ ઉઘડ્યાં કઇ ટળીયાં, મૂર્છિત રક્ષક માત્ર;
વસુદેવે વ્હાલો લીધો, ત્રિલોકીનો નાથ. ૮
વસુદેવ વાસુદેવને લઇ, પગપાળા જાય;
ભાગ્ય શું નંદ યશોદાનાં, શુકન સારા થાય. ૯
જમુનાએ જગદીશ જાણી, તરત આપ્યો માગ;
કાલિન્દ્રીને કૃપા કરી, વધારીને પાદ. ૧૦
પ્રભુતા દીઠી વસુદેવે, મન સમજીયા તતખેવ;
છાના છુપ્યા કયમ આ રહેશે ! દેવના જે દેવ. ૧૧
દીપક નિશા સાક્ષી રાખી, પોઢાડ્યા વ્રજરાય;
કંચન સાટે કથિર લઇને, યાદવપતિ જાય. ૧૨
ઝબકી યશોદા જાગીયાં, પાસામાં દીઠા પુત્ર;
નંદજીને હર્ષ ઘણો, શોભીસું ઘરસુત્ર. ૧૩

શ્રીકૃષ્ણ લીલા.

પ્રથમ મારી પૂતના, પછી શકટાસુર;
તૃણાવત તો તરતજ આવ્યો, કરવા કારજ ક્રૂર.
ઉપાડ્યા અવિનાશને, નંદના જાણી બાળ;
ભમાવીને ભુતળ નાંખ્યો, જાણ્યા ન કૃષ્ણ કાળ.
ગર્ગ આવ્યા શોધતા, કયાં નંદ કેરાં ધામ;
અજન્માએ જન્મ ધર્યો, કયાં યશોદાકહાન.

નંદ નમી ગુરૂને કહે, મમ ઘેર પ્રકટયો બાળ;
આયુષ્ય જો જો આશિષ દેજો, નામ ધરો શુભ સાર. ૧૭
દર્શન કર્યાં દયાળનાં, ગુરૂ ચકિત થયા અપાર;
નામ શું ધરૂં મુખ શું ભણું, ગુણરૂપનો ભંડાર. ૧૮
વ્યવહારની વિધિ નામથી સિદ્ધિ પુછવું પડે પ્રશ્ન;
નામતણું તો નથી લેખું, પણ કહેજો શ્રીકૃષ્ણ. ૧૯
ગુરૂને ઘણી દક્ષિણા આપી, આનંદ્યો વ્રજસાથ;
કષ્ટ હરણ કૃષ્ણજી, વ્રજ થયા વિખ્યાત. ૨૦
માટી ખાધી મોહને, મા મુખ જોવા જાય;
વદન મધ્યે વિશ્વ જોયું, વિસ્મય અતિશે થાય. ૨૧
અચ્યુત બાંધ્યા ઉખળે, જેના નામથી મુક્તિ થાય;
કુબેર પુત્રો છુટીઆ, ધન્ય સ્પર્શનો મહિમાય. ૨૨
વત્સાસુર તો વત્સ રૂપે, આવીઓ અસુર;
ગોઠીઆ ગોવિંદજી થયા ને મારી નાંખ્યો ક્રુર. ૨૩
બકાસુરે બકરૂપ લીધું, કરવા કુડું કામ;
ચાંચ ગ્રહીને ચીરી નાંખ્યો, એવા સમર્થ શ્યામ. ૨૪
મોર મુકુટ મોરલી ધરી, નીલ પીતામ્બર પરિધાન;
સહસ્ર ગોપાળા મધ્યે શોભે, યશોદાના કહાન. ૨૫
ધેનુ કાળી કાબરી, ગોરડી ઘણીલે વાન;
ચારવા ચાલ્યા ચતુર્બાહુ, ધન્ય એ ગોકુળ ગામ. ૨૬
અઘાસુરે અતિ દુઃખ દીધું, ગળ્યા ગોપ સકળ;
વનમાળીએ વાટ દેખાડી, ચીરીને ઉદર. ૨૭
ચતુરાનને ચોરી કીધી, હર્યાં ગૌ ગોપાળ;
શ્યામ થયા ત્યાં સર્વ રૂપે, દેહ ધર્યા દયાળ. ૨૮

બ્રહ્મા ભ્રાન્તિમાં પડચા, ન ઓળખ્યા અવિનાશ;
નવીન સૃષ્ટિ નાથે કરી, અજ થયા ઉદાસ. ૨૯
કમળભૂ દ્વિ કર જોડી, સ્તુતિ કરે અપાર;
શેષ શારદા પાર ન પામ્યાં, કયમ હું પામું પાર. ૩૦
ગોપ કહે ગોવિંદને, સખા! તાડફળની આશ;
મનોરથ પૂર્યા મિત્રના ને ધેનુક કીધો નાશ. ૩૧
કાળી ક્રોધી નાથીઓ, ઉપર થયા આરૂઢ;
નાગણી સર્વે નમન કરે, જય જય ગરૂડારૂઢ. ૩૨
પ્રલંબ પ્રભુએ મરાવીઓ, બળભદ્રજીની પાસ;
મણિધરને માધવ કહે, અસુર કરો નાશ. ૩૩
વસંતનું વર્ણન કરી, વ્રજ રમતા વ્રજનાથ;
શ્રીહરિએ શેષજીને, બોધ કર્યો અગાધ. ૩૪
અચિંત્યો અગ્નિ ઉપન્યો, હવે શરણ રાખો શ્યામ;
આંખ મિચાવી અલબેલાએ, કર્યાં પાવક પાન. ૩૫
વ્રજબાળાએ વ્રત કીધું, થયા પ્રભુ પ્રસન્ન;
પટકુલ હરી પ્રેમ જોયો, દીધાં ત્યાં વચન. ૩૬
ભૂધરજી ભુખ્યા થયા, કહે ગોપને ગોવિંદ;
ભુખે મને તમ્મર આવે, યાચી લાવો અન્ન. ૩૭
ગોવાળા ગોષ્ટિ કરે, આ અરણ્યમાં કયાંથી અન્ન;
વિશ્વંભરને ભૂખ લાગી, ભાઇ હવે કરીશું કયમ. ૩૮
ગોવિંદે જોયું ગગન ભણી, બોલી ઊઠયો સૌ સાથ;
વેદની ધ્રુનિ શ્રવણે સુણી, દ્વિજ કરે કો યાગ. ૩૯
ઊઠી ગયા ઊતાવળા, મનમાં મોદ અપાર;
અધિકારીને ઓળખ્યા નહીં, દ્વિજને વેદ ભણ્યાનો ભાર. ૪૦

ગોવાળ આવ્યા નાથ પાસે, મુખે નવ બોલાય;
વિપ્રે કહ્યું તે કયમ કહીએ, જીભલડી છેદાય. ૪૧
માધવ કહે જેને માગવું, તેને તે શેની લાજ;
મીઠું મોળું ટાઢું શીળું, યાચી લાવો આજ. ૪૨
નિર્મળ નારી છે ઘણી, તમે માગવા ત્યાં જાવ;
ઘેર જઇને ઘણું જમીશું, જોવો તેનો ભાવ. ૪૩
બ્રાહ્મણ ભ્રાંતિમાં પડ્યા'તા, ના કહી નિરધાર;
બ્રાહ્મણી કેરી ભક્તિ જાણી, અન્ન આપ્યાં અપાર. ૪૪
ભક્તિનો રસ ભક્ત જાણે, જાણે વ્રજની નાર;
યજ્ઞપતિને ઓળખ્યા નહીં, એ કરમઠો કહેવાય. ૪૫
ભગવાનને બહુ ભાવથી, જમાડતી દ્વિજનાર;
ધન્ય છે બ્રાહ્મણની નારી, ઊતરી ભવ પાર. ૪૬
ઇંદ્ર કહે મારી ઊજાણીનો, કૃષ્ણે કીધો લોપ;
મેઘ સર્વેને આજ્ઞા દીધી, તાણો ગોકુળ ગોપ. ૪૭
મેઘ વરસ્યા મમત આણી, ગોવિંદે ધર્યો ગિરિરાજ;
કૃષ્ણજી ત્યાં કુશળ સદા, ભય પામ્યો સુરરાજ. ૪૮
શક્ર કહે હે શ્રી હરિ ! મને મોહ થયો મહારાજ;
શરણાગત ને શરણ આપો, રાખો કિંચિત લાજ. ૪૯
વ્રજને વાસુદેવ જાણ્યા, દીઠાં અદ્ભુત કામ;
નંદજીને નિશ્ચય થયો, પુત્ર પૂરણ ધામ. ૫૦
વ્રજપતિએ વરૂણ લોકે જોયો મહા પ્રભાવ;
પુત્ર તો પરબ્રહ્મ છે, ધરૂં હવે એ ભાવ. ૫૧
ગોપિકાએ ગીત ગાયાં, પ્રેમ કર્યો પ્રકાશ;
મુરલીધરે મુરલી મધ્યે વેદ કર્યો વિસ્તાર. ૫૨

રાધાવર ત્યાં રમત કરતા, કૃષ્ણ સાથે ગોપ;
દાનવ માનવ વસુ મોહ્યા, મોહ્યા શિવ સુર લોક. ૫૩
ઇન્દ્ર મોહ્યા ચન્દ્ર મોહ્યા, મોહ્યા મહાબળ વીર;
કૃષ્ણજીની ક્રીડાએ સ્તંભ્યાં સરિતા નીર. ૫૪
દેવ સૌ દિઙ્મુઢ કીધા, ગહન ગતિ ગોપાળ;
મહા માયા મોહન તણી, વાહ નંદજીના બાળ! ૫૫
ચરિત્ર કીધાં ચતુર્ભુજે, તારવા જન સમાજ;
દેહ તેનો દેવ જેવો, પ્રભુ પદે અનુરાગ. ૫૬
વિદ્યાધર શંખચુડ ઉદ્ધાર્યા, મુરારી મહારાજ;
નંદ ઉગાર્યા મણિ લાવ્યા, એક પંથ ને બે કાજ. ૫૭
અરિષ્ટ મોકલ્યો અધર્મીએ, કરવાને વિઘન;
તેને મારી મોક્ષ દીધો, ધન્ય આહીરા ધન્ય! ૫૮
કેશી કંઠે કર ધરી, વિદાર્યો યદુવીર;
વિઘ્ન વારી મુરલીધારી ધન્ય ગોપાલક ધીર. ૫૯
વીણાધરે વાસુદેવની, સ્તુતિ કરી અપાર;
અમરે અતિ વૃષ્ટિ કરી, પુષ્પતણી તે વાર. ૬૦
કંસને મન કષ્ઠ છે હવે, કરવો કવણ ઉપાય;
મોકલ્યા તેને મારી નાંખ્યા, યોદ્ધા નહિ જીતાય. ૬૧
કંસ કહે અક્રૂરને, અહિં લઇ આવો બે બાળ;
વડા સંગે વૈર પડયું, મુજ પેટમાં છે ફાળ. ૬૨
અક્રૂર-કપટ તણું આ કાર્ય છે, પણ દર્શન થશે દયાળ;
મૂર્ખને મહાબોધ દઇએ, લાગે નહીં લગાર. ૬૩
યાદવ મળ્યા યદુનાથને, મન હરખીઆ અપાર;
જન્મ સફલ આજ થયો, મળ્યા જો મોરાર. ૬૪

અક્રૂર નંદ હળ્યા મળ્યા, પ્રભુ પ્રેમે લાગ્યા પાય;
મથુરામાં મખ રચ્યો છે, તમને તેડે રાય. ૬૫
રણકાર કરતો રથ ચાલ્યો, કૃષ્ણ બળવીર માંહ્ય;
સમય જાણી સંધ્યા કેરો, પેઠા યમુના માંહ્ય. ૬૬
કાકાને મન કલ્પના, રખે આવે મુજને આળ;
સ્વરૂપ દેખાડયું શ્રીહરિએ, વાહ કૃષ્ણજી કૃપાળ. ૬૭
આ તો કાળ કેરા કાળ છે, વળી ભક્તના પ્રતિપાળ;
ગતિ ન કળે કંસ ગાંડો સિંહ મુખે શીયાળ, ૬૮
ઇશ્વર કેરી અદ્ભુત લીલા, જાણે નહીં મલીન;
ભક્ત જાણે ભેદ જરા, થાય તેમાં તલ્લીન. ૬૯
વાડીમાં ઊતર્યા વ્રજપતિ, સૌ દર્શન કરવા જાય;
મન પ્રમાણે મોહન મળ્યા, જેને જેવો ભાવ. ૭૦



ધન્ય ધન્ય વસુદેવ બાળ રે, હલધર ગિરિધારી;
જેણે માર્યો છે કેસરી કંસ રે, ગોકુલ ગૌચારી. ધન્ય૦ (ધ્રુવ.)
માળીએ ફુલમાળ આપી, સોહાવ્યા ગોપાલ;
ધોબી કેરૂં ધડ ઉરાડયું, આગળ શું થનાર. ૧
દરજીએ દયાળને શીવી દીધી બાંહ્ય;
કિંચિત તેના કાર્યથી, અભય કીધો ત્યાંય, ૨
ધોળી ધાબળ કાળી કામળ, ચંદન ચરચ્યું અંગ;
મલ્લ અખાડે મોહનજીએ રાખ્યો ઘણો રંગ. ૩
ચાણુર તોડયો મુષ્ટિક માર્યો, કહાડીયા ગજદંત;
ગેડી ધારી દાનવ મારી, ધનુષ્ય કીધું ભંગ. ૪

રાય રીઝવવા રમત માંડી, મનમાં છે અતિ ક્રોધ;
ફાળ તો ભરી યુક્તિ કરી, મારી નાંખ્યો યોધ. ૫
જય ! જય ! શબ્દો સુર કરે, કુસુમવૃષ્ટિ થાય;
કંસ કંટક કહાડીયો, જય કૃષ્ણની બોલાય. ૬
સુર ફક્કડ ધીન કડ્કડ, મોહન મુરલી વાય;
ગોવાલ ફરતા ઘુમરી, વચ્ચે છે વ્રજરાય. ૭
ઉગ્રસેનને અભિષેક કીધો, મળ્યા માત પિતાય;
મન મથુરા મોહન આવ્યા, આનંદ ઉત્સવ થાય. ૮
કાછ કછ્યો રંગ મચ્યો, તાલી પડે તડાટ;
ધમધોક જુવે લોક, ગાજ્યો યમુના ઘાટ. ૯
વસુદેવ કહે વ્હાલા મ્હારા, જ્હોંચી મ્હારી આશ;
બળ હતું ને બેશી રહ્યા, એ અમારાં ભાગ્ય. ૧૦
પરાક્રમી બે પુત્ર મ્હારા, સુરના સરદાર;
મામો માર્યો અર્થ સાર્યો, શોકના હરનાર. ૧૧
નંદને વંદન કરી, વેગે કરો વિદાય;
સમજાવીને સટકી આવો, વ્રજ વ્રજેશ જાય. ૧૨
પ્રભુ એ પિતાપ્રીત જાણી, જાણી સ્વાર્થ રીત;
ચમક ઝમક જસ ન જાણે, ગાવાં હરિનાં ગીત. ૧૩
ભણવા ગયા શ્રીનાથજી, સાંદીપની ગુરૂને ઘેર;
ચૌદ વિદ્યા ચોસઠ દિને, ભણી કરી લ્હેર. ૧૪
ગુરૂએ ગોપાળ જાણ્યા, મુવો માગ્યો બાળ;
સાગરમાંથી શોધી લાવ્યા, જળશાયી તત્કાળ. ૧૫
ઉદ્ધવને અવિનાશજીએ, મોકલ્યા ગોકુલ માંય;
પ્રેમદાનો પ્રેમ દીઠો, ગર્વ ટળ્યો ત્યાંય. ૧૬

કુબ્જાએ શ્રી કૃષ્ણજીને, માનીઆ છે કંથ;
જે તે ભાવે ભજો હરિ, પ્રૌઢો જાણી પંથ. ૧૭
અક્રૂર ઘેર અચ્યુત ગયા, ભક્તાધીન ભગવાન;
અગણિત લીલા એવી કરી, ધરી નાનાવિધ નામ. ૧૮
કૃપાળ કાકાને કહે, તમે પાંડવ પાસે જાવ;
કૌરવને કાંઇ શીખ દેજો, રાખે ભાઈપર ભાવ. ૧૯
અક્રૂરજી જઈ આવીઆ, કહે માને નહીં લગાર;
સત્ય તણા છો સાહ્યકારી, ભક્તતણા પ્રતિપાલ. ૨૦
અક્રૂરજી સ્તુતિ કરે, જય જય શ્રી ગોપાળ;
દીનના બંધુ દયાસિંધુ, આરોપું મન માળ. ૨૧
જસ વિશેષજ કંઇ ન જાણે, શ્રીકૃષ્ણ કૃપાને ચાહ્ય;
અષ્ટમીના ઉત્સવે, જય જય બહુ ઉચરાય. ૨૨

૨.

વામન અવિર્ભાવ.

वामनं रुपमास्थाय वलिं संयम्य मायया ।
इमे क्रान्तास्त्रयोलोकास्तस्मै क्रान्तात्मने नमः ॥

(અંજનીના જાયા હનુમાનરે સમરૂં બજરંગી.:—એ લય.)

અદિતિને ઘેર અવતાર વામન વૈકુંઠવાસી. (ધ્રુવ.)
સમરૂં માતા શારદા, ગણપતિ લાગું પાય;
લીલા લખું લક્ષ્મીવરની, કૃષ્ણની કૃપાય, અદિતિ. ૧

એક વાર દાનવ દેવ વ્હડીઆ, યુદ્ધ થયું અપાર;
સુર નાઠા સ્વર્ગ મૂકી, ધરા ધ્રુજી તે વાર. અદિતિ. ૨
અસુરે ઉત્પાત કીધો, દુઃખી દેવ અપાર;
બળિ બોલ્યા બળ કરીને, સ્વર્ગ લેવું સાર. અદિતિ. ૩
સલાહ લીધી શુક્રની, કરો રાજા યાગ;
સો સો યજ્ઞો સાથે કરો, ત્યારે પામો રાજ્ય. અદિતિ. ૪
બળી બેઠા યાગ કરવા, દીક્ષા લઈ તે વાર,
સુરપતિને સંકટ પડયું, કોણ કરે હવે વાર; અદિતિ. ૫
શક્રને સંકટ થયું, દાનવ લેશે રાજ;
માતા મ્હારી મહા સતી, શરણ જવું આજ. અદિતિ. ૬
વાસવ કહે વડું દુઃખ છે, ટાળો અમારૂં માત;
કોની આગળ કહીએ જઇને, તપ કરેછે તાત. અદિતિ. ૭
સાંત્વન કીધું સુરનું, વળતી વિચાર્યું માય;
ભક્તિ કરીએ ભૂધરની તો, સર્વે સારૂં થાય. અદિતિ. ૮
ઋષિ આવ્યા તપ કરીને, દુઃખી દીઠી નાર;
શુદ્ધ ત્રિયાને સંકટ શેનું, ક્ષેમ છતાં આ વાર. અદિતિ. ૯
કશ્યપ કહે હે કલ્યાણી, કયમ મુખ કરમાયું આજ;
ભક્તિ ભૂલ્યાં ભૂધરની શું, ધર્મ થયો નાશ ? અદિતિ. ૧૦
દૃઢ છું ધર્મ ન ચુકું, સ્વધર્મ ગયે સૌ જાય;
ભ્રમિત નારી ભજન ચૂકે, શ્રીહરિ છે સ્હાય. અદિતિ. ૧૧
વ્રત પ્રભાવે સર્વ જાણો, પુત્ર પીડાની વાત;
દેવલોક દાનવ લેશે, થશે મહા ઉત્પાત. અદિતિ. ૧૨
ઋષિ કહે રીઝવો હરિ તો સરે સઘળાં કામ;
વ્રત કરીને માગો સતિ, પુત્ર સુંદર શ્યામ. અદિતિ. ૧૩

અદિતિએ આચર્યું, પયોવ્રત દિન બાર;
ગોવિંદ આવ્યા ગરૂડ ચ્હડી, સતી કેરી વ્હાર. અદિતિ. ૧૪
વિષ્ણુ કહે વર માગો સતિ, પ્રસન્ન છું હું આજ;
પુત્ર થાઓ તમે પ્રભુ તો, સુધરે સર્વ કાજ. અદિતિ. ૧૫
કહ્યા પ્રમાણે કર્યું નાથે, બળિ જીતવાની પેર;
વામન થયા વૈકુંઠ પતિ, કશ્યપ કેરે ઘેર. અદિતિ. ૧૬
જય જય ધ્વનિ થઇ ધ્યાન છુટયાં, તપસ્વી આવ્યા ઘેર;
અદિતિને આનંદ ઘણો, થઇ છે લીલા લહેર. અદિતિ. ૧૭
જનોઈ દે જગનાથને, શાસ્ત્રવિધિ સંસ્કાર;
સામગ્રી સહુ સુર લાવ્યા, દેવ ઉભા દ્વાર. અદિતિ. ૧૮
અચ્યુતને ઉપવીત દીધું, મંત્ર કર્યો ઉપદેશ;
બ્રહ્મચારી ભગવાન થયા, સુંદર સાર વેષ. અદિતિ. ૧૯
પ્રભુ કહે છે હે પિતાજી, કામ હોય તે કહો;
અદિતિ કહે હે હરિ, આસન બળિનું લ્યો. અદિતિ. ૨૦
શ્રીપતિ ત્યાંથી સંચર્યા, આવ્યા બળિને દ્વાર;
ઠુંકે પગે ત્રિકમ ચાલ્યા, ક્ષણુ ન લાગી વાર. અદિતિ. ૨૧
દેવેશ કહે દ્વારપાલને, યાચવા જાવું આજ;
વિપ્રનો વિરોધ શેનો, જાય જન સમાજ. અદિતિ. ૨૨
દાનવેશ બેઠા દીક્ષા લઇને, મન ગમતું મગાય;
તન, ધન, ત્રિયા, મહી માગે, ના તો નવ કહેવાય. અદિતિ. ૨૩
સેવક કહે સિદ્ધ ઉભા રહો, ખબર આપું આજ;
ઉપરીતણી આજ્ઞા લાવું, પધારો મહારાજ. અદિતિ. ૨૪
પોળ્યે ઉભા પાવન બ્રાહ્મણ, સ્વામી સ્હામા જાવ;
જન્મ ધરી જોયા નથી, પરખી પાવન થાવ. અદિતિ. ૨૫

યાચક અદ્‌ભુત રૂપ છે, જાણે આવ્યા વિશ્વાધાર;
સમો આવ્યે સમજી જવું, ક્ષણુ ન કરવી વાર. અદિતિ. ૨૬
બળિ ઉઠ્યા બ્હેણાકળા, જવાને તત્પર થાય;
શુક કહે શું મોહ પામો, શ્રેય એમાં નવ થાય. અદિતિ. ૨૭
કપટ છે કોઇ દેવનું રાય, સમજી કરજે કામ;
વામન મને વિષ્ણુ લાગે, લેશે તારૂં ધામ. અદિતિ. ૨૮
ભૂદેવ ભૂમાં ઘણા જોયા, નથી આવું રૂપ;
વાસુદેવ વેદ બોલ્યા, સભા થઇ ગઈ ચુપ. અદિતિ. ૨૯
બટુક બોલો શી છે ઇચ્છા, આપવું મારે આજ;
પાત્ર મળ્યા પૂર્વ પુણ્યે, કહો તો આપું રાજ. અદિતિ. ૩૦
તમ સરખા મહાસંત મળતાં, સંસૃતિ દુઃખ જાય;
સામગ્રી છે શ્રીહરિની, આપી લાગું પાય. અદિતિ. ૩૧
બટુક કહે બલીહારી રાજા, તમારા કુળની એ રીત;
પ્રલ્હાદ જેવા પ્રપિતા, જેને વિષ્ણુ સાથે પ્રીત. અદિતિ. ૩૨
તન, મન, વૈભવ તુચ્છ છે, તેમાં રાખું નહિ મન;
દાન, દમન, સેવા, સ્મરણુ, પ્રભુ કરો પ્રસન્ન. અદિતિ. ૩૩
તારો યશ જોઇને આવીઓ, મને લોભ નથી લગાર;
વિપ્ર સંતોષી શુચિ કહ્યા, એ મ્હારો વિચાર. અદિતિ. ૩૪
ફરતો ફરૂં ચારે દિશા, આશ્રમ નહિ કો ઠામ;
બ્રહ્મચારીને ભુવન શેનું, વિદ્યાનું છે કામ. અદિતિ. ૩૫
માગવું માણસ જોઇને, કે સરે જેથી અર્થ;
મન વિનાનું આપ્યું લીધું, સર્વે જાણો વ્યર્થ. અદિતિ. ૩૬
અલ્પ બેસવા હોય આશરો તો, કરૂં બેઠાં પાઠ,
બ્રહ્મચારીને વેદ ભણવા, તેને શાનો ઠાઠ. અદિતિ. ૩૭

બળિ બહુ મોહ પામીઆ, આ પૂર્ણ મળ્યું પાત્ર;
તન, મન આપું તમને પ્રભુ, રાજ્ય તે કોણ માત્ર. અદિતિ ૩૮
શુક્ર કહે સુણજે બળિ, સૌ દાતાને કહે ધન્ય;
વિચારીને વાત કરો, મને સૂઝે અન્ય. અદિતિ. ૩૯
આપ્યા વિના કેમ પામીએ, દાનથી દીનતા જાય;
દાન વિના દરિદ્રતા આ જગતમાં જણાય. અદિતિ. ૪૦
દીધા વિના કેમ પામીએ, માટે પુન્ય કરવું ખાસ;
યાચક થયા જગત્પતિ, ઉભા મારી પાસ. અદિતિ. ૪૧
શ્રીતણા સ્વામી જો હશે તો, ધન્ય મ્હારૂં ભાગ્ય;
પ્રભુ જેવા પાત્ર મળ્યા, સો યજ્ઞ ફળ્યા આજ. અદિતિ. ૪૨
સુરની વ્હારે શ્રીપતિએ, ધાવા લીધું રૂપ;
મારૂં કહ્યું માન જરા, પછી પસ્તાશે ભૂપ. અદિતિ. ૪૩
સામગ્રી સહુ સજ્જ કરી, પૂજવા વામન વિપ્ર,
જળ લીધું જમણે કરે, ભણ્યા બ્રાહ્મણ શીઘ્ર. અદિતિ. ૪૪
ગુરૂએ જાણ્યું ગયું સર્વે, છળી બળિ લેશે રાજ;
શિષ્ય મ્હારો સમજ્યો નહિ, કરૂં શિક્ષા આજ. અદિતિ. ૪૫
શ્રાપ શુક્રે આપીઓ, ધરાભ્રષ્ટ તું થા;
વિપ્રનું વચન ખોટું પડે નહિ એ ન્યાય. અદિતિ. ૪૬
મહાજન મોહ પામીઆ, જ્યારે સુણ્યો વામન સાદ;
કર્મ સર્વ કુંઠિત થયાં, નાદ ને આલ્હાદ. અદિતિ. ૪૭
હોતા સર્વ ઉઠી ગયા, રહ્યું અધ્યયન સર્વનું બંધ;
કૃપાળ જ્યારે કોપીઆ, ત્યારે મંડપ થયો શૂન્ય. અદિતિ. ૪૮
ચર્ણ પહોંચ્યા પાતાળમાં, તળ વિતળ રૂંધ્યા સાત;
પરમેશ્વરે પૂજા લીધી, બળિ થયા સનાથ. અદિતિ. ૪૯

ઉદરે આ લોક પૂર્યા, અવની અણુવ તમામ;
ઘટઘટ ગોવિંદ વ્યાપીયા, ઠાલો નહિ કાંઇ ઠામ. અદિતિ. ૫૦
સ્વર્ગ લોકે શ્રીપતિનાં, પૂજન કરતા સૂર;
ચર્ણ ધરી ચાંપ્યા બળિ, પાતાળે અસૂર. અદિતિ. ૫૧
દ્વારપાળ દામોદર થયા, રાય ભાગ્યનો નહિ પાર;
દર્શન નિત્ય દયાળુનાં, ધન્ય ધર્યો અવતાર. અદિતિ. ૫૨
સંવત સાઠ શ્રાવણ માસ, તિથિ સાતમ વદી સાર;
પૂરણ કર્યું પાવન થવા, સમરી શ્રી આધાર. અદિતિ. ૫૩
વામન કેરૂં ચરિત્ર અદ્ભુત, વામા કઇ પેર ગાય;
જાણો જન્મ સફળ રહેનો, શ્રી હરિ જસ ગાય. અદિતિ. ૫૪

૩.

શ્રી રામ સ્મરણ.

रामो दाशरथीभूत्वा पौलस्त्यकुलनन्दनम् ।
जघान रावणं संख्ये तस्मै क्षत्रात्मने नमः ॥

(ભીષ્મસ્તવરાજ.)

("ગરૂડ ચડી આવજો ગિરધારી":—એ રાગ)

ગોવિન્દ તમે સર્વના સહાયકારી, શરણ આપો પિતામ્બર ધારી.
રાજા દશરથને દરબાર, આવ્યા સુન્દર શ્રીઆધાર;
સુરો બોલ્યા તે જય જયકાર, ગોવિન્દ. ૧
પ્રગટ્યા અવધમાં શ્રી અવિનાશી, નવ ગ્રહો થયા શુભ રાશી;

નવ નિધિ સિદ્ધિ થઈઓ દાસી, ગોવિન્દ. ૨
ચૈત્ર શુક્લ નવમીને મધ્યાહ્નને, ગૌર વર્ણ યોગી ધરે ધ્યાને;
હરિ દર્શન દે ભક્તિ જ્ઞાને, ગોવિન્દ. ૩
સૃષ્ટિ ઉદય રક્ષણ પિતા માતા, ભરત લક્ષ્મણ કેરા છે ભ્રાતા;
જગ મોહન જનના ત્રાતા, ગોવિન્દ. ૪
વિશ્વામિત્ર અવધપુર આવ્યા, તેની સાથે શ્રીપતિ સીધાવ્યા;
ચારે બન્ધુ પરણી ઘેર આવ્યા, ગોવિન્દ. ૫
રાજર્ષિને સહાયતા કીધી, વચ્ચે અહલ્યા નારી તારી દીધી;
પુરી જનકની પાવન કીધી. ગોવિન્દ. ૬
સ્હેજે સંભારતા સહાયકારી, એવા ભક્તવત્સલ છો ભારી;
લીલા લખું શું અવધવિહારી. ગોવિન્દ. ૭
જનકે સીતા સ્વયંવર કીધો, ત્ર્યંબક તોડીને મહાયશ લીધો;
ભૃગુ હાર્યા પ્રણામજ કીધો. ગોવિન્દ. ૮
જીવને જાળવો અંતરયામિ, દયા દ્રષ્ટિ કરી તેના સામી;
ત્રીકમ તારોછો, જુઓ નહિ ખામી. ગોવિન્દ. ૯
શિશુપાળે કીયો યોગ કીધો, મોક્ષ રાજસૂય યજ્ઞમાં દીધો;
પૂજ્યા પાંડવે મહા લાભ લીધો, ગોવિન્દ. ૧૦
મોહને મારો પ્રભુ જીવ જાગે, તો તો ભવના ફેરા સઉ ભાગે;
જસ રામ કૃપા ઘણી માગે. ગોવિન્દ. ૧૧

જુઓ રામ અવધપુર આવીયા, પુરવાસીએ પુષ્પે વધાવીયા.
સીતા સાસુજીને લાગ્યાં પાય, ઉત્તમ આશિષો આપે છે માય.
સુજોડે રહો કુશળ રઘુરાય. જુઓ. ૧

વિનતિ પહેલાં વેગે વ્હાલા આવો, દોષ દુર્ગુણ મનમાં ન લાવો
માટે નામ દયાનિધિ કહાવો. જુઓ. ૨
એવા અધમ ઉદ્ધારણ નાથરે, હેતે ભજતાં હરિ ઝાલે હાથરે;
નમું લવ કુશ કેરા તાત. જુઓ. ૩
સાગર સેતુ કરી લંકા આવ્યા, સીતા સહિત સુરોને છોડાવ્યા.
રાવણ જીતી ડંકા દેવરાવ્યા. જુઓ. ૪
જસ એ પ્રભુને લાગે પાય, જેથી જીવોની ભ્રાંતિ જાય;
કર જોડી નમું રઘુરાય. જુઓ. ૫

૪

શ્રી કૃષ્ણ લીલા.

("વદતા તે નારદ મુન્ય હરિ હરિ":—એ લય.)

પ્રથમ પાયે લાગું રે હરિ હરિ, ભક્તિ પદારથ માગું રે હરિ હરિ;
મહેતાયે કીર્તન કીધું રે હરિ હરિ, શ્રાદ્ધ તેને ઘેર કીધું રે હરિ હરિ.
સુદામાને નહિં સંચિત રે હરિ હરિ, ભર્યા ભંડાર ઘણું વિત્તરે હરિ હ
ભીષ્મે કીધી બહુ ભક્તિ રે હરિ હરિ, સાનિધ્ય પામ્યા મુક્તિ રે હરિ.
ભરવાડણો શું ભણી રે હરિ હરિ, કમળા સમાણી કરી રે હરિ હરિ;
પાંડવ પોતાના કીધા રે હરિ હરિ, બળતા ઉગારી લીધા રે હરિ હરિ.
કુબ્જામાં કશું રૂપ રે હરિ હરિ, વર્યા તે વૈકુંઠ ભૂપ રે હરિ હરિ;
પાળ્યું પિતાનું વચન રે હરિ હરિ, સમજી ચાલ્યા વન રે હરિ હરિ.
[illegible] શેવામાંય રે હરિ હરિ, વિઠ્ઠલ ઢોળે વાય રે હરિ હરિ;

બળી થયા દાતાર રે હરિ હરિ, પ્રભુ રહ્યા પાતાળ રે હરિ હરિ.
મુચુકંદ કાય અશુદ્ધ રે હરિ હરિ, ભેટયા તે ગરૂડારૂઢ રે હરિ હરિ;
અજામેળ અપરાધી રે હરિ હરિ, નામે તે સદ્‍ગતિ આપી રે હરિ હરિ.
મળમાસ શરણે લીધો રે હરિ હરિ, દ્વાદશમાં વડો કીધો રે હરિ હરિ;
ધન્ય, જસોદા નંદ રે હરિ હરિ, તપ કારણ સેવ્યાં વન રે હરિ હરિ.
ધન્ય તે તપની ટેક રે હરિ હરિ, પુત્ર પરબ્રહ્મ પેટ રે હરિ હરિ;
જસોદા વારણે જાય રે હરિ હરિ, ગોકુળ ઉત્સવ થાય રે હરિ હરિ.
ધન્ય તે વ્રજની ધરણી રે હરિ હરિ, ધન્ય જશોદા કરણી રે હરિ હરિ;
ધન્ય જશોદા ધામ રે હરિ હરિ, પ્રકટયા જયાં સુંદરશ્યામ રે હરિ હરિ.
ધન્ય [1]ગોકુળની ગૌને રે હરિ હરિ, હુવે ગોવિંદ એ સોને રે હરિ હરિ.
યોગીઓ જેને જુએ રે હરિ હરિ, તે માખણ માટે રૂવે રે હરિ હરિ;
વાછરડાં જઈ છોડે રે હરિ હરિ, મહિનાં તે માટજ ફોડે રે હરિ હરિ.
વ્હાલો, ગૌને તે ચારો નીરે રે હરિ હરિ, રમતા જમુના તીરે રે હરિ.
સાગર સરિતા કીધાં રે હરિ હરિ, ગોપ તણાં મહી પીધાં રે હરિ હરિ.
મુખમાં વિશ્વ સમાય રે હરિ હરિ, તે મોહન માટી ખાય રે હરિ હરિ;
ભેદ તે ભક્તજ જાણે રે હરિ હરિ, મુરખ સંદેહ આણે રે હરિ હરિ.
માયા પ્રભુની મોટી રે હરિ હરિ, જસોદા સાહે સોટી રે હરિ હરિ.
રૂડો મનુષ્ય દેહ આવ્યો રે હરિ હરિ, વ્યવહારે વળગો ન ફાવ્યો રે હરિ;
કલત્રનું સુખ કાચું રે હરિ હરિ, નામ નારાયણ સાચું રે હરિ હરિ.
ગોવિંદ ગાનને ગાવું રે હરિ હરિ, કથા કીર્તનમાં જાવું રે હરિ હરિ;
દિન પછી દિન જાય રે હરિ હરિ, પછી પસ્તાવો થાય રે હરિ હરિ.
કપટ કોશું ન કીજે રે હરિ હરિ, સામાં હરિ રૂપ લીજે રે હરિ હરિ;

---

૧ ગો શબ્દ ઈંદ્રીય, ગાય, અને શ્રુતિ એ ત્રણે અર્થનો વાચક છે.

કૃષ્ણ તે વેદ સ્વરૂપ રે હરિ હરિ, ગોપી ઋચાઓ રૂપ રે હરિ હરિ.
સંત કારણ અવતાર રે હરિ હરિ, હરવા તે ભૂમિનો ભાર રે હરિ હરિ;
જેના ગુણ ધરાધર ગાય રે હરિ હરિ, બ્રહ્મા નારદ ધ્યાને ધાય રે હરિ૦
જેને નિગમ નેતિ પોકારે રે હરિ હરિ, ભેદ તે ભાવિક જાણે રે હરિ હરિ;
કૃષ્ણને બ્રહ્મજ જાણો રે હરિ હરિ, જશ ગોપી તે ઋચાઓ પ્રમાણો રે હરિ૦

૫.

(" ચકલી ચકચક કરતી રે ":—એ લય.)

મ્હારો વ્હાલોજી મદમાતા રે, એ તો રમવા યમુના તીરે જાતા રે,
ગાયો ગોપની સાથે રમતા રે, શેરી ચોક બજારે ભમતા રે; ૧
જમે ઉની પોળી મ્હારો વ્હાલો રે, એ તો કુંવર યશોદાનો કાલો રે,
ગોપી જોવાને આવે જુગતે રે, વધાવે દેખી મોતી મુકતે રે. ૨
વ્હાલો ગોકુળીઆમાં ફરતા રે, આળો અધિક અધિક કરતા રે,
વ્હાલે મોરલીએ મોહ ઉપજાવ્યો રે, સાથ શ્યામાનો દોડીને આવ્યો રે;૩
વ્હાલો વેણુ વગાડી વ્હાય રે, ભોળાં વ્રજવાસી જોવાને ધાય રે,
મ્હારા વ્હાલાએ કૌતુક કીધું રે, રૂપ ગાયો ગોવાળનું લીધું રે. ૪
વ્હાલે મઘવાનો મદ ઉતાર્યો રે, કેશી કંસાસુરને માર્યો રે,
ગોપી કહે નંદ નંદન ડાહ્યો રે, મ્હેં તો મહી દેખાડીને વ્હાયો રે;૫
નિત્ય રમવા મ્હારે ઘેર આવે રે, સાથે સરખાં માંકડલાં લાવે રે,
પ્હેરે પીતામ્બર પીળો વાઘો રે, છોડી વાછરડાં ખસે આઘો રે. ૬
મ્હારા વ્હાલાના ગુણ શા ગાઈએ રે, મન સમજી મૂંગાં રહીએ રે,
શિવ શકાદિ નવ જાણે રે, મૂઢ મનુષ્ય મન શું આણે રે; ૭
અવતાર તણી જે લીલા રે, તે જાણે જે કોઈ વિરલા રે,

જેને પ્રભુ સાથે મન લાગ્યું રે, તેનું સંકટ સર્વે ભાગ્યું રે. ૮
જેમ તેમ કરી હરિ ભજને રે, આ અનિત્ય સુખને તજને રે,
જશ ઝટ પ્રભુને જાણો રે, મનમાં મોહનજી આણો રે. ૯

૬.

("રઘુબા મ્હારો ક્યાં રમે રે,":—એ લય.)

ખોળે માત જસોદા બાળ, કનૈયો મ્હારો ક્યાં રમે રે.
મ્હારો કાનો બહુ સુકુમાર, કનૈયો૦ ૧
રખે સંતાપે શેરીના બાળ, કનૈયો૦
મ્હારે એની છે આળ પંપાળ. કનૈયો૦ ૨
વ્રજનાથને મોંઘો છે તન. કનૈયો૦
સુનો મૂકતાં ન માને મન. કનૈયો૦ ૩
ઘણીવાર થઈ, ગયો લાલ, કનૈયો૦
કાલ કાઢું નહીં ઘરની બ્હાર. કનૈયો૦ ૪
ઘેર ઘેર ગોવાળાને જાય. કનૈયો૦
ઓળખે તે મન હરખાય. કનૈયો૦ ૫
શોધી કહાડયા જસોદાએ પુત્ર. કનૈયો૦
એના વિના શોભે ન ઘરસૂત્ર. કનૈયો૦ ૬

૭.

("સાહેબો સુરંગી લાડી લઈ વળ્યો":—એ લય.)

ગોપી ચાલી સહુ ગોકુળની, મળવાં દેવ મોરાર. ગોપી૦
જળ રે ભરવાં શ્રીયમુના તણાં, સુવર્ણ બેડાં છે હાથ;
વાટે વનમાળી સામા મળ્યા, ઉભો શ્યામાનો સૌ સાથ. ગોપી. ૧

રામા પુછે રૂડા બાળને, કુંવર કોના કુમાર;
ગોપી નામ અમારાં સાંભળો, શ્રીકૃષ્ણ બળભદ્ર સાર. ગોપી. ૨
હરિ ત્યાં મંદ હસીને બોલીયા, શું અમને પૂછો નાર;
અમો ગોકુળના ગરાશીઆ, આવ્યા નંદને દરબાર. ગોપી. ૩
ભૂધર પૂછે રૂડી ભામની, તું કંઇ ભણેલી નાર;
'અમે તો ભણતર સૌ નવું ભણ્યાં, સમજો શું નંદકુમાર'. ગોપી. ૪
શ્રીધર શીખામણ દેતા તદા, શ્યામા ધર્મો સંભાર;
પિયરમાં પૂછીને પગલાં ભરો, સાસરે સારપ કહાવ્ય. ગોપી. ૫
સારપ સદ્‌ગુણ વિના નહીં મળે, કીર્ત્તિથી પુન્યની પાળ;
દંભથી દૂર જ્યારે દારા થશો, સુધરશે સઘળો સંસાર. ગોપી. ૬
સમજુ તોએ પણ સુન્દરી, ભોળવાઈ રાઘવની નાર;
શિવાએ શંભુશીખ માની નહીં, અપમાન પામ્યાં અપાર. ગોપી. ૭
નરને નિર્ભય થઇ રહેવું બધે, અબળા પરાધીન અવતાર;
દમ્પતિ સુખીઆં થઇ મ્હાલવું, જીવવું દહાડા બે ચાર. ગોપી. ૮
વર્ણાશ્રમની રીતે વર્તવું, અન્તે સદ્‌ગતિ થાય;
ઘરના ઇષ્ટોને આરાધવા, નિત્ય ને નૈમિત્તિક થાય. ગોપી. ૯
પૂજન દાન ને વૃતો વળી, અવશ્ય કરવાં એ કાર્ય;
અબળા, આગળ એવા જન થશે, કરશે ધર્મ ધિક્કાર. ગોપી. ૧૦
મનનું માન્યું તે માનશે, પામર પશુ અવતાર;
અબળા આભૂષણ શોભે નહિ, શોભે શિયળ શણગાર. ગોપી. ૧૧
જસ લઇ જીવ્યાં તે જીવ્યાં ભલું, આયુષ અહિને અપાર;
અપજસ લઇને જો અવનિ રહ્યાં, મરણ સારૂં સો વાર. ગોપી ૧૨
મહિલા મેલી વૃત્તિ મારજો, અપકીર્ત્તિ આ જગમાં થાય;
વધારી વિદ્યા પણ જો વધ્યાં નહીં, અવળાં ચાલ્યાં અપાર. ગોપી. ૧૩

કર્મો ધર્મોથી નીચાં પડયાં, ખાલી થયાં ખુવાર;
માનની શોભે મર્યાદા વડે, જેવી મ્યાને તરવાર. ગોપી. ૧૪
વિદ્યા આવ્યાનું એંધાણ એ, દુર્ગુણ દૂર પળાય;
અલ્પજ્ઞ જીવોથી આવું કરો, સર્વજ્ઞ સર્વે જોનાર. ગોપી. ૧૫
પતિએ સદ્રસ્તે જો પ્રેર્યાં નહીં, બગડ્યો ઘરનો વહેવાર;
રામા રૂડી હું ત્હેને કહું, મનમાં સમરે મોરાર. ગોપી. ૧૬
શિખામણ સમજુ કોઇ સાંચશે, વિષયી તો વાંચી પસ્તાય;
શિક્ષા સઉ જનને અર્થે કરી, વિચારો જસના ઉદ્ગાર. ગોપી. ૧૭

૮.

("ગિરધારી રે ઘેલા નવ થઇએ.":—એ લય.)

ગોવિંદ ગારૂડી, ઘેલા નવ થઇયે રે!
કહેતા નંદજી રે, ચાલો ગોકુલ જઇયે; ૧
જસોદા રોશે રે, નયણે નીર ભરી,
નજરે નહિ નિરખે રે! વણુ કહે જાય મરી. ૨
જસોદા જીવે રે, આશા તુજ કરી,
ગોવાળા ગાયો રે, ગયા છો શું વિસરી; ૩
મથુરાં મોટું રે, દેખી નવ મોહીયે,
ગોકુળિયું છોટું રે, ત્યાં સઉ સુખ લઇયે. ૪
નજરથી ન્યારા રે, ઘડી એક થાશો નહિ,
શહેર લોક ધુતારા રે, પુરમાં જાશો નહિ; ૫
ન્હાના નવ છંદી રે, વૃદ્ધને નવ ગણે,
એકનો એક પુત્ર રે, કહું શું હૃદય બળે. ૬

આપણ આહીરડાં રે, તું તો બહુ ન્હાનો,
ગોકુળ સઉ પૂછે રે, કયાં ગયો કહાનો; ૭
જસોદા પુત્રજ રે, ઉછૃંખલ ને આડો,
મુજ સંગ મોકલીયો રે, કંઈક કરી રાડયો. ૮
જસોદા જીવન રે, ગોકુળીયે ચાલો,
મન ગમતી મોજો રે, મોહન ત્યાં મ્હાલો; ૯
મેં પુત્ર પ્રમાણ્યો રે, આવડું નવ જાણ્યું,
કંસ કપટી માર્યો રે, બળ કયાંથી આણ્યું. ૧૦
વાર કરો મ્હારે વખત તો બહુ ભાગે,
ઝાઝું જસ શું કહે રે, પાવલીયે લાગે. ૧૧

૯.

શ્રીદ્વારિકાનું વર્ણન.

ધોળ.

ગુરૂ ગોવિન્દને શિષ નામીએ, ધરીએ કૃષ્ણ કૃપાળનું ધ્યાન.
ચાલો જઈએ દ્વારિકા. ૧
પ્રસંગ આવે પ્રભુજીની પ્રેરણા, કાવ્ય લખતાં લક્ષ્મીવર સહાય ચાલો. ૨
તત્વ તીર્થનું પરબ્રહ્મ છે, સાધન મેળવ્યાથી સુખ થાય. ચાલો. ૩
પરમાથમાં પ્રીતજ રાખવી, પૂજન પરમેશ્વરનું કહેવાય. ચાલો. ૪
સાધન જપ તીરથ વ્રત દાન છે, પ્રભુ પામ્યાના એ સૌ ઉપાય. ચાલો. ૫
ગોવિન્દ ગોમતી તીરે વિરાજતા, છપ્પન પગથીએ છે જગરાય. ચાલો. ૬
ગોમતી વશિષ્ટની પુત્રી વિખ્યાત છે, પિતૃ શ્રાદ્ધ તે સ્થળમાં થાય. ચાલો. ૭

મોક્ષપુરી દ્વારામતી જાણવી, જ્યાં છે નારાયણનો નિવાસ. ચાલો. ૮
ભૂમી ખારી પણ સારી જાણજો, જ્યાં જન્મ ધર્યો જદુબાળ. ચાલો. ૯
પશ્ચિમ દિશાએ પ્રભુજી વિરાજતા, આવ્યા મથુરા થકી મહારાજ. ચાલો. ૧૦
રાજ્ય રૂડું છે શ્રીરણછોડનું, પ્રેમી જનના હૃદયમાં પ્રકાશ. ચાલો. ૧૧
સાક્ષી ગોપાલ ગુગળી સૌ કહે, દાપું આપી દેવળમાં જવાય. ચાલો. ૧૨
સૌની વચમાં છે શ્રીપતિ શોભતા, જેની સેવા કરે સુરરાય. ચાલો. ૧૩
શૃંગાર ફૂલના ધરે અતિ શોભિતા, નખશિખ કૂસુમે ભર્યા વ્રજનાથ. ચાલો.
તુરત પેસતાં ત્રિકમરાયને જુઓ, જેથી ટળે ત્રિવિધના તાપ. ચાલો. ૧૫
બળભદ્રજી પાસે બીરાજતા, જે છે શેષ તણા અવતાર. ચાલો. ૧૬
કલ્યાણરાયજી સન્મુખ પુરૂષોત્તમ પ્રભુ, જોડે બેઠાં જગદમ્બામાત. ચાલો.
અદ્ભુત શક્તિ અચ્યુત તણી જાણજો, પાસે ઉભા દત્તાત્રય દેવ ચાલો. ૧૮
ત્રિકમરાય રામ માધવ મહાપ્રભુ, રાધાકૃષ્ણ ત્યાં રૂપ નિધાન. ચાલો. ૧૯
માતા દેવકીજી સન્મુખ શોભતાં, પુત્ર પરબ્રહ્મ દે દર્શન. ચાલો. ૨૦
દર્શન સારૂ દુર્વાસા આવીઆ, પ્રીતે બેસાડયા પ્રભુએ પાસ. ચાલો. ૨૧
કુશેશ્વર જોડે કેશવરાયજી, કહો ભક્ત હરિનો દાસ. ચાલો. ૨૨
નવ ગ્રહો દરવાજે દરવાન છે, આડા ન આવે તો આગળ જવાય. ચાલો. ૨૩
મંગલ નામ ને ધામ મોરારનાં, મન ચિંતવને મંગલ થાય. ચાલો. ૨૪
જાંબુવતી સામાં શ્રીસત્યભામા, રાધા સામાં રમા સાક્ષાત. ચાલો. ૨૫
લક્ષ્મીનારાયણ લક્ષમાં રાખજો, સામી ગાદી શ્રીશંકરાચાર્ય. ચાલો. ૨૬
લક્ષ્મીભંડારમાં લક્ષ્મી આપવી, થાળ આરોગે કુટુમ્બી સાથ. ચાલો. ૨૭
ઉગ્રસેન તણી અહીંયાં ગાદી છે, ત્રુઠયા ભક્તવત્સલ ભગવાન. ચાલો. ૨૮
જપ યજ્ઞનું ફળ જગદીશ છે, જગથી જૂદા નથી જગનાથ. ચાલો. ૨૯
મ્હોટું મન્દિર છે મહારાજનું, તેમાં વિરાજ્યા પુરૂષપૂરાણ. ચાલો. ૩૦
ભારે પુન્યવતી ભૂમિ ભરતની, જેમાં દેહ ધર્યો દયાળ. ચાલો. ૩૧

આપણુ આહીરડાં રે, તું તો બહુ ન્હાનો,
ગોકુળ સઉ પૂછે રે, ક્યાં ગયો કહાનો; ૭
જસોદા પુત્રજ રે, ઉછૃંખલ ને આડો,
મુજ સંગ મોકલીયો રે, કંઈક કરી રાડયો. ૮
જસોદા જીવન રે, ગોકુળીયે ચાલો,
મન ગમતી મોજો રે, મોહન ત્યાં મ્હાલો; ૯
મેં પુત્ર પ્રમાણ્યો રે, આવડું નવ જાણ્યું,
કંસ કપટી માર્યો રે, ખળ ક્યાંથી આણ્યું. ૧૦
વાર કરો મ્હારે વખત તો બહુ ભાગે,
ઝાઝું જસ શું કહે રે, પાવલીયે લાગે. ૧૧

૯.

શ્રીદ્વારિકાનું વર્ણન.

ધોળ.

ગુરૂ ગોવિન્દને શિષ નામીએ, ધરીએ કૃષ્ણ કૃપાળનું ધ્યાન.
ચાલો જઈએ દ્વારિકા. ૧
પ્રસંગ આવે પ્રભુજીની પ્રેરણા, કાવ્ય લખતાં લક્ષ્મીવર સહાય ચાલો. ૨
તત્વ તીર્થનું પરબ્રહ્મ છે, સાધન મેળવ્યાથી સુખ થાય. ચાલો. ૩
પરમાર્થમાં પ્રીતજ રાખવી, પૂજન પરમેશ્વરનું કહેવાય. ચાલો. ૪
સાધન જપ તીરથ વ્રત દાન છે, પ્રભુ પામ્યાના એ સૌ ઉપાય. ચાલો. ૫
ગોવિન્દ ગોમતી તીરે વિરાજતા, છપ્પન પગથીએ છે જગરાય. ચાલો. ૬
ગોમતી વશિષ્ટની પુત્રી વિખ્યાત છે, પિતૃ શ્રાદ્ધ તે સ્થળમાં થાય. ચાલો. ૭

મોક્ષપુરી દ્વારામતી જાણવી, જ્યાં છે નારાયણનો નિવાસ. ચાલો. ૮
ભૂમી ખારી પણ સારી જાણજો, જ્યાં જન્મ ધર્યો જદુબાળ. ચાલો. ૯
પશ્ચિમ દિશાએ પ્રભુજી વિરાજતા, આવ્યા મથુરા થકી મહારાજ. ચાલો. ૧૦
રાજ્ય રૂડું છે શ્રીરણછોડનું, પ્રેમી જનના હૃદયમાં પ્રકાશ. ચાલો. ૧૧
સાક્ષી ગોપાલ ગુગળી સૌ કહે, દાપું આપી દેવળમાં જવાય. ચાલો. ૧૨
સૌની વચમાં છે શ્રીપતિ શોભતા, જેની સેવા કરે સુરરાય. ચાલો. ૧૩
શૃંગાર ફૂલના ધરે અતિ શોભિતા, નખશિખ ફૂસુમે ભર્યા વ્રજનાથ. ચાલો.
તુરત પેસતાં ત્રિકમરાયને જુઓ, જેથી ટળે ત્રિવિધના તાપ. ચાલો. ૧૫
બળભદ્રજી પાસે બીરાજતા, જે છે શેષ તણા અવતાર. ચાલો. ૧૬
કલ્યાણરાયજી સન્મુખ પુરૂષોત્તમ પ્રભુ, જોડે બેઠાં જગદમ્બામાત. ચાલો.
અદ્દભુત શક્તિ અચ્યુત તણી જાણજો, પાસે ઉભા દત્તાત્રય દેવ ચાલો. ૧૮
ત્રિકમરાય રામ માધવ મહાપ્રભુ, રાધાકૃષ્ણ ત્યાં રૂપ નિધાન. ચાલો. ૧૯
માતા દેવજીકી સન્મુખ શોભતાં, પુત્ર પરબ્રહ્મ દે દર્શન. ચાલો. ૨૦
દર્શન સારૂ દુર્વાસા આવીઆ, પ્રીતે બેસાડ્યા પ્રભુએ પાસ. ચાલો. ૨૧
કુશેશ્વર જોડે કેશવરાયજી, કલો ભક્ત હરિનો દાસ. ચાલો. ૨૨
નવ ગ્રહો દરવાજે દરવાન છે, આડા ન આવે તો આગળ જવાય. ચાલો. ૨૩
મંગલ નામ ને ધામ મોરારનાં, મન ચિંત્વને મંગલ થાય. ચાલો. ૨૪
જાંબુવતી સામાં શ્રીસત્યભામા, રાધા સામાં રમા સાક્ષાત્. ચાલો. ૨૫
લક્ષ્મીનારાયણ લક્ષમાં રાખજો, સામી ગાદી શ્રીશંકરાચાર્ય. ચાલો. ૨૬
લક્ષ્મીભંડારમાં લક્ષ્મી આપવી, થાળ આરોગે કુટુમ્બી સાથ. ચાલો. ૨૭
ઉગ્રસેન તણી અહીંયાં ગાદી છે, તુઠ્યા ભક્તવત્સલ ભગવાન. ચાલો. ૨૮
જપ યજ્ઞનું ફળ જગદીશ છે, જગથી જૂદા નથી જગનાથ. ચાલો. ૨૯
મ્હોટું મન્દિર છે મહારાજનું, તેમાં વિરાજ્યા પુરૂષપૂરાણ. ચાલો. ૩૦
ભારે પુન્યવતી ભૂમિ ભરતની, જેમાં દેહ ધર્યો દયાળ. ચાલો. ૩૧

જન્મી કાર્ય કર્યાં દેવ દાસનાં, દુષ્ટો મારીને દીધા છે મોક્ષ. ચાલો० ૩૨
એવા ગુણનિધિ ગિરિધરલાલજી ભજતાં ભાગે આ ભવના રોગ. ચાલો०
છપ્પન ગજ ધ્વજ છબીલાને ચ્હડે, જ્ઞાતિભોજન ગુગળીઓનું થાય. ચાલો.
વિપ્ર વ્હાલા ઘણા વ્રજનાથને, અર્ઘી સેવા ગુરૂને અપાય. ચાલો. ૩૫
પુષ્કર, પ્રયાગ, ગંગા ને ગોદાવરી, દ્રવ્યશુદ્ધિ દાનોથી થાય. ચાલો. ૩૬
ચારે દિશે સચ્ચિદાનન્દ શોભતા, પુર મધ્યે પુરૂષોત્તમનાં ધામ. ચાલો. ૩૭
સત્યનારાયણ શ્વેત સ્વરૂપ છે, ટોકરાસ્વામીનું આગળ છે ધામ.ચાલો. ૩૮
કૃષ્ણઘાટ, ગૌઘાટ, બ્રહ્મઘાટ છે, ગોમતી તીરે શામળશા શ્યામ. ચાલો.૩૯
એ વિના બીજા ઘાટો ઘણાયછે, વ્હેલાં ન્હાતાં વળે ગંગા સ્નાન. ચાલો. ૪૦
રૂક્મિણીજી રહ્યાં છે રીસામણે, દીધો દુર્વાસા ઋષિએ શ્રાપ. ચાલો. ૪૧
પંચકોશીમાં પટરાણી પૂજવાં, ચોરીએ ચડ્યા ચતુર્ભુજ નાથ. ચાલો. ૪૨
ગયા કોઠો કહેછે ગ્રામ વાસીઓ, અહીં રેવતી પરણ્યા બળરામ. ચા. ૪૩
નૃગરાયને નારાયણે તારીયો, કકલાસ કુન્ડમાં સ્નાન કરાય ચાલો. ૪૪
દ્વારિકાથી આરંભડે આવવું, બોટે બેશીને બેટે જવાય. ચાલો. ૪૫
ત્યાં પણ સીડી ચ્હડી નિરખો શ્રીહરિ,પહેલાં દર્શન કુશેશ્વરનાં થાય.ચા.૪૬
મથુરાથી આંવ્યા શ્રી મહાપ્રભુ, લીલા કરવાને લક્ષ્મીનાથ. ચાલો. ૪૭
એક મંઠપમાં ચારે ધામ છે, નામ રૂપ ન્યારા જગનાથ. ચાલો. ૪૮
ત્રિકમરાય સામા માધવ મહાપ્રભુ, કુળ ગોરાણી બેઠાં પાસ. ચાલો. ૪૯
કલ્યાણરાયજી કલ્યાણ સૌનું કરે, સ્મરણ કરતાં ટળે સઘ તાપ. ચાલો. ૫૦
ગોવિન્દવાહન ગરૂડજી શોભતા, હેતે જોડીને બેઠા હાથ. ચાલો. ૫૧
ભુવન ભગવતનાં ઉંચા ઘણાં, સામા સામી શોભે છે સાર. ચાલો. ૫૨
આરસ પહાણ જડ્યા અતિ ઓપતા, ઘણો ગાગરનો છંટકાવ. ચાલો. ૫૩
ભૂધર ભૂપો જીતી વર્યા રૂકિમણી, યુદ્ધમાં જીત્યાછે યાદવરાય. ચાલો. ૫૪
જાંબુવતી પરણ્યા શ્રીયદુપતિ, રાધા વ્રજમાં વર્યા વ્રજરાય. ચાલો. ૫૫

સત્યભામાને શ્રીહરિ પરણીયા, મણિ સોંપ્યો સત્રાજિતને હાથ. ચા. ૫૬
એવા નિર્મળ છે નન્દલાલજી, તેની ભક્તિ કરો દિન રાત. ચાલો. ૫૭
આવી સંસારે સાધન શુભ કરો, આવ્યો જન્મ અફળ નવ જાય. ચાલો. ૫૮
કૃપા હોય જો ગુરૂ ગોવિન્દની, કૃષ્ણ કૃપાએ જીવપણું જાય. ચાલો. ૫૯
વાહન ચારે વહુજીનાં મન્દિરોમાં, બધો ઠાઠ ઠાકોરજીનો સાર. ચાલો. ૬૦
પગલાનાં દર્શન પુરૂષપૂરાણનાં, કાકડા આરતી પછી કરાય. ચાલો. ૬૧
શંખોદ્ધાર નારાયણ નામ છે, મારી ત્હેને આપ્યો શુભ ઠામ. ચાલો. ૬૨
અવતાર દશ દર્શન આંહિ કહેવાય છે, શ્વેત વર્ણે શોભે છે શ્યામ. ચાલો. ૬૩
પૂર્વ પુન્ય પૂરણ હોય પ્રાણીનાં, સંસાર સમુદ્રે ડૂબતાં હરિ સ્હાય. ચા. ૬૪
બેટે ભેટ સામગ્રી અપાય છે, ગુગળી ભક્તો કરે છે લ્હેર. ચાલો. ૬૫
હનુમાન ઉભા રહી હરિદ્વારમાં, રક્ષણ કરે છે રામના દાસ. ચાલો. ૬૬
ચારે બાજુ સમુદ્ર શોભા ઘણી, જળ મધ્યે પુરૂપોત્તમનાં ધામ. ચાલો. ૬૭
મીરાંબાઈનું મન્દિર છે બેટમાં, ભગવત ભજી ટાળ્યા તનતાપ. ચાલો. ૬૮
જન્મ સફળ તે જનનો જાણજો, જેને લગની લાગી નન્દલાલ. ચાલો. ૬૯
ચર્મદેહ ચતુર તેનો નવ જુઓ, જેનું તન, મન ત્રિકમરાય. ચાલો. ૭૦
એવા હરિજનને જસ નિત્ય નમે, જય દ્વારિકાંધીશ બોલાય. ચાલો. ૭૧

૧૦.

શ્રી રણછોડરાયનું વર્ણન.

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगीनां हृदये न हि।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

("વૈદર્ભ દેશ કુંડિનપુર ગામજી.":—એ લય).

શ્રી ડાકોર દ્વારિકાસમું ધામજી, રાજન રણછોડરાય છે નામજી,
શરીર સુંદર છે ઘનશ્યામજી, પુર મધ્યે મોટું પુરૂપોત્તમ ધામજી. ૧

સિંહાસને બિરાજે શ્રી નાથજી, આયુધ ચારૂ તે શોભે હાથજી.
કાને કુંડલ મકરાકારજી, ગળુબંધ જડાવ મોતી હારજી. ૨
બાજુબંધ બેરખા અતિશે શોભેજી, વેઢ ને વીંટી કડાં પોંચી ઓપેજી.
મેખલા કટિ લંકે રૂડી રાજેજી, પાય નૂપુર રુમઝુમ વાજેજી. ૩
જરકસી જામો તે અંગે ઓપેજી, મણિજડિત મુગટ શોભેજી.
પાઘ ને પટકા ધર્યા પચરંગીજી, ઉપરણા ઓઢયા છે નવરંગીજી. ૪
તિલક ભાલ વિશાળે કીધુંજી, ભક્તનું મનડું મોહન હરિ લીધુંજી.
ગોદમાં ગોપાળલાલ બેઠાજી, ભોગમૂર્તિ સેવક તેને કહેતાજી. ૫
સાકર ને શીરો વ્હાલાને ભાવેજી, ભાવિક ભકતો તે મેવા લાવેજી.
ભટીયાજીનો ભોગ પ્રભુને ભાવેજી, રાજભોગ સર્વે સામગ્રી આવેજી. ૬
ગોમતી ગંગાસમી નાથે કીધીજી, તટે ઉભા ઝાંખી જગતને દીધીજી;
બોડાણાનું બિરૂદ બિહારીએ પાળ્યુંજી, ગુગળીઓનું તેડું પાછું વાળ્યુંજી.૭
કળિયુગમાં રણછોડ કૃષ્ણ સ્વરૂપજી, ત્રિકમને જાણો ત્રિભુવન ભૂપજી.
ભંડારીના ભાગ્યતણો નહીં પારજી, વાસુદેવના વહિવટનો અધિકારજી.૮
સેવાતણો શ્રી ગોડને અધિકારજી, તાળાં વાસે ખેડવાળ ખબરદારજી.
શય્યા મંદિરની સુંદર શોભા સારીજી,ગોપાળલાલની બેઠક છે અતિ ભારીજી.૯
પુરની તે શોભા શી કહેવાયજી, પુનમે મોટો મેળો ત્યાં થાયજી.
ઉત્તર દ્વારે લક્ષ્મીતણું મ્હેલ જાવુંજી, લક્ષ્મીજીની શોભા તે શી પેર કહાવુંજી. ૧૦

અગીયારશે હસ્તિતણી અસ્વારીજી, ભ્રગુવારે શોભા બને બહુ સારીજી.
વ્હાલાજીનો વરઘોડો પુરમાં ન માયજી, જનસમસ્ત જોવાને જાયજી.૧૧
છડીદાર ખમાખમા ઓચરતાજી, સેવકો સુંદર ચામર ધરતાજી.
વાહન વિચિત્ર વ્હાલાને દ્વારજી, ઘોડલા ગૌધનનો નહીં પારજી. ૧૨

અપાઢી બીજ ઓચ્છવ રૂડો થાયજી, રથે બેશી રણછોડ રાયાકુંડ જાયજી.
ત્રિકમરાયજી તીરે ઉભા લટકાળાજી, લાલબાગ લગતી લાયક ગૌશાળાજી.
વ્હાલાનો વૈભવ કહ્યો નવ જાયજી, આનંદ ઓચ્છવ નિશદિન થાયજી.
શ્રીહરિની સન્મુખ ગોમતિ ઘાટજી, તીરે વસે શ્રી ઉંકેશ્વર નાથજી. ૧૪
ભોળેભાવે વર્ણન વ્હાલાનું કીધુંજી, બુદ્ધિબળ પ્રમાણે હારદ લીધુંજી.
પ્રેમભક્તિ શ્રદ્ધાસહિત જે ગાયજી, પ્રત્યક્ષ દર્શન પ્રભુનું થાયજી. ૧૫
વર્ણન કરવા ઉપજ્યો મનમાં કોડજી, ભાવિક ભક્ત ન જોશો ખોડજી.
પિતા સેવા કરતા તે જાણું પેરજી, જસ ગુણ ગાય કરો પ્રભુ મ્હેરજી. ૧૬

૧૧

ઉપદેશ.

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।

(શ્રીમદ્ ભ૦ ગીતા.)

("કરીએ શ્રી કૃષ્ણ ઉપાસના":—એ લય).

જન તેં જીવીને શું કર્યું, ગાયા નહીં જો ગોપાળ. જન. ૧
મુરારિ માધવને સમર્યા નહિ, એળે ખોયો અવતાર. જન. ૨
રઘુવર રાધાવર રમાપતિ, દયાળુ દેવ મોરાર. જન. ૩
મુકુંદ મોહન જદુપતિ, વાસુદેવ વનમાળી વ્રજરાય, જન. ૪
નારાયણ નરપતિ સુરપતિ, જનાર્દન જગના આધાર. જન. ૫
કેશવ કૃષ્ણ અને કમળાપતિ, ભુધર શ્રીધર ભગવાન. જન. ૬

દયાળુ દામોદર દીનનાપતિ, પીતાંબર પુરૂષોત્તમ પરધામ. જન. ૭
ગદાધર ગોધરને ગોકુળપતિ, વિઠ્ઠલ વાસુદેવ વ્રજેશ. જન. ૮
કચ્છ મચ્છ વરાહ યદુપતિ, નરસિંહ વામન શ્રી ભ્રગુદેવ. જન. ૯
ઋષભ રાઘવને વેણુધર, વ્યાસ દત્ત ને પૃથુરાય. જન. ૧૦
મોહિની સનક ધન્ય ધન્વંતરી, કલ્કિ બુદ્ધ કળા છો જેહ. જન. ૧૧
કપિલ નરનારાયણ બદ્રીપતિ, ગોવર્ધન ગોકુળેશ ઋષિકેશ. જન. ૧૨
વિચારે હું તું તે કાંઈ નહીં, નરોત્તમ નંદલાલ અધીશ. જન. ૧૩
ચિત્તને ચતુર્ભુજ ચરણે ધરો, મનથી સમરો મોરાર. જન ૧૪
નૌકા નામતણી ન્હાની નથી, ઉતારે આ ભવની પાર. જન. ૧૫
જીભે જુગજીવનને રાખજો, મનન કરો કૃષ્ણ કૃષ્ણ દિનરાત. જન. ૧૬
ગાડી ગોવિન્દના ગુણગાનની, બેસો સુખથી આવાર. જન. ૧૭
ભાથું ભગવતસ્મરણનું ભરો, ખુટે નહીં લાંબી હોય ખેપ. જન. ૧૮
વળાવું વાસુદેવ વિશ્વાસનું, મનથી પહોંચો મુકામ. જન. ૧૯
સારથી શ્યામતણું શરણ ગ્રહો, ગાડી ચાલે ગડગડાટ. જન. ૨૦
પ્રીતે પુરૂષોત્તમ મળવા વળો, આવ્યું અફળ ન જાય. જન. ૨૧
પરાથી પુરૂષોત્તમ છે વેગળા, પ્રશ્યંતિ પામી નહીં પાર. જન. ૨૨
મધ્યમા મોહનને શોધી રહી, વૈખરી વદે કેમ વાત. જન. ૨૩
બુદ્ધિ બહુ ખેપે ખોળી રહી, મનને ન મળ્યા મહારાજ. જન. ૨૪
ચક્ષુ ચતુર્ભુજ દેખે નહી, સાંભળવા શ્રોત્ર નહીં લાગ. જન. ૨૫
ચિત્તે ચિંત્વનથી દીઠા નહીં, અહંકાર ન ઓળખે અવિનાશ. જન. ૨૬
એવા અગમ્ય અગોચર આ હરિ પૂર્ણ જ્યોતિ પ્રકાશ. જન. ૨૭
દેવાદિકના પણ જે આત્મા, પતંગ કીટ સુધી છે વાસ. જન. ૨૮
એવા દેવતણું દર્શન કરો, દેહમાં ખોળો દયાળ. જન. ૨૯

મોંઘો મનુષ્યદેહ મળવો નથી, ચેતો દિવસ છે ચાર. જન. ૩૦
અંતર ઉત્તમ સૌ રીતે કરો, વિચારથી સ્વરૂપ વરતાય. જન. ૩૧
ઉત્તમ અનુભવી થઈ બેસવું, પ્રપંચો દૂર પળાય. જન. ૩૨
દેહ લઈ દર્શન જેણે ના કર્યું, મિથ્યા મોટાઈનો ભાર. જન. ૩૩
સમજણ શરણ વિના ક્યાંથી પડે, દયાળુ દેજો શિર હાથ. જન. ૩૪
કૃપા છે તેવી કૃષ્ણ નિભાવજો, સમજુને સાન એકવાર. જન. ૩૫
જસને મસ હરિગુણ ગાવાતણો, જાણ્યો સાર આવાર. જન. ૩૬

૧૨

શ્રી રણછોડરાયની આરતી.

स्वयं प्रकाशमानस्य कुतो निराजनं विभो ।

("શ્રીનાથજીની ઘોડલી":— એ લય.)

ગાઉં ગરવા ગોવિંદજીની આરતી,
જ્યોતિરૂપ જગતના રાય. રણછોડરાયની આરતી. ૧
પ્રાતઃકાળે પ્રભુજીની આરતી,
રૂડો મંગળ ભોગ ધરાય.
શૃંગારભોગની શોભા તે શી કહું,
બીજી આરતી દર્શન થાય.
રાજભોગ રસોઈ વિધવિધ ઘણી,
ત્રીજી આરતી ત્રિકમને હોય.

ઉથાપનની તે ઉપમા શું કહું,
ચોથી આરતી ચિત્ત હરખાય. રણ. ૫

સાયંકાળે દર્શનસુખ શું કહું,
પંચ આરતી પૂર્ણ જ થાય. રણ. ૬

આરત આરતી ગાવાની ઉપજી,
જસ જગદીશના ગુણ ગાય. રણ. ૭



